इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के ५०वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक १७ जुलाई २०१८ को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा ५/- रूपये में जारी किया गया।

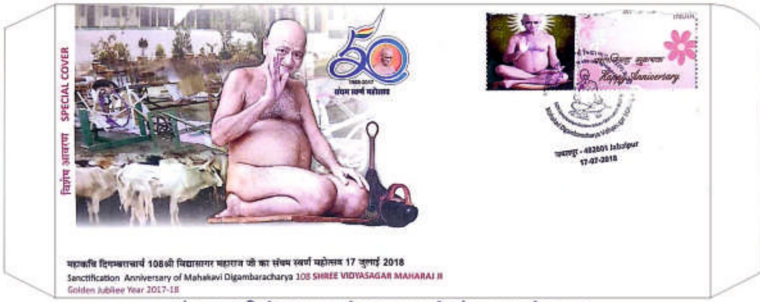

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		फरवरी 2023	
16	गुरुवार	एकादशी	मूल
17	शुक्रवार	द्वादशी	पूर्वाषाढ
18	शनिवार	त्रयोदशी	उत्तराषाढ
19	रविवार	चतुर्दशी	श्रवण
20	सोमवार	अमावस	धनिष्ठा
21	मंगलवार	प्रतिपदा/द्वितीया	शतभिषा
22	बुधवार	तृतीया	उत्तराषाढ
23	गुरुवार	चतुर्थी	रेवती
24	शुक्रवार	पंचमी	अश्विनी
25	शनिवार	षष्ठी	भरणी
26	रविवार	सप्तमी	कृत्तिका
27	सोमवार	अष्टमी	रोहिणी दि/रा
28	मंगलवार	नवमी	रोहिणी
		मार्च 2023	
1	बुधवार	दशमी	मृगशिरा
2	गुरुवार	एकादशी	आर्द्रा
3	शुक्रवार	एकादशी	पुनर्वसु
4	शनिवार	द्वादशी	पुष्य
5	रविवार	त्रयोदशी	आश्लेषा
6	सोमवार	चतुर्दशी	मघा
7	मंगलवार	पूर्णिमा	पूर्वाफाल्गुनी
8	बुधवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी
9	गुरुवार	द्वितीया	हस्त
10	शुक्रवार	तृतीया	चित्रा दि/रा
11	शनिवार	चतुर्थी	चित्रा
12	रविवार	पंचमी	स्वाति
13	सोमवार	षष्ठी	विशाखा
14	मंगलवार	सप्तमी	अनुराधा
15	बुधवार	अष्टमी	ज्येष्ठा

तीर्थंकर कल्याणक

16 फरवरीः भगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
16 फरवरीः भगवान श्रेयाननाथ जन्म तपकल्याणक
17 फरवरीः भगवान मुनिसुव्रतनाथ मोक्ष कल्याणक
19 फरवरीः भगवान वासुपूज्य जन्म तप कल्याणक
22 फरवरीः भगवान अरनाथ गर्भ कल्याणक
24 फरवरीः भगवान मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक
27 फरवरीः भगवान संभवनाथ मोक्ष कल्याणक
11 मार्चः भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
12 मार्चः भगवान चन्द्रप्रभ गर्भ कल्याणक
15 मार्चः भगवान शीतलनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

27 फरवरीः रोहिणी व्रत, अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
07 मार्चः अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
07 मार्च : षोडशकारण व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

18 फरवरीः 17/42 बजे से 30/56 बजे तक।
23 फरवरीः 06/53 बजे से 30/53 बजे तक।
24 फरवरीः 06/53 बजे से 27/27 बजे तक।
27 फरवरीः 06/50 बजे से 30/49 बजे तक।
01 मार्चः 06/48 बजे से 09/52 बजे तक।
02 मार्चः 12/43 बजे से 30/47 बजे तक।
03 मार्चः 06/07 बजे से 15/43 बजे तक।
11 मार्चः 07/11 बजे से 30/39 बजे तक।
13 मार्चः 08/21 बजे से 30/37 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः फरवरी-24, मार्च- 3,9,10,13
मशीनरी प्रारंभ : फरवरी-15,24, मार्च-3,9,10,13
वाहन खरीदनेः फरवरी-24, मार्च-1,3,4,9

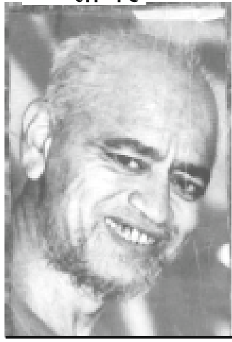

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 287 • फरवरी 2023
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• नियमसार में प्रतिपादित जीवतत्त्व 08
• कार्तिकेयानुप्रेक्षा में विवेचित अशरण भावना 10
• फुटकर व्यापार का रचनात्मक विनाश 12
• कान का बन्द होना बहुत खतरनाक 14
• बहुआयामी व्यक्तित्वके धनी कोमलचन्द्र 20
• महिलाओं का श्वेत प्रदर रोग का कारण व नियंत्रण उपाय 25
• जैनधर्म में वर्ण-व्यवस्था कर्म से ही है, जन्म से नही 44
• अतिशय क्षेत्र ऐलोरा की गुफाएँ 52
• महाकवि हरिचन्द का समय 56

बाल कहानी

• कृतज्ञ झील 64

कविता

• भज ले राम 11
• मैं से माँ तक 13
• समय का रथ 18
• सतत भक्ति करें 23
• ओम् जगत् में सार 30
• धन्य धन्य गुरुदेव हमारे 50

कहानी

• सामायिक बिगड़ गई 37

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 19
चलो देखें यात्रा : 24 • आगम दर्शन :27• माथा पच्ची : 28 • पुराण प्रेरणा : 29
• कैरियर गाइड : 30 • दुनिया भर की बातें : 31 • इसे भी जानिये: 35 •दिशा बोध : 36
हमारे गौरव : 51 • हास्य तरंग: 63
• बाल संस्कार डेस्क : 66 • संस्कार गीत व बाल कविता : 65 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	:	2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	:	5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	:	11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	:	15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)
में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• **सम्पादक महोदय,** चीन ने विगत माह पुनः भारतीय सीमा को पार करने की कोशिश की किन्तु भारतीय वीर सिपाहियों ने चीन के 300 सैनिकों को खदेड़ दिया। शीतकालीन संसद के सत्र में चीन की इस घुसपैठ को लेकर विपक्ष के द्वारा हंगामा खड़ा किया गया। जिसका परिणाम हंगामा के सिवाय कुछ नहीं निकला। हंगामा खड़ा करने से संसद का समय और जनता का पैसा ही बर्बाद होता है। संसद की निष्कर्षहीन, अंतहीन बहस से राष्ट्र को कोई भी लाभ नहीं हुआ। विरोध के लिए विरोध करना सदैव ही अनुचित माना जाता है। परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि सदन में आये दिन होने वाले बहिष्कारों से कभी कोई भी अच्छा संदेश नहीं मिलता। कम से कम राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे को विवाद में न घसीटा जाये जिससे राष्ट्रीय उन्नति में बाधा ही खड़ी होती है अतः विपक्ष राष्ट्र के प्रति संवेदनशील रहें। **– ब्र. राजेश टड़ा।**

• **सम्पादक महोदय,** 'कैलेन्डर बदलिए अपनी संस्कृति नहीं' शीर्षक से विद्वान सुनील संचय का लेख संस्कार सागर पत्रिका के अंक जनवरी 2023 में पढ़ा लेख स्पष्ट सरल सुबोध विचारोत्तेजक है। सत्य यह है कि हर नये वर्ष के नाम पर व्यसनों को ही बढ़ावा दिया जाता है. हम भारतीय संस्कृति को एक ताक में रखकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर मुड़ जाते हैं। भारतीय कैलेन्डर 1 जनवरी को कभी नहीं बदलता। विक्रम संवत् तो चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को बदलता है। जैन धर्म का संवत् वीर निर्वाण कार्तिक कृष्ण अमावस्या को बदलता है। हम भारतीय हैं तो भारतीय नववर्ष पर ही अपना विश्वास स्थिर करें। **– अभिलाषा जैन, भोपाल**

• **सम्पादक महोदय,** चीन ने दोस्ती निभाने का कभी कोई भी इतिहास नहीं रचा है अपितु धोखा देने की अनेक मिसालें उपलब्ध हैं। 1962 से लेकर 2022 तक भारत को चीन से सदैव धोखा ही मिला है। शि-जिनपिंग चीन के तानाशाह की श्रेणी में अपना नाम लिखवा चुके हैं। चीन में कोविड 19 के अभियान में असफल तानाशाह अपनी समस्याओं को अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर धकेल रहे हैं। प्रायः देखा गया है। कि जब भी कोई तानाशाह अपने देश और कार्य में असफल होता है। तो वह अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर समस्यायें खड़ी करके अपनी असफलताएँ छुपा लेता है। चीन की आर्थिक स्थिति बहुत दुविधा पूर्ण बन चुकी है। कब चीन कर्ज में डूब जाये यह कहा नहीं जा सकता है। अब देखना यह है कि भारत की शांति संवेदना युद्ध को कितना टाल पाती है। **– राजकुमार जैन, इन्दौर**

• **सम्पादक महोदय,** संस्कार सागर के जनवरी के अंक में विजयकुमार पत्रकार का लेख वृद्ध माता पिता परिवार में बोझ बन गये। शीर्षक से लेख पढ़ा वृद्धजनों की सेवा करना धर्म साधना का आधार होता है। स्वार्थी अहंकारी कर्म शून्य सन्तान मानवता के मान बिन्दू को भूल जाती है। पुण्य को बढ़ाने वाली वृद्ध सेवा और पाप को बढ़ाने वाली वृद्ध उपेक्षा है। यह तथ्य कभी विस्मृत करने योग्य नहीं हैं। वृद्धजनों में अनुभव रूपी सम्पत्ति का भंडार होता है जिसका लाभ उठाने के लिए उनकी सेवा और विनय करना अनिवार्य होता है किसी का धन तो गला दबा करके लिया जा सकता है परन्तु अनुभव प्राप्त करने के लिए पैर ही दबाना पड़ेंगे। लेख पठनीय और भावनापूर्ण है। **– श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़**

भक्ति तरंग

जिन -धुनि

म्हारे घट जिनधुनि अब प्रगटी ।। टेक ।।
जागृत दशा भई अब मेरी, सुप्त दशा विघटी ।
जगरचना दीसत अब मोकों, जैसी रँहटघटी ।।1।।
विभ्रम तिमिर हरन निज दृग की जैसी अँजनवटी ।
तातैं स्वानुभूति प्रापतितैं, सब परपरनति हटी ।।2।।
ताके बिन जो अवगम चाहे, सो तो शठ कपटी ।
तातैं 'भागचन्द' निशिवासर, इक ताहीको रटी ।।3।।

मेरे अन्तर में अब जिनेन्द्र के प्रति लगन/रुचि जागृत हो गई है अर्थात् अब उनकी दिव्यध्वनि/जिनवाणी का प्रभाव होने लगा है।

अब मेरा विवेक जागृत होने लगा है जिससे अज्ञानभरी सुप्त-प्रमादी दशा नष्ट होने लगी है। अब मुझे यह संसार का घटनाचक्र रहटचक्र के घट के समान लगने लगा है। जो निरन्तर चक्कर चलता हुआ कभी ऊपर जाता है और कभी नीचे।

जैसे अंजन आँखों में अन्जन लगाने से विकार हटकर स्वच्छता आती है वैसे ही जिनवाणी की इस रुचि, लगन से, दिव्यध्वनि सुनकर हुए ज्ञान से मेरा भ्रम, संशयरूपी अंधकार नष्ट होने लगा है। अब मुझे स्वानुभव होने लगा है और पर की प्रधानता व उसकी आश्रितता नष्ट होने लगी है, विघटित होने लगी है, बिखरने लगी है।

जो इस दिव्यध्वनि को बिना ज्ञान पाना चाहे वह केवल छल है, कपट है, कवि भागचन्द कहते हैं कि इसलिए दिन-रात इसी लगन/रूचि को दृढ़ करो, दिव्यध्वनि अर्थात् जिनवाणी को बार-बार पढ़ो, बारम्बार इसका चिन्तन करो, स्मरण करो, दोहन करो।

संस्कार प्रवाह

प्यार और हैवानियत का तालमेल नहीं

मुम्बई के एक प्रेमी जोड़े ने भागकर अपने प्रेम के कच्चे धागे को जोड़ लिया। परन्तु मई 2022 में वहीं प्रेम हैवानियत में बदला और आफताब ने अपनी प्रेमिका श्रद्धा का गला दबा दिया और उसके मरने के बाद शव के 35 टुकड़े करके एक बड़ा फ्रिज खरीद कर उसमें रख दिये और उसके टुकड़े रोज फेंकता रहा। आफताब की हैवानियत सुनकर मात्र श्रद्धा बालकर के माता-पिता ने अफसोस किया होगा। आंसू भी बहाये होंगे। सदमे में वे डूब गये होंगे। जिन्होंने भी सुना होगा ये अशुभ समाचार वे आफताब को कोस रहे होंगे। घटना मात्र अशुभ नहीं है अपितु अमानवीय एवं क्रूरतापूर्ण है। प्रेम के साथ अलगाव होना ही भारतीय संस्कृति के विपरीत है। इस्लामिक संस्कृति में भी प्रेम के साथ छलकपट और क्रूरता का कोई स्थान नहीं है।

दिल्ली की इस घटना को बुद्धिजीवी पत्रकारों ने लव जिहाद घोषित किया। इससे ये घोषित ही होता है कि प्रेम के झूठे जाल में फंसाकर एक धर्म विशेष के लड़के हिन्दू लड़कियों के साथ साजिश और षड़यंत्र रचते हैं और उन्हें अपने धर्म का बनाने का प्रयास करते हैं। धर्मान्तरण प्रयास में असफल होने पर झूठे प्रेमी, दरिन्दों के द्वारा क्रूरता प्रारम्भ हो जाती है और अमानवीय यातनाएं देना प्रारम्भ कर दिया जाता है। झूठे प्रेम जाल में फँसी युवती या लड़कियाँ या तो स्वयं आत्महत्या कर लेती हैं या उन्हें क्रूरतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया जाता है। अथवा वह झूठे प्रेम में फंसी लड़की देह व्यापार के बाजार में उतार दी जाती है।

भौतिक चकाचौंध में फंसी युवतियाँ प्रेम के यर्थार्थ स्वरूप को समझ नहीं पाती हैं। वे इतनी सम्मोहित हो जाती हैं कि अपने माता-पिता के उपकार को एवं उनकी आत्मीयता, स्वाभिमान-प्रतिष्ठा को एवं सामाजिक पारिवारिक अनुशासन को दर किनार करते हुए भावुकता के प्रवाह में यथार्थ की जिन्दगी को भूल जाती हैं। मात्र उनके सिर पर वासना का भूत सवार हो जाता है। भ्रम के वशीभूत हो वासना को प्रेम मानना ही लव जिहाद समस्या की बुनियाद है।

इस समस्या का हल वर्षों से खोजा जा रहा है किन्तु कोई समाधान नहीं निकल रहा है। बीमारी बढ़ती जा रही है। समाधान संस्कारों में निहित है। बिखरते परिवार को जोड़ना परिवार के साथ भोजन करना एवं मोबाइल के एकांतिक प्रयोग को रोकना तथा अतिविश्वास करके अपनी संतान को स्वच्छंदता प्रदान करना जब तक बंद नहीं होगा तब तक समाधान मिलना संभव नहीं है। अत: हमें परिवार संस्था को मजबूत बनाकर लव जिहाद समस्या से दो-दो हाथ करने होंगे एवं प्रेम की यथार्थ भूमिका को स्वीकार करना होगा। समझदार संतान बनाने के प्रयास ही हमें सही रास्ता दिखाने में सक्षम होंगे।

नियमसार में प्रतिपादित जीवतत्त्व

❊ एलक सिद्धांतसागर महाराज ❊

आचार्य कुन्दकुन्द के अनमोल ग्रन्थ रत्नों में परमागम ग्रन्थ नियमसार 187 गाथाओं में निबद्ध है। ग्रन्थ में बारह अधिकारों के माध्यम से अध्यात्म तत्त्व का सरल सुबोध निरूपण किया गया है। इन बारह अधिकारों में जीव अधिकार, अजीव अधिकार, शुद्ध भाव अधिकार, व्यवहार चारित्र अधिकार, निश्चय प्रतिक्रमण अधिकार, निश्चय प्रत्याख्यान अधिकार, परमालोचना अधिकार, शुद्ध निश्चय प्रायश्चित अधिकार, परम समाधि अधिकार, परम भक्ति अधिकार, निश्चय परम-आवश्यक अधिकार, शुद्धोपयोगअधिकार।

इन सब अधिकारों का वर्गीकिण तीन रूपों में किया जाता है। सम्यक् दर्शन और सम्यक् ज्ञान के अन्तर्गत शुद्धभाव अधिकार को समाहित किया जा सकता है तथा सम्यक्चारित्र केअंतर्गत व्यवहार चारित्र अधिकारों को रेखांकित किया गया है तथा निश्चय चारित्र के अंतर्गत परमार्थ प्रतिक्रमण से लेकर शुद्धोपयोग अधिकार तक आठ अधिकारों का समायोजन किया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना के दो आधार हैं-1. मार्ग, 2. मार्ग का फल।

1. मार्ग - मार्गशब्द का अर्थ उपाय भी होता है अतः मोक्ष के उपाय को मोक्ष का मार्ग कहा जाता है। मोक्ष का मार्ग सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रूप ही है। यही रत्नत्रय रूप मार्ग सभी जिनागम में प्रतिपाद्य है। इसी रत्नत्रय को प्राप्त करने की भावना जैन साधना विधि का आधार है।

2. मार्ग फल - सम्पूर्ण साधना का फल रत्नत्रय का फल निर्वाण या मोक्ष सुख ही निश्चित किया गया है। यही मोक्ष का स्वरूप आत्मा की शुद्ध अवस्था का नाम है।

नियम शब्द से आशय -

नियम शब्द की उत्पत्ति नि+यम = नियम चारों तरफ से जिससे कार्य की सिद्धि निश्चित होती है उस विधि को नियम कहते हैं अर्थात् मोक्ष के कारण को नियम कहते हैं। नियम दो प्रकार के होते हैं- 1. कारण नियम, 2. कार्य नियम।

परम पारणामिक भाव से स्थित स्वभाव अनन्त चतुष्टय आत्म शुद्ध ज्ञान चेतना परिणाम कारण नियम है। और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र कार्य नियम हैं अतः विपरीतता का परिहार कर देने के कारण ये सार शब्द नियम के साथ जुड़ जाता है अतः नियमसार शीर्षक सार्थक सिद्ध हो जाता है।

मोक्ष के उपाय -

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को भेद रत्नत्रय के रूप में तथा अभेद रत्नत्रय के रूप में मोक्ष का उपाय नियम से प्रतिपादित किया है तथा इस नियम का फल परम निर्वाण कहते हुए प्रत्येक का वर्णन किया है।

सम्यग्दर्शन - आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार ग्रन्थ में सम्यग्दर्शन की परिभाषा सुनिश्चित करते हुए कहा है आप्त आगम और तत्त्वार्थ की श्रद्धा करने से सम्यग्दर्शन होता है इस परिभाषा में तपोधन को ग्रहण नहीं किया गया है यह विचारणीय है।

आप्त स्वरूप - आचार्य कुन्दकुन्द देव ने शंका रहित आप्त का स्वरूप सुनिश्चित करते हुए उन्हें 18 अठारह दोषों से रहित वीतरागी मान्य किया है एवं उन उठारह दोषों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। 1. शारीरिक दोष, 2. मानसिक दोष, 3. आध्यात्मिक दोष।

शारीरिक दोष - शारीरिक दोष आठ होते हैं - 1. जन्म, 2. जरा, 3 मरण, 4. भूख, 5. प्यास, 6. स्वेद (पसीना), 7. रोग, 8. निद्रा।

मानसिक दोष - 1. भय, 2. विस्मय, 3. चिन्ता, 4. खेद, 5. मद, 6. रति, 7. अरति, 8. उद्वेग।

आध्यात्मिक दोष तीन होते हैं 1. राग, दोष, 3. मोह युक्त मानते हुए वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी के रूप में मान्य किया है सचेत करते हुए कहा है इनसे विपरीत परमात्मा नहीं होते हैं।

आगम स्वरूप - सम्यग्दर्शन का आधार आगम भी है जिसकी व्याख्या करते हुए आचार्य श्री कहते हैं पूर्वा पर विरोध रहित आप्तमुख से निर्गतवाणी को आगम कहा जाता है और उस आगम से ही तत्त्वार्थ का प्रतिपादन होता है।

तत्त्वार्थ के रूप - तत्त्वार्थ शब्द अपने अंतर्गत जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल का ग्रहण करता है और यही शब्द जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर और निर्जरा मोक्ष का स्पष्टीकरण करता है। जीव और पुद्गल की विशेषताओं से सात तत्त्वों का संकलन होता है।

जीवतत्त्व की विवेचना - जीव को आचार्य कुन्दकुन्द देव ने उपयोगमय माना है उपयोग की परिभाषा सुनिश्चित करते हुए कहा है कि चैतन्य सम्बन्धी आत्मा के व्यापार को उपयोग कहा जाता है वह उपयोग दो प्रकार का होता है। 1. ज्ञान उपयोग, 2. दर्शन उपयोग।

ज्ञान उपयोग ही स्वभाव-विभाव के आधार पर दो भागों में विभाजित हो जाता है। 1. स्वभाव ज्ञान, 2. विभाव ज्ञान। स्वभाव ज्ञान के अन्तर्गत मात्र केवलज्ञान ग्रहण किया गया है। विभाव ज्ञान के अन्तर्गत कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान आते हैं।

दर्शन उपयोग भी दो प्रकार से प्रतिपादित किया गया है। 1. स्वभाव दर्शन उपयोग। 2. विभाव दर्शन उपयोग। स्वभाव दर्शन उपयोग के अन्तर्गत केवल दर्शन आता है और विभाव दर्शन उपयोग के अन्तर्गत चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन ये तीन दर्शन आते हैं।

केवलज्ञान - केवलज्ञान को अतीन्द्रिय और सम्पूर्ण द्रव्य गुण और पर्याय को जानने वाला सिद्ध किया गया है यह ज्ञान साकार उपयोग के अन्तर्गत आता है केवल ज्ञान सविकल्प होता है तथा केवल दर्शन सामान्य सत्ता ग्राही निर्विकल्प होता है।

जीव के पर्याय की दृष्टि से भेद - जीव की मुख्य चार पर्यायें सिद्ध की गई हैं ये सभी विभाव पर्यायें हैं इनके अन्तर्गत नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव का भेद होता है तथा इन चारों के अन्तरभेद भी होते हैं नरक के पृथ्वी की दृष्टि से सात भेद होते हैं। तिर्यंच के जीव समास की दृष्टि से चौदह भेद होते हैं। मनुष्य के भूमि की दृष्टि से दो भेद होते हैं (कर्म भूमि, भोग भूमि) तथा देवों के चार भेद होते हैं, भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक। इन द्रव्यों की स्वभाव पर्यायें अर्थ पर्याय के रूप में मान्य की गई हैं।

कर्ता-भोक्ता - जीव को व्यवहार नय से पुद्गल कर्म, नोकर्म का कर्ता-भोक्ता स्वीकार किया गया है एवं निश्चय नय से जीव आत्मा को पौद्गलिक कर्म नौकर्म का कर्ता भोक्ता नहीं माना है किन्तु निज चेतन परिणाम ही कर्ता-भोक्ता मान्य किया है अन्त में द्रव्यार्थिक और पर्यार्याथिक अर्थात् निश्चय व्यवहार नय को सापेक्ष दृष्टि से देखने पर ही मोक्ष की सिद्धि एवं तीर्थ का प्रवर्तन संभव होता है।

जीव तत्त्व के इन सब विवेचन को सुनने और समझने के बाद यह परिणाम निकलता है कि जीव तत्त्व के स्वरूप को समझे बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती है अतः जीव तत्त्व का चिन्तन ही मोक्ष पुरुषार्थ सिद्ध करने में अनिवार्य होता है।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा में विवेचित अशरण भावना

❊ न्यायाचार्य पं. डॉ. दरबारीलाल जैन, कोठिया ❊

संसार की समस्त घटनाओं में अटल घटना मृत्यु है। मृत्यु कभी किसी की टली नहीं हैं। फिल्म उपकार के एक गीत में कहा गया है कि - **होगा मसीहा सामने तेरे फिर भी न बच पायेगा, तेरा अपना खून ही तुझको आग लगायेगा।** इस छंद से हम कह सकते हैं कि फिल्मी दुनिया के गीतकारों ने भी रहस्योद्घाटन तो किया है कि मृत्यु से कभी बचा नहीं जा सकता है। इसी सत्य को आचार्य कार्तिकेयने अपने सिद्ध ग्रन्थ कार्तिकेयानुप्रेक्षा में अशरण अनुप्रेक्षा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

अशरण भावना की शुरुआत करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि उस भव में कोई शरण नहीं होता है जिस भव में हमें देखने को मिलता है कि मृत्यु निश्चित है और जब हरि-हर आदि भी काल के गाल में समा जाते हैं। स्वर्ग का इन्द्र भी काल कवलित हो जाता है। तो ऐसी परिस्थिति में हम लोगों की क्या स्थिति बनेगी। जिस प्रकार से शेर के पंजे के नीचे जाए हिरण को बचाने वाला कोई नहीं होता है उसकी मृत्यु से उसे कोई रोक नहीं सकता है। व्यक्ति कितना भी कुछ कर ले चाहे वह कितने भी देवी-देवताओं के पास चले जाये, चाहे कोई भी मंत्र-तंत्र करे चाहे कोई भी क्षेत्रपाल आदि के सामने गिड़गिड़ाएँ तो भी वह मृत्यु से बचने वाला नहीं है। अति बलवान रुद्र भी मरण से बच नहीं पाते हैं। उनकी भी मृत्यु होती है। कोई भी उनकी रक्षा करने वाला नहीं होता है। इसीलिए हम यह कह सकते हैं कि मरण से बचाने के लिए कोई भी सक्षम नहीं है। आचार्य श्री आगे कहते हैं कि इस प्रकार देखकर भी जो भूत-पिशाच, ग्रह, योगनी, जोगनी, यक्ष आदि की शरण में जाते हैं। वे मूढ़ जीव मिथ्यात्व से ग्रहीत हो जाते हैं और मिथ्यात्व से ग्रहीत होकर के सारे देवी-देवताओं की शरण में जाने के बाद मृत्यु से वे अपने आप को बचा नहीं पाते हैं।

स्वामी कार्तिकेय जी कहते हैं कि आयु का क्षरण होने पर मरण होता है। उस आयु का दान करने वाला कोई भी नहीं होता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है। जो हमारे लिए आयु का दान दे दे।

सम्राट, महाबल, सेनानी उस क्षण को टाल सकेगा क्या? अशरण मृत काया में हर्षित निज जीवन डाल सकेगा क्या?

इस तरीके से देवेन्द्र आदि भी मरण को बचाने में सक्षम नहीं हैं। तो वह मूढ़ जीव अपने आप को मृत्यु से बचाने के लिए जितना भी उपाय बनाता है वह उपाय करता है। पर वह भूल जाता है कि देवों के खास इन्द्र भी मरण को प्राप्त हो जाते हैं। उनकी भी कोई रक्षा करने में समर्थ नहीं होता है। और सबसे उत्तम भोग भोगने वाले, भोग सामग्री से युक्त रहने वाले, स्वर्ग को उसे छोड़ना पड़ता है। जब इन्द्र को भी स्वर्ग छोड़ना पड़ता है तो हमें मृत्यु से कौन बचा सकता है?

दर्शन, ज्ञान चारित्र यही व्यक्ति के सच्चे शरण हैं। इन्हें ही रत्नत्रय कहते हैं -

देव, धर्म, गुरु, शरण जगत में और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता, चेतन यू ही उमर खोई॥

आचार्य श्री कहते हैं कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्र ही शरण हैं। उसकी परम श्रद्धा करके इसका ही सेवन करना चाहिए। संसार में भ्रमण करते हुये जीवों के लिए इसके सिवा कोई दूसरा शरण नहीं है। आत्मा को उत्तम क्षमा आदि भावों से युक्त करना भी शरण है। कषायों की तीव्रता को कम करके स्वयं को अपने ही घात से रोकना शरण है और जो इस शरण को समझ लेता है। वही जीव अशरण भावना का स्वरूप समझता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की गाथाओं में यह वर्णन किया गया है और इस अशरण भावना का वर्णन करते हुये आचार्य श्री ने उस प्रकृति के सत्य को बताया है। जो अटल मृत्यु को रेखांकित करता है। उसको समझने के बाद यदि कोई व्यक्ति मृत्यु से डरकर अपनी आत्मा के कल्याण की बात करने लगता है और मृत्यु को सुनिश्चितता को समझ करके धर्म, देव, शास्त्र, गुरु की शरण में जाता है। उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, संयम, सत्य तथा त्याग आंकिचन्य, ब्रह्मचर्य इन दस धर्मों से जुड़ जाता है। और क्रोध, मान, माया, लोभ को छोड़ देता है तो निश्चित तौर पर उसकी अशरण भावना समझना सार्थक हो जाता है।

कविता

भज ले राम

❊ कांतिकुमार जैन, करूण खिमलासा ❊

सत्य अहिंसा धर्म हमारा
हथकरघा ही कर्म हमारा
सत्य अहिंसा का आधार
हथकरघा से नैय्या पार

हथकरघा स्वाभिमान है
करुणा की पहचान है
विद्या गुरु का यह संदेश
हथकरघा संग भारत देश

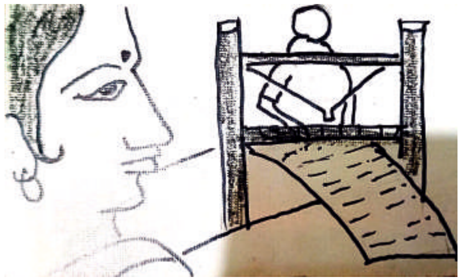

सब्जी रोटी दया विचार
हथकरघा इनका आधार
कड़े सोच की यह अंगड़ाई
हथकरघा में सभी भलाई

व्यसन मुक्त बन जायेंगे
हथकरघा अपनायेंगे
श्वास श्वास में भजले राम
हथकरघा पर करना काम

फुटकर व्यापार का रचनात्मक विनाश

✻ प्रियंक समग्र जैन ✻

मेरे परिवार में मुख्य तौर पर रिटेल/खुदरा /फुटकर व्यापार का चलन रहा है। किसी की कपड़े की दुकान, किसी की साड़ी की, किसी की इलेक्ट्रानिक्स, किसी की गल्ला मंडी में अनाज की दुकान और किसी की जैसे की मेरे अपने घर में हैं। किराने की दुकान। खुदरा खासकर 2000 से 2010 के दौर में ऐसे व्यापारी मध्यम वर्ग में बने रहें। उसके पहले के समय की मैंने बातें सुनी हैं, लेकिन अनुभव नहीं है। 2010 के बाद से खुदरा व्यापार में सतत् गिरावट जारी है। बहुत से परिवारों की आय मध्यम वर्ग श्रेणी से घटकर निम्न मध्यम वर्ग श्रेणी में जा चुकी है।

आप शहर के बाजारों में जाकर घूमिये, तो मायूस चेहरे नजर आएंगे। व्यापार के भविष्य में गहरी अनिश्चितता है। वर्तमान दौर बहुत कठिनाई से गुजर रहा है। खुदरा ढाँचे ने जिसमें बड़े-बड़े मॉल्स, रिटेल स्टोर, ऑनलाइन प्लेटफार्म और नया उभरा सर्विसेज से आय कमाने वाला खरीददार वर्ग शामिल हैं, खुदरा व्यापार के परम्परागत ढाँचे को ध्वस्त करने दिया है।

कुछ विद्वान इसे सृजनात्मक विनाश या विध्वंस (creative destruction) भी कह सकते है। हालांकि मेरी नजर में यह मूर्खतापूर्ण और संवेदनहीन मुहावरा है। कौन हैं खुदरा व्यापारी ? किस उम्र के हैं? क्या वह बदली हुई अर्थव्यवस्था से दो-दो हाथ कर पाने में भी सक्षम हैं? क्या उन अधेड़ उम्र के दुकानदारों में इतनी ऊर्जा और चाव बचा है? इस विध्वंस में उनकी व्यवस्था ही नहीं बिखर रही है। पूरी की पूरी सामाजिकता बिखर रही है क्योंकि अर्थव्यवस्था का बदला हुआ ढाँचा अपने साथ नई सामाजिकता भी लाया है। इस नई सामाजिकता में परस्पर-निर्भरता और आत्मीयता के सभी सम्बन्ध टूट रहे हैं। छटपटाहट सी महसूस होती है एकदम।

ऐसा लगता है कि जैसे बड़े शहरों से बाजारवाद और आधुनिकता का एक गुरिल्ला सेना की तरह छोटे शहरों की तरफ कूच किये हुए है और खुदरा व्यापारी, एक अनभिज्ञ और खराब तैयारी के साथ उसके सामने दीवार बनके खड़े होने को मजबूर हैं। जिस लड़ाई को हाल ही में अभी किसानों ने लड़ा-बड़ी पूँजी के किसानों में निरंकुश प्रवेश के सम्बन्ध में। उस लड़ाई को खुदरा व्यापारियों को लड़ने का अवसर ही नहीं मिला। क्योंकि अर्थव्यवस्था के जिन क्षेत्रों में पहले बदलाव आया उन क्षेत्रों में उत्पन्न हुई समृद्धि से मध्यम वर्ग बना जिसने, खुदरा व्यापारियों को लाभ दिया। लेकिन वही बदलाव जब खुदरा व्यापार में आये तो खुदरा व्यापारी, उस टर्निंग पाइंट/घातक मोड़ को पकड़ नहीं पाए। बहुत-से मुहावरें हैं सप्लाई चेन एफिशिएंसी (supply chain efficiency), वैल्यू एडिशन value addition वगैरह-वगैरह जिन्हें इस्तेमाल से लाकर बड़ी पूँजी खुदरा व्यापार में घुसी है।

पता नहीं क्यों बड़ी पूँजी का यह व्यवहार होता है कि वह और सभी को अपने अधीन कर लेना चाहती है। वह शेयर नहीं करती, अपितु सभी को अपने आश्रित बनाती हैं। और जो लोग

आश्रित हो जाते हैं, ना तो उनकी सामाजिकता बचती है और न ही संस्कृति। खुदरा व्यापारी, जो कि खासकर बनिया, सिंधी और जैन समाज से आते हैं, अपनी सामाजिकता को धर्मान्धता की संकीर्णता से बचाने में लगे हुए हैं। और उनकी सामाजिकता की आर्थिकी पर छिड़े युद्ध का समर्थन करने वाली राजनीति से अनभिज्ञ भी हैं। जल्द ही खुदरा व्यापारियों को अपनी सामाजिकता के आर्थिक पहलू को प्राथमिकता देना होगी। केवल सामाजिकता बचाने में तो वो लुम्पेन बन जाएंगे। और अपनी आर्थिकी को बचाने के लिए उन्हें अपनी राजनीतिक आवाज बुलंद करनी होगी।

कविता

मैं से माँ तक

✻ कांतिकुमार जैन, करूण खिमलासा ✻

मैं से माँ तक
का सफर,
न जाने कैसे तय
हो गया,
पता ही न चला,
कब इन नन्नी
आँखों का ख्वाब मेरा
हो गया,
पहले जिन रास्तों पर
चलने से डर लगता था,
आज उन पर चलना
आसान हो गया॥
माँ अपने बच्चे में
ब्रह्माण्ड देखती हैं
शायद इसीलिये माँ की
ममता बच्चे के इर्द-गिर्द
घूमती है,
दुनिया में ऐसी कोई
तराजू नहीं जो माँ को
तौल सके,
और ऐसी कोई ताकत नहीं
जो माँ का हौंसला तोड़ सके।

कान का बन्द होना बहुत खतरनाक

✻ अरविन्द प्रेमचन्द जैन, भोपाल ✻

कान शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों में से एक है। कान से ध्वनि का पता चलता है, इसलिए इनका स्वस्थ होना बेहद जरूरी है। बंद कान की समस्या को कई नामों से जानते हैं। कई लोग बोलते हैं कान में मोम हो गया, तो अनेक लोग कहते हैं कि कान में मैल हो गया है। कुछ लोग कान में गंदगी होना भी बोलते हैं। जब भी किसी व्यक्ति का कान बंद होता है तो वह माचिस की तीली या अन्य किसी चीज से कान को खुजाने की कोशिश करता है। अनुचित तरीके से कान से गंदगी निकालने से कान को बहुत नुकसान भी पहुंच सकता है। इसलिए यहां कान के मोम को निकालने के लिए अनेक घरेलू उपाय बताए जा रहे हैं , जिनका प्रयोग कर आप आसानी से कान की गंदगी को बाहर निकाल सकते हैं।

आयुर्वेद में कान के बन्द होने की समस्या के लिए अनेक घरेलू इलाज इनका पालनकर बंद कान की समस्या से निजात पा सकते हैं।

कान का बन्द होना क्या है ?

कान मनुष्य के शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है। जब कान में लगातार कुछ जमा होने लगता है तो कान बंद होने लगता है। इस स्थिति में पीड़ित को कम सुनाई देता है। कान के आंतरिक हिस्से में मौजूद पतली नलिकाओं में जलन, सूजन, कान में मैल भर जाने और कान में संक्रमण हो जाने के कारण कान बन्द हो सकते हैं। इसी तरह चक्कर, एलर्जी और साइनस की वजह से भी कम सुनाई देता है।

कान बन्द होने पर ये लक्षण महसूस होते हैं-

- कानों में लगातार कुछ भराव महसूस होना।
- कानों का लगातार बजना।
- कानों में सनसनी होना।
- कान में सीटी के बजने का अनुभव होना।
- कानों में जलन होना।
- कानों में असुविधाजनक लगना।
- कानों में दर्द होना।
- कानों में हवा आने का अनुभव होना।
- कानों में खुजली होना।
- अक्सर गले में खराश होना।
- कान में कोई द्रव्य बहता हुआ महसूस होना।

कुछ लोगों को भीषण दर्द देता है, तो कुछ को थोड़ी परेशानी सी लगती है, और कुछ को कोई दर्द महसूस नहीं होता।

- सिर दर्द हो सकता है।
- नींद कम आना।
- कानों से कम सुनाई देना।

कान बंद होने के कारण

कान के बंद होने या भर जाने के ये कारण हो सकते हैं -

अचानक अधिक ऊँचाई जैसे कि पर्वतीय स्थानों में ड्राइव करना या विमान में उड़ान भरना।

कान के बाहरी हिस्से में काफी मैल भर जाना।

बाहरी वातावरण में बहुत ज्यादा गंदगी के कारण भी कानों में सनसनी होने से लेकर कान बन्द तक हो सकते हैं।

जुकाम, बुखार के कारण

- साइनस के कारण
- नहाने या तैरने के दौरान काल के अंदर पानी घुस जाने पर।
- घूमर या स्ट्रोक की वजह से भी।
- कान में संक्रमण की समस्या भी हो सकती है।
- कान में आसानी से तरल पदार्थ प्रवेश कर सकता है। इसके कारण यह कान को संक्रमित कर देता है।
- अगर कान में किसी तरह की चोट लग गई है तो इसके कारण भी सुनने की क्षमता कम हो जाती है।

जानलेवा घटना जैसे विस्फोट या वाहन चलाते समय कोई दुर्घटना हुई तो कान के पर्दे में छेद होने से कान में अचानक दर्द हो सकता है।

कान के बंद होने की समस्या में घरेलू उपचार

संतुलित आहार से आपके शरीर को पोषण मिलता है। शारीरिक गतिविधियाँ जैसे योगाभ्यास आदि आपके शरीर और दिमाग को दुरुस्त रखकर रोग-प्रतिरोधक क्षमता का विकास करता है। इन्हीं गतिविधियों के गड़बड़ाने के कारण शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं। बंद कान की समस्या भी इन्हीं कारणों से होती है, जिसके लिए ये घरेलू उपाय कर सकते हैं।

टी-ट्री ऑयल का उपयोग

गर्म पानी में टी-ट्री आयल को मिला लें। इसकी भाप में कान के अन्दर आने दें। इससे कान के दर्द से आपको आराम मिल जाएगा।

यूकेलिप्टस का तेल

पानी गर्म करके एक बर्तन में लें। इसमें 2–3 बूंद यूकिलिप्टस का तेल डाल लें। इसके भाप को कान के अन्दर आने दें । इससे बन्द कान खुल जाते हैं। ऐसा दिन में 3–4 बार करें।

जैतून के तेल

एक चम्मच जैतून का तेल गर्म कर लें। जब यह ठंडा हो जाए तो इसे कान में डाले। इससे कान के दर्द से तो आराम मिलता ही है साथ ही कान की गन्दगी भी बाहर आ जाती है।

सेब के सिरके

सेब के सिरके में एन्टी बैक्टीरियल गुण होते हैं। आप इसमें थोड़ा-सा एल्कोहल मिला लें। इसे कान में दो से चार बूंदे डालें। बाद में इयर बड से कान साफ कर लें।

सरसों के तेल

सरसों का तेल हल्का गुनगुना करके रात को सोने से पहले कान में दो-दो बूंद टपका दें। सुबह उठकर इयर बड से कान साफ कर लें।

लहसून का प्रयोग

लहसून के तेल का प्रयोग करने से बंद कान खुल जाता है। इसको तैयार करने के लिए तीन से चार लहसून की कलियों को पीस लें। इसे एक चम्मच सरसों के तेल में डुबों दे। कुछ देर तक गर्म करें। इसे बाद में छान दें। ठण्डा होने के बाद कान में डालें।

लैवेन्डर तेल की कुछ बूंद को पानी में डालें। इसकी भाप लें। ऐसा करने से काफी आराम मिलेगा कान में जमा वैक्स भी पिघल जाएगा। बाद में आप कॉटन से साफ कर लें।

सीधे रहकर गुनगुने पानी कुछ बूंद कानों में डालें। बाद में कान को उल्टा करके पानी को निकाल दें इसके बाद इयरबड से कान साफ कर लें।

यदि कान बन्द होने की वजह से दर्द कर रहा हो तो जम्हाई लें। ऐसा करने से प्रेशर बनेगा, और आपको आराम मिलेगा।

कान बंद होने पर गर्मागर्म सूप पिंए। इससे काफी आराम मिलेगा, और मस्कस भी नरम हो जाएगा। यदि आप अपने भोजन में चिली और पिपर की मात्रा बढ़ा लेते हैं तो कान में कसकर खुजली होने लगती है। इससे आपको लाभ मिलता है। स्पाइसी फूड की ट्रिक को अवश्य अपनाएं।

गुनगुने पानी से कुल्ला करें। पानी में हल्का-सा नमक मिला लें। इसे घोलकर गरारे करें। इससे कान के दर्द में राहत मिलती हैं।

कान बंद होने से आपको झुंझलाहट होती है। ऐसे में कपड़े को प्रेस से गर्म करें और कान पर रखें। ऐसा करने से कान के दर्द में आराम मिलता है।

हवा के अचानक दबाव के कारण होने वाले बंद कान के लिए आप च्युइंग-गम का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह कान में अतिरिक्त दबाव से राहत और बंद कान को खोलने में मदद करता है।

अपने मुँह को बंद करके दोनों नाक के छिद्र को अपनी उंगलियों से बंद करके गहरी सांस छोड़े। यदि आप ऐसा ठीक से करते हैं तो कान बंद होने की समस्या आसानी से दूर हो जाएगी।

1/2 कप गर्म पानी में कुछ बूंदे ग्लीसरीन की डालें। इस घोल की कुछ बूंदे कान में डाल कर 10 मिनट तक छोड़ दें। गुनगुने पानी के साथ कान धो लें।

कान बंद होने की समस्या में आपका आहार

कान बन्द होने की समस्या के लिए आपका खान-पान ऐसा होना चाहिए-

- एलर्जी वाली चीजों को ना खाएं।
- और खान पान पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें।

कान बंद होने की समस्या में आपकी जीवन शैली

बेहतर जीवन शैली से किसी भी समस्या पर काबू पाया जा सकता है, इसलिए बंद कान की समस्या में ये जीवनशैली का पालन करना चाहिए-

- नहाने के बाद कानों को अच्छे से सुखाएं।
- कानों को नियमित रूप से सफाई करें।
- तेज आवाज के माहौल से आने के बाद 10 मिनट तक ऐसी जगह रहें, जहां बिल्कुल भी शोर ना हो।
- स्वीमिंग पूल में कानों को नुकसान होने की सम्भावना होती है। पूल में पानी को साफ रखने के लिए क्लोरीन का प्रयोग किया जाता है। इससे कानों में दर्द होना या तरल पदार्थ बहने की समस्या हो

सकती है। इससे बचने के लिए ईयर प्लग का इस्तेमाल करना जरूरी है।

- मशीनों, फैक्ट्रियों और खासतौर पर ऑटोमोबाइल से निकलने वाले शोर के कारण वातावरण में ध्वनि प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। इस शोर के कारण सुनने की क्षमता कम हो रही है। इन फैक्ट्रियों से निकलने वाली रेडियेशन त्वचा के साथ कानों को भी नुकसान पहुँचा रहा है।

कान के बन्द होने पर परहेज

- प्रदूषण से बचें।
- बच्चों को सर्दी से बचाएं।
- शोर-शराबे से दूरी बनाए रखें।
- खासतौर पर ध्वनि प्रदूषण से बचें।
- टीवी का तेज आवाज कर ना देखें।
- कानों में कोई नुकीली चीज ना डालें।
- रेडियो या टीवी तेज आवाज में ना सुनें।
- बच्चों को कान में नुकीली चीजें ना डालने दें।
- स्वीमिंग करते समय ईयर प्लग का प्रयोग करें।
- तेज आवाज में ईयर फोन लगाकर गाने ना सुनें।
- फेक्ट्रियों में लगी मशीनों से निकलने वाली रेडियेशन से दूर रहें। वह कान के लिए हानिकारक हो सकती है।

तेज आवाज में ईयरफोन लगाकर गाने नहीं सुनें। ऐसा चलन आज के युवाओं में अधिक देखने को मिलता है। इसके लगातार इस्तेमाल से सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। लम्बे समय तक तेज ध्वनि सुनने से कान के पर्दे की मोटाई प्रभावित होती है। और धीमी आवाजें भी सुनाई नहीं देती। आयुर्वेदिक उपायों से भी फायदा ना मिलने के ये कारण हो सकते हैं।

आयुर्वेदिक उपाय का ढंग से प्रयोग ना करना।

आयुर्वेदिक उपाय का प्रयोग करते समय परहेज ना करना।

इस स्थिति में डॉक्टर से सम्पर्ककरें -

- जब कान बहने लगे।
- जब कान में अत्यधिक खुजली हो।
- सर्दी-जुकाम के बाद कान में दर्द होना।
- छोटे बच्चों का दर्द से रात में बार-बार रोना।
- जब कान से कुछ सुनाई ना दे या धीमा सुनाई दें।

जब संक्रमण लम्बे समय तक बना रहता है तो परदे में छेद हो जाता है। ज्यादा दिनों तक बीमारी रहने पर डॉक्टर से सम्पर्क करें।

आयुर्वेदिक योग-सपारिवादि वटी लाभकारी है।

कविता

समय का रथ

✻ अंकित जैन ✻

काल चक्र संग संग लेकर, मैं भी सीना तान चला
रोक सके तो रोक ले मुझको, जीवन का बलिदान भला।।
वही थामकर चलता इसको, जो कठोर अनुशासित हो।
जिसके मन में पले वीरता, और तपस्या का बल हो।।
लक्ष्य को लेकर अपना जीवन, बलिबेदी का मान बने।
रोक सके तो रोक ले मुझको, जीवन का बलिदान भला।
शीतल जल और मंद पवन, चहुँ ओर सुगन्ध बिखेरे।
विंध्याचल की श्रृंखला, ऋषि मुनियों का वैभव है।।
जिधर की दृष्टि डाली जाए, पर्वत श्रेणी आकाश छूती चले।
रोक सके तो रोक ले मुझको, जीवन का बलिदान भला।।

याद रहे वो वीर सपूत जो साहस सौन्दर्य का प्रतीक है।
यश कीर्ति विजय पराक्रम, फैली दूर दूर तक है।।
पथ में जो भी बाधाएँ आएँ, निर्भीक उनसे टकराने चला।
रोक सके तो रोक ले मुझको, जीवन का बलिदान भला।।

काल चक्र संग संग लेकर, मैं भी सीना तान चला
रोक सके तो रोक ले मुझको, जीवन का बलिदान भला।।

स्वस्थ बनायें मुद्राएँ

शून्य व वायु मुद्रा को रोग दूर होने पर न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

प्राण, ज्ञान, अपान, पृथ्वी, मुद्रा अधिक समय तक की जा सकती है।

शून्य मुद्रा व अपना वायु मुद्रा अपना असर जल्द बताती है व अन्य मुद्राएँ अपना असर धीरे-धीरे बताती है।

अन्य चिकित्सा पद्धति का इलाज चल रहा हो तब भी उक्त मुद्राएँ की जा सकती है। उनका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है।

1. ज्ञान मुद्रा :

हाथ की तर्जनी अंगुली (अंगूठे के पास) को अंगूठे की टोप से सहजता के साथ मिलाकर रखें , बाकी अंगुलियाँ सहज व सामान्य रहेंगी।

लाभ :

1. स्नायु मंडल शक्तिशाली होता है।
2. मानसिक तनाव दूर होकर मस्तिष्क शाक्तिशाली बनता है।
3. मन संबधी अनेकों रोगों में चमत्कारिक लाभ होता है।
4. इसे करने से मन प्रसन्न रहता है।
5. इससे मानसिक एकाग्रता बढ़ती है।
6. अनिद्रा में अत्यधिक लाभप्रद हैं।

चिकित्कीय प्रभाव :

अंगूठा मस्तिष्क का केन्द्र है। अंगूठे को दबाने से पिनियल व पिटयुटरी दोनों ग्रंथिया दबती हैं। इनसे न केवल ये ग्रन्थियाँ स्वस्थ होती हैं वरन् इनका विकास भी होता है।

2) आकाश मुद्रा :

मध्यमा (बीच की अंगुली) को अंगूठे के अग्रभाग से मिलने से आकाश मुद्रा बनती हैं। अन्य अंगुलियाँ सहज व सामान्य अवस्था में मिलती हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : कोमलचन्द्र

❋ सुरेश जैन, आई.ए.एस. भोपाल ❋

जबलपुर वासी और अफ्रीका प्रवासी श्री कोमलचन्द्र जैन, मुख्य अभियंता का 75 वर्ष की आयु में अचानक हृदय गति रुक जाने से 25 सितम्बर, 2022 को देहावसान हो गया। वे भारत अफ्रीका मैत्री संघ के संस्थापक अध्यक्ष थे। दिगम्बर जैन महासमिति जबलपुर संभाग भारतीय जैन संगठन दिगम्बर जैन सौशल ग्रुप और भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी रहे हैं। उन्होंने जबलपुर जैन समाज के स्वतंत्रता सेनानियों को तथा जबलपुर जैन समाज को सतत सहयोग प्रदान किया है। उन्होंने श्रमण परम्परा में रामायण की राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुति की है। उनकी व्यावसायिक सफलता सदैव सराहनीय रही है। हमारी बड़ी बहू डॉ. वीनू जैन, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के. के पिताश्री कोमल जी नैनागिर जैन तीर्थ के ट्रस्टी और सिंघई सतीशचन्द्र केशर देवी जैन जनक कल्याण संस्थान नैनागिरि के अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित नैनागिरि तथा दलपतपुर (तिन्सी) जैन विद्यालय को अपना सतत् सहयोग प्रदान किया है।

2. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनीमुख्य अभियन्ता श्री कोमलचन्द्र जी लोक प्रसिद्ध प्रभावी व्यक्ति रहे हैं। बहुत अच्छे पाठक हैं। उन्होंने सहस्रों पुस्तकें पढ़ी हैं। वे कुशलतम मंच संचालक रहे हैं। गीतकार रहे हैं। बहुत अच्छे श्रोता रहे हैं। वे भले ही पूर्णकालिक साहित्यकार न रहे हो, उनकी आजीविका का साधन भी लेखन न रहा हो, परन्तु अपनी जीवनी लिख कर सफल और लोकप्रिय लेखक अवश्य बन गए हैं। श्री जैन ने अपनी अफ्रीका डायरी में पर्यटकों को अनेकों बड़ी उपयोगी सीखें प्रदान की है। अतः देश-विदेश के पर्यटन के लिए इच्छुक व्यक्ति को यह पुस्तक गीता की भांति अपने पास रखना और पढ़ना चाहिए। इस पुस्तक को पढ़कर पाठक अफ्रीका महाद्वीप के तथ्यों से परिचित होंगे। व्यावहारिक ज्ञान के नए आयाम प्राप्त कर सकेंगे।

3. श्री जैन जिम्बाब्वे और वोत्सवाना सरकार के लोकप्रिय मुख्य अभियंता और बहुचर्चित प्रवासी रहे हैं। शिष्ट आचरण और सादगी के धनी रहे हैं। उन्होंने अफ्रीका डायरी में अभिलिखित सभी घटनाओं को समाज के व्यापक सरोकारों से जोड़ दिया है। अपने जीवन की चुनौतियों को सुन्दर शब्दों और प्रभावी वाक्यों में पिरो दिया है। शिल्प स्तर पर पुस्तक को बहुत ही रोचक और पठनीय बना दिया है। उनकी लेखनी से प्रसूत शब्दों का जन-जन को सहज सम्प्रेषण सराहनीय है। श्री जैन ने अपने अनुभवों को लिखने में संकोच और परहेज नहीं किया, जिससे यह पुस्तक उबाउ होने से बच गई। आपकेसभी

अनुभव और वाक्ये मजेदार है। निश्चित ही यह पुस्तक उनकी सेवा और साधना की जीवन्त प्रतीक बन गई है। यह पुस्तक उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए दर्पण का कार्य करेगी।

4. वोत्साना में एक छोटे से आदिवासी ग्राम प्रमुख से मेमना के स्थान पर तरबूज की भेंट स्वीकार कर उसे सबके साथ खाने का आनन्द लेना, जैन साहब के तात्कालिक चातुर्य को प्रगट करता है। हमें यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि यहाँ के लोग आनंद के लिए नहीं अपितु अपनी भूख मिटाने के लिए न्यूनतम शिकार करते हैं और इसके लिए प्रभु से क्षमा याचना करते हैं।

5. श्री जैन कुछ नया सीखने और करने का उत्साह सदैव बनाए रखते थे। यह सराहनीय है कि उन्होंने एक ओर लिखे शासकीय अनुपयोगी पेपर एकत्रित कर उनकी कॉपियाँ बनाई और गाँवों के स्कूलों में वितरित की।

6. कोमलचन्द्र जी ने अफ्रीकन व्यक्तियों को इंजीनियरिंग के छोटे-छोटे कामों में प्रशिक्षित किया। उनके सहज स्वभाव तथा सरल व्यक्तित्व को पहचानकर उनकी सराहना की। उन्हें नई ऊँचाई दी। श्री जैन की मिल-जुल कर प्रशासनिक और तकनीकी कार्य कराने की क्षमता तथा विभिन्न देशों के व्यक्तियों के साथ करने की कुशलता सराहनीय और अनुकरणीय रही है।

7. श्री जैन ने णमोकारमंत्र पढ़कर यात्रियों में विश्वास और आस्था जागृत कर विमान को उड़ाने में सहयोग दिया परिणामतः उनके क्रिश्चियन इंजीनियर ने यह सराहनीय टिप्पणी की कि "मिस्टर जैन आपकी प्रेयर बहुत पावरफुल है, आपका गॉड बहुत स्ट्राँग है।"

8. रेगिस्तान में पेय जल खत्म हो जाने पर बन्दरों को नमक खिलाकर उनकी सहायता से पुराने सुखे वृक्ष को कोटर में पेय जल खोजने की कहानी बड़ी रोचक और अच्छी लगी। इसी प्रकार मेयर आपके बॉस रहे और मेयर की पुत्री आपकी नौकरानी। यह विचित्र संयोग है। अधिक आश्चर्यजनक यह है कि आपने अपनी नौकरानी की सहायता लेकर अपने मेयर का घर में स्वागत किया। यह प्रसन्नतादायक है कि आपके अफ्रीकन समुदाय में बड़ा या छोटा काम करने में किसी को कोई संकोच नहीं होता है। इसी मेयर ने श्री जैन को बाइबिल के आधार पर अपनी बहुत अच्छी स्पीच तैयार करने के उपलक्ष्य में इसाईयों से भी बेहतर इसाई घोषित कर दिया था। मुख्य पादरी ने भी इस उत्तम स्पीच की बहुत प्रशंसा की।

9. विदेशों में रह रहे भारतीयों के द्वारा पार्टियों में भारत के निन्दा पुराण का प्रवचन सदैव होता रहता था किन्तु श्री जैन ने इसे साहस पूर्वक बंद कराया और अपने देश को और अपने देश के प्रवासियों को विदेशों में की जा रही अनावश्यक निन्दा से बचाया। उन्होंने अपने राष्ट्र और अपनी संस्कृति के प्रति जन-जन का प्रेम जागृत किया। अफ्रीका में रहकर भारतीय धर्मो और सामाजिक कार्यक्रमों की विविधता में एकता के दर्शन कर सभी प्रवासियों को संगठित किया। सभी भारतीय पर्वो को मनाया। सभी प्रकार के शाकाहारी भोजन का आनन्द लिया। विदेशों में रहते हुए उन्होंने प्रायः सभी धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया। सभी भारतीय उत्सवों में उनकी सहभागिता रही। विविध आपदाओं से संघर्ष करते हुए वे पूर्णतः शाकाहारी बने रहे। अपने जीवन का पूरा आनन्द लेते रहे और सभी के बीच यही आनन्द प्रसन्नता पूर्वक बांटते रहे। श्री जैन द्वारा अपनी डायरी में किया गया भारत का संस्कृतिक चित्रण पठनीय और सराहनीय है।

10. कोमलचन्द्रजी ने अफ्रीका के क्षेत्र में जैन संस्कृति और जैन समाज से बहुत दूर इतने पिछड़े विभिन्न देशों में रहते हुए अपनी दोनों पुत्रियों-श्रीमती रानू और श्रीमती वीनू में भारतीय संस्कार विकसित करने में अपरिमित सफलता प्राप्त की। माता-पिता की अत्यधिक सेवा की। अपनी पत्नी डॉ. आशा, अपने भाईयों, बहनों तथा अपने पूरे परिवार को सभी प्रकार का अपार सहयोग प्रदान किया।

11. श्री कोमल जी ने अपनी समाज में फैले धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वास की रूढ़ियों से ऊपर उठकर जैन धर्म के व्यावहारिक सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात किया। जैन संस्कृति की विवेकपूर्ण परम्पराओं को अपने जीवन में उतारा। अफ्रीका में रहते हुए सभी धर्मों के बीच प्रभावी अंतर्संवाद स्थापित किया। अपरिचितों को सहज ही मित्र बना लेने की आपकी कला सराहनीय रही है। विदेशों में रहकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने और उनका सहयोग प्राप्त करने की आपकी अपार क्षमता को हम प्रणाम करते हैं। बड़ी से बड़ी क्षति होने पर तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और संतोष रखने की सराहनीय योग्ता की प्रशंसा करते हैं।

12. यह तथ्य उल्लेखनीय है कि जैन साहब ने वोत्स्वाना के राष्ट्रपति को जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांत- अहिंसा और अनेकांतवाद की आधारभूत जानकारी दी। राष्ट्रपति जी ने इन दोनों सिद्धांतों की व्यावहारिक उपयोगिता की सराहना की और श्री जैन को धन्यवाद दिया। पाश्चात्य जगत में अनेकों व्यक्ति केवल स्वास्थ्य के कारणों से ही शाकाहारी भोजन करते है। श्री जैन ने उन्हें स्वभाव, वाणी और मन से शाकाहारी होने का महत्त्व बताया। धार्मिक समूहों के प्रतीक चिन्हों के व्यावहारिक लाभ बताएं।

13. श्री कोमलचन्द्र जी ने अफ्रीकन गवर्मेन्ट और वहाँ के लोगों के बीच आपने बहुत अच्छा स्थान बना लिया। इसी के परिणाम स्वरूप पूरी तरह से वोत्स्वाना छोड़ने की जानकारी मिलने पर लोगों को आश्चर्य हुआ। सारे मित्रों ने, संस्थानों ने और यहाँ तक की भारतीय ऐम्बेसी के पदाधिकारियों ने बहुत बड़े स्तर पर पार्टियों का आयोजन किया और उनके प्रभावी प्रेरणा के स्रोत और आदर्श मित्र रहे श्री जैन को भारी मन से विदाई दी। हमें विश्वास है कि भावी पीढ़ियाँ उन्हें आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श पति और आदर्श पिता के रूप में सदैव स्मरण करती रहेंगी।

14. जबलपुर में 28 सितम्बर 2022 को आयोजित श्रद्धांजली सभा में सहस्राधिक संभ्रान्त एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने प्रार्थना की। उन्हें श्रद्धा पुष्प समर्पित किए। जबलपुर जैन समाज के प्रतिनिधियों ने उनके परिवार को जैन मंदिर के दर्शन कराए। नैनागिरि में विराजे भगवान् पार्श्वनाथ और आदर्श व्यक्तित्व के धनी श्री कोमलचन्द्र जी को सद् गति प्राप्त हो। हमें विश्वास है कि उनके वृहत परिवार के ही नहीं अपितु पूरे जैन समाज के युवक और युवतियाँ तथा इंजीनियर महाविद्यालयों के छात्र और छात्राएँ उनके पथ पर आगे बढ़ते हुए अपना चतुमुर्खी विकास करते रहेंगे।

कविता

सतत भक्ति करें

❊ निर्यापक श्रमणमुनि योगसागरजी ❊

अजितनाथ अजेय बलाड्य ये।
वह अनन्त भवोदधि सुखादिये।
प्रबल मोह पिशाय हरादिये।
कृत कृतार्थ हुआ नर जन्म ये॥

कनक वर्ण मनोहर रूप से।
उदित बाल दिवाकर से लसे॥
जगत में अति सुन्दर कौन हैं।
अमर लज्जित शीश झुका रहे॥

सकल वैभव ओ परिवार से .
तजदिया ममता त्रय योग से॥
सघन कानन में तप को लिये।
मन तरंग विलीन सदा हुये॥
नव मुखाकृति से स्वयमेव ही।
अभय का वरदान मिले सही॥
इसलिये तव पाद सरोज में।
सकल जीव तजे चिर बैर को।

नयन से उर में तुम आ बसे
हृदय मन्दिर उज्वल भाव से॥
सफल भक्त हुआ तव भक्ति से।
सतत् भक्ति करे तव नाम से॥

चलो देखें यात्रा

नवागढ़ (उखलद) अतिशय क्षेत्र

महत्त्व एवं दर्शन - क्षेत्र पर 3 मन्दिर है। आचार्य आर्यनन्दी महाराज समाधि स्थल निर्मित हैं। पहले यह क्षेत्र पूर्णा नदी पर उखलद मेंथा। बाढ़ में था। बाढ़ में मन्दिर ढह गया। बाद में नवीन क्षेत्र नवागढ़ में स्थापित किया गया है। जनश्रुति है कि नेमिनाथ के चरणों में पारसमणि थी। हैदराबाद निजाम ने लेना चाहा तो छिटक कर नदी में गिर गयी। मेले पर काफी श्रद्धालु इकट्ठे हो जाते हैं। मूलनायक भगवान् नेमिनाथ की 5 फीट की मनोज्ञ प्रतिमा है। परकोटे में अनेकों मन्दिर है। मानस्तम्भ है। मुख्य मन्दिर के बगल में नया त्रिमूर्ति मन्दिर बना है। मन्दिर 2 मंजिला है। मेला नेमिनाथ जन्मोत्सव श्रावण शुक्ल 6 को मनाया जाता है। गुरुकुल एवं अन्य कई संस्थायें हैं।

मार्गदर्शन :- हिंगोली-परभणी रोड़ पर परभणी से 10 किमी पहले नवागढ़ के लिये मोड़ है। मोड़ से नवागढ़ 8 किमी है। जिंतूर से परभणी होकर नवागढ़ 70 किमी है। स्टेशन मीरखेल 4 किमी तथा परभणी 16 किमी है। क्षेत्र पर सूचना करने पर साधन उपलब्ध है। परभणी से बसें उपलब्ध है। दिन में पहुँचना उचित है।

औरंगाबाद-200, नेमगिरी जिंतूर-74, आसेगांव-70, जिंतूर-70, नांदेड़-75, औंधा नागनाथ ज्योतिर्लिंग-50, पर्ली वैजनाथ प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ-80 किमी. है।

नाम एवं पता - श्री नेमिनाथ भगवान् दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, नवागढ़ ग्राम उखलद पो./पिंपरी (देशमुख) जि. परभणी पिन-431401 फोन -02452-280058, 291671, प्रबंधक- श्री अशोक सोनटक्के मो.937261742, 09850655758, सम्पर्क सूत्र- श्री माणकचन्द्र बिनायके, अध्यक्ष-मो.09422-92290 श्री माणिकराव तरहे परभणी, मो. 02452-221065, श्री धर्मचन्द मो.9422742751

सुविधायें - सुविधायुक्त 35 एवं सामान्य 20, एसी-1, कमरे एवं 3 हॉल है। भोजन नियमित सशुल्क है। विद्यालय है। गुरुकुल कार्यरत है।

महिलाओं का श्वेत प्रदर रोग का कारण व नियंत्रण उपाय

✻ जिनेन्द्रकुमार जैन, गौरीनगर, इन्दौर ✻

अस्वस्थ स्त्री की योनि के जरायु से एक प्रकार स्राव निकलता है जिसे प्रदर या ल्युकोरिया (Leucorrhoea) कहते हैं। जिसमें लियुको (Leco) शब्द से सफेद और ओरिया (Orrhoea) शब्द से स्राव यह प्रायः श्वेत होता है। इसे श्वेत प्रदर भी कहते हैं। यह रोग 10 वर्ष से 35 वर्ष तक अधिक होता है। यदि माता को यह रोग होता है सन्तान को भी होने की संभावना रहती है। इस रोग से प्रायः सभी महिला वर्ग कभी न कभी प्रभावित होती हैं। यह स्राव दूध की तरह परन्तु बाद में पीला, नीला, रक्त रं ग का कभी-कभी काला भी हो सकता है। यह शुरु में थोड़ा होता है, बूँद-बूँद आता है, जो समय पर सावधानी व इलाज न करने से थोड़ा निकलने की जगह ज्यादा निकलता है। कभी-कभी लगातार जारी रहता है, शुरु में सफ़ेद पतला होता है। किन्तु रोग बढ़ जाने पर गाढ़ा, पीला, नीला, लाल या काला होकर जलन व छीलने वाला हो जाता है। इस रोग को कपड़े में दाग लगने वाला भी कहा जाता है।

इस रोग से तल पेट में भार, चलने पर जांघों में भारीपन, सुस्ती, अरूचि, कब्ज, भूख न लगना, कमजोर होते जाना, सिर दर्द, कमर दर्द, पीठ व जांघ में दर्द, आँखों में चारों तरफ गोलाइ में पीले दाग पड़ जाते हैं व रोग पुराना होने पर हृदय रोग, श्वास रोग, मूर्च्छा इत्यादि हो सकते हैं जिससे कार्य क्षमता प्रभावित होती है।

इस रोग का प्रमुख कारण अधिक सर्दी लगने से, आरामदायक जीवन व्यतीत करना, ज्यादा भारी भोजन व मिर्च मसाले व गरम चीजें खाना, चोट लगना, चर्म रोग खुजली होना, मानसिक तनाव, अति सहवास, कृमि की उत्तेजना, साफ सफाई न रखना, कुछ दवाओं , एंटी बायोटिक्स और स्टेरॉयड का अधिक सेवन, यौन संचारित संक्रमण । बालिका अवस्था में खेलकूद आदि से धूलकणों आदि का गुप्त अंग में प्रवेश करना, तेजी से पेशाब लगना व पेशाब का त्वचा को छीलने वाला गुण लगना, ऋतु स्राव का अनियमित होना, हृदय का फेफड़े की किसी बीमारी में रक्त संचालन की क्रिया में व्यवधान होना, जरायु का अपनी जगह से हटना, रक्तहीनता, स्वास्थ्य की अवनति व कंठमाला, टियुबर क्लोसिस आदि बीमारियों का होना आदि।

सावधानियाँ - साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए, अधोवस्त्र को एंटीबायटिक घोल में डालकर साफ करना व सूती व नरम होना चाहिए, ठंडे पानी से नहाना लाभदायक है। किन्तु बुखार व ठंडी ऋतु में सामान्य गरम पानी का उपयोग करना, अश्लील किताबें, मोबाइल वीडियो देखना अनुचित हैं, सुरक्षित यौन संबंध रखना, भोजन में केला, गुड़, बहुत खट्टी चीजें , अदरक हींग, कपूर मिर्च, दही, अधिक नमक व मसालेदार भोजन नहीं करना। फास्ट फूड, ठंडे पेय अल्कोहल, चाय काफी व अन्य उत्तेजना पैदा करने वाले पदार्थों का उपयोग नहीं करना एवं रोग होने के कारणो का ध्यान रखकर सावधानी रखना चाहिए।

श्वेत प्रदर स्वाभाविक रूप से अम्लीय होते हैं जो संक्रमण को रोकने और योनि को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है। कई बार योनि का प्राकृतिक संतुलन कुछ कारणों की वजह से बाधित हो जाता है। तथा कुछ परिस्थितियों से संक्रमण व रोग का संकेत होने से आंतरिक रोग को अन्दर से बाहर फेंकने का दुष्परिणाम है। यह रोग नहीं, परन्तु रोग को फैलने से प्रकृति को यह मल द्वार के रूप में बाहर फेंकने को शरीर को बाधित होना पड़ रहा है। इस प्रदर को तेज दवाइयों से रोकने पर दुष्परिणाम प्रकट होने लगते हैं। जिससे ओवरी की सूजन, जरायु रोग, जरायु द्वार में झिल्ली बन जाने से ऋतु स्राव में दर्द होना और कभी-कभी इस झिल्ली से गर्भ धारण क्षमता प्रभावित हो जाती है, यकृत, पेट, फेफड़े व दिमाग के रोग हो सकते हैं ? बाल्यावस्था में यह रोग होने से मुंह पर दाग पड़ जाते हैं। शरीर बहुत कमजोर हो जाना। पेट में कमजोरी महसूस होना व हृदय जैसी धड़कन लगना।

नियंत्रण उपाय - साधारणतया इस रोग के लिए चिकित्सा की जरूरत नहीं रहती किन्तु इसे संकोच के कारण व छूआछूत लगने व कार्य की जिम्मेदारी से किसी को नहीं बताना ये समस्या बढ़ जाने से हानिकारक परिणाम पैदा हो जाते हैं! किसी को प्रथम संतान होने के बाद, स्थान परिवर्तन, दस्त, उल्टी के बाद आराम हो जाता है।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज व परहेज से आराम हो जाता है। आयुर्वेदिक, होम्योपैथी चिकित्सा बहुत प्रभावी है किन्तु रोग की तीव्रता बढ़ने पर एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में जाँच और चिकित्सा कराना उचित होता है। होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में प्रकृति गत चिकित्सा में रोगी के शारीरिक व मानसिक आधार पर बोरेक्स, सीपिया, पल्सेटिल, कैलकेरिया कार्व, एलूमिना, आर्से निक, चाइना, कालोफाइलम, कार्बोवेज, ग्रेफाइटिस, सेबाइना, फास्फोरस, सल्फर थूजा, नेट्रम म्यूर, साइलीशिया, हाइड्रेस्टिस, हेलोनियास, कैलिबाइक्रोम आदि औषधियों का उपयोग होता है। इलाज के पूर्व अनुभवी, कुशल चिकित्सक की सलाह से कराना चाहिए।

शरीर विधान के विकार से यह रोग होता है जो स्वतः शरीर को रोग मुक्त करके ठीक हो सकता है। हमें शुरुआत में परहेज सावधानी अपनाने व मन से भ्रान्ति हटाकर पुनः स्वस्थ हो सकते हैं।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जाये।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

आगम दर्शन

प्राकृत भक्ति

मूलाचार का ग्रन्थ एक निश्चित रूप रेखा के आधार पर हुआ है। अतः उसके सभी प्रकरण आपस में एक-दूसरे से सम्बद्ध है।

बट्टकेर आचार्य का यही एक ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें 12 अधिकार और 1252 गाथाएँ हैं। पहले मूलगुण अधिकार में पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पंच इन्द्रियों का निरोध, षट आवश्यक, केशलोंच, अचलकत्व, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधावन, स्थितिभोजन और एक बार भोजन, इस प्रकार मुनि के अट्ठाईस मूलगुणों का निरूपण किया है। दूसरा वृहत प्रत्याख्यान संस्तव-अधिकार में क्षपक को समस्त पापों का त्याग कर मृत्यु के समय में दर्शनाराधना आदि चार आराधनाओं में स्थिर रहने और क्षुधादि परीषहो को जीतकर निष्कषाय होने का कथन किया है। सम्यक् आचाराधिकार में दश प्रकार के आचारों का वर्णन है। आर्यिकाओं के लिए भी विशेष नियम वर्णित है। पंचाचाराधिकार में दर्शनाचार, ज्ञानाचार आदि पाँच आचारों और उनके प्रभेदों का विस्तार सहित वर्णन है।

पिण्ड शुद्धि-अधिकार में मनुष्यों के आहार-सम्बन्धी नियम, उसके दोष तथा उन दोषों के भेद-प्रभेदों का कथन आया है। सप्तम षडावश्यकाधिकार है। आठवें अनगार भावनाधिकार में लिंग, व्रत, वसति, विहार, भिक्षा, ज्ञान, शरीर, संस्कार त्याग, वाक्य, तप और ध्यान सम्बन्धी शुद्धियों के पालन पर जोर दिया है। नवम द्वादशानुप्रेक्षाधिकार है। इसमें बारह अनुप्रेक्षा के चिन्तन का वर्णन है। दशम समयसाराधिकार है। यह अधिकार बहुत विस्तृत है। ग्यारहवें पर्याप्ति अधिकार में षड् पर्याप्तियों का निरूपण है। बारहवें शीलगुणाधिकार में शोलोत्पत्ति का क्रम, पृथिव्यादि भेदों का विवेचन आदि है।

इस प्रकार इस महाग्रन्थ में मुनि के आचार का बहुत ही विस्तृत एवं सुन्दर वर्णन किया गया है। यतिधर्म को अवगत करने के लिए एक स्थान पर इसमें अधिक इससे अधिक सामग्री का मिलना दुष्कर है। भाषा और शैली की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ प्राचीन प्रतीत होता है। उत्तरवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने इसकी गाथाओं के उद्धरणपूर्वक उसकी प्रामाणिकता प्रकट की है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जनवरी 2023

नये वर्ष का पहला सूरज

प्रथम-

स्वर्णिम जहान दम दम दमकता
गोल गोल बिन्दू सा जगमग चमकता
कुहासे को चीर आया सज धज
देखो नये वर्ष का पहला सूरज

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़ (म.प्र.)

द्वितीय-

जोश में, उमंग में न बल किरण संग में,
सोने से दमकता पीत शुभ्र रंग में
स्वागत में खड़े जिसके बाज और गज
अभिनंदन नये वर्ष का पहला सूरज

अभिषेक जैन, इन्दौर(म.प्र.)

तृतीय-

हँसमुख फूल खिल गये अनेकों
खुशबू से झोली भर दी ढेरों ।
जल सरोवर में मुकलित नीरज
चमके नये वर्ष का पहला सूरज

अभिलाषा जैन, अहमदाबाद(गुजरात)

वर्ग पहेली क्र. 278
दिसम्बर 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्र जैन, इन्दौर (म.प्र)
द्वितीय : .श्रीमती दीपक जैन, शाहगढ़ (म.प्र)
तृतीय : श्रीमती पल्लवी जैन, सागर (म.प्र.)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ म् इ न् य् अ
2. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई भ अ व् र् ष् अ
3. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ न् इ अ् म् न् अ न् द् अ
4. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ प् र् अ व् ओ द्य्
5. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई उ स् आ प् श् व् र् अ

परिणाम :
जवरी2023: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

अज्ञान अंधकार

आपके देखते-देखते उस यमराज के द्वारा ले जाया हुआ समझें। क्योंकि अहंकारी लोग क्या नहीं करते हैं। जो कच्चे फल खाने में सतृष्ण है। वह भला पके फल क्यों छोड़ेगा।

राजते स्म तपोराज्ये दृढ़ धर्मजिनान्ति के।
तावदेव गृहे सन्तो न हेतुर्यावदीक्ष्यते ।।

ऐसा विचार कर सगर सचक्रवर्ती ने भगोल देश के राजा सिंह विक्रम की पुत्री विदर्भा के पुत्र भव्य भगीरथ के लिए राज्य सौंप दिया और आप दृढ़ धर्मा केवली के समीप दीक्षा धारण कर तपश्चरण रूपी राज्य में सुशोभित होने लगा सो ठीक ही है क्योंकि सज्जन पुरुष घर में तभी तक रहते हैं जब तक कि विस्मित होने का कोई कारण नहीं दिखाई देता।

इति देवः समभ्येत्य मायाभस्मावगुष्ठितान्।
कुमारान् बोधयामास मायापि सुह दां हिता ।।

ऐसा कहकर उसे देव ने मायामयी भस्म से अवगुण्ठित राजकुमारों को सचेत कर दिया सो ठीक ही है क्योंकि मित्रों की माया भी हित करनेवाली होती है।

सोऽपि सन्तुष्य सिद्धाथो देवो दिवमुपागमत्।
परार्थ साधेनं प्रायोऽयास्रसां परितुष्टये ।।

जिसका कार्य सिद्ध हो गया है ऐसा देव भी सन्तुष्ट होकर स्वर्ग चला गया सो ठीक ही है क्योंकि अन्य पुरुषों के कार्य सिद्ध करने से प्रायः महापुरुषों के संतोष होता है।

जन्तुरन्तकदन्तस्थो हन्त जीवितमीहते।
मोहान्तन्निर्मर्गमोपायं न चिन्तयति धिक् तमः ।।

प्रथम तो यह कि वह जीव यमराज के दाँतों के बीच में रहकर भी जीवित रहने की इच्छा करता है और मोहकर्म के उदय से उससे निकलने का उपाय नहीं सोचता इसलिए इस अज्ञानान्धकार को धिक्कार हो।

केरियर

आप धन कमायें चित्र कला से

यदि आप चित्रकला में आगे बढ़ना चाहते हैं तो पेन्टर बन सकते हैं। इसमें विभिन्न दृश्य, व्यक्तियों के चित्र, प्राकृतिक, भू-दृश्य, भित्ति-चित्र आदि को विभिन्न माध्यमों द्वारा विभिन्न सतहों पर चित्रित करना शामिल है।

कहाँ व कौन से पाठ्यक्रम

1. कॉलेज आफ आर्ट- बी.एफ.ए. – 4 वर्ष,

50% अंकों के साथ 12 वीं परीक्षा पास, कला विषय होने पर उसमें 45% अंक

2- एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा

बी.एम.ए. 4 वर्ष, योग्यता 12 वीं पास, डिप्लोमा कोर्स (1 वर्ष), प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण

एम.एफ.ए. 2 वर्ष, योग्यता फाइन आर्ट में बी.ए. की डिग्री या डिप्लोमा साक्षात्कार में उत्तीर्ण

3- विश्व भारती, शान्ति निकेतन (पश्चिम बंगाल)

पांच वर्षीय डिप्लोमा, योग्यता-10 वीं उत्तीर्ण व अभिरूचि परीक्षण। 2 वर्षीय एम.एफ.ए. योग्यता 55% अंकों के साथ, बी.एफ.ए. उत्तीर्ण। पोस्ट डिप्लोमा कोर्स 2 वर्षीय योग्यता 60% अंकों के साथ डिप्लोमा कोर्स उत्तीर्ण

कमर्शियल पेन्टर की योग्यता पर उसका वेतनमान निर्भर करता है। शिक्षक बनने के इच्छुक जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली से आर्ट एण्ड आर्ट एजुकेशन में बी.ए. (ऑनर्स) कर सकते हैं। 12 वीं के पश्चात् इसमें प्रवेश लिया जा सकता है। इस कोर्स के पश्चात् माध्यमिक स्कूलों में चित्रकला प्रशिक्षण का कार्य किया जा सकता है।

कविता

ओम् जगत् में सार

ओम् जगत् में सार रहा है, शक्तिमान इस सृष्टि का।
श्रद्धा से हम ध्यावे निर्मल, आधार रहेसम दृष्टि का॥
है रहस्य यह मंत्र मनोहर, जग में दिव्य खजाने का।
रिद्धि सिद्धि समृद्धि, देता, पथ उत्तम तो पाने का॥
ओमकार की ध्वनि निराली, जो मन से भ्रांति भगाती है।
निर्मल ब्रह्म सुखद बेला में, सुख सागर को भरती है॥
परख पारखी परख रहा है, ओम रतन के मोल को।
मूरख पत्थर समझ भगाता, कौवे को उस डाल से॥
ओमकार पारस है जग में, लोहे को स्वर्ण बना देता।

डॉ. निर्मल शास्त्री,

दुनिया भर की बातें

दिसम्बर 2022

■ 1 नवम्बर

- गुजरात विधानसभा चुनाव का मतदान 59% हुआ।

- प्रवेश साहिबसिंह वर्मा ने सरकारी बैठकों एवं कार्यक्रमों में माँसाहार पर रोक की माँग करते संसद में निजी विधेयक का प्रस्ताव किया।

- चीन के पूर्व राष्ट्रपति जियांग जेमिन के निधन पर भारत ने गहरा शोक व्यक्त किया। वे 96 वर्ष के थे।

■ 2 दिसम्बर

- पटना : बिहार के कुढनी में उपचुनाव की जनसभा में नीतिशकुमार पर कुर्सी फिंकी जमकर उत्पात हुआ।

- कैलिफोर्निया : गैंगस्टर गोल्डी बराड को पुलिस ने हिरासत में लिया ये गायक सिद्धू मूसावाला हत्याकांड का मास्टर माइंड है।

- अण्डमान-निकोबार 21 द्वीपों के नाम परमवीर चक्र प्राप्त वीर सैनिकों के नाम से बदले गये।

■ 3 दिसम्बर

-दिल्ली : उत्तर पूर्व दिल्ली में 2020 में हुए दंगे से जुड़े जेएनयू के पूर्व छात्र उमर खालिद को एजीएच कोर्ट ने बरी किया।

- नागपुर : सीताबड़ी स्थित सदन गोपाल अग्रवाल हाईस्कूल के 17 बच्चे चॉकलेट खाने से बीमार हुए।

- मेदनीपुर : (प. बंगाल) तृणमूल कांग्रेस नेता सहित तीन लोगों की मौत विस्फोट में मौत हुई।

■ 4 दिसम्बर

- इंडोनेशिया के जावा द्वीप का सोमेस ज्वालामुखी फटा 1.5 किमी तक राख फैला 2000 लोगों को बाहर निकाला।

- सतना (म.प्र.) एक कार्यक्रम के दौरान मंच टूटने से भाजपा सांसद गणेश सिंह सहित 6 लोग घायल हुए।

- चंडीगढ़ : तरणतारण जिले में पाक सीमा के निकट ड्रोन से तीन किलो हेरोइन बी.एस.एफ. ने बरामद की।

■ 5 दिसम्बर

- प्रसिद्ध लेख डॉमिनिक लैपियर का निधन हुआ। वे 91 वर्ष के थे।

- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री राजद के नेता लालू प्रसाद यादव की किडनी प्रत्यारोपित हुई।

- दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने एक अहं फैसले में कहा कि दवाएँ और अनाज का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन गम्भीर मुद्दा है।

■ 6 दिसम्बर

- बेलगाम : महाराष्ट्र के वाहनों पर कन्नड़ संगठन के कार्यकर्ताओं ने पथराव किया।

-तिरुअनंतपुर : पादरी किधर देखकर प्रार्थना करें इस मुद्दे को लेकर हिंसक विवाद हुआ 35 चर्च बंद हुए।

- जशपुरै : जेल की दीवार फाँद कर दो कैदी भागे।

■ 7 दिसम्बर

- मुस्लिम कट्टरपंथियों ने लाहौर के गुरुद्वारे पर ताला जड़ा।

- दिल्ली महानगर निगम की 250 वार्डों में से आप पार्टी ने 134 वार्ड जीते तथा भाजपा ने 104 वार्ड जीते कांग्रेस ने मात्र 9 वार्ड जीते।

- केरल में राज्यपाल को कुलाधिपति पद से हटाने हेतु विधानसभा में विधेयक पेश हुआ।

■ **8 दिसम्बर**

- गुजरात और हिमाचल विधानसभा चुनाव के परिणाम आये गुजरात की 185 सीटों में से भाजपा ने 156 सीटें जीती कांग्रेस ने 17 आप ने 5 अन्य ने 3 सीटें जीतीं। हिमाचल प्रदेश में 68 सीटों में से कांग्रेस ने 40 भाजपा ने 25 अन्य ने 3 सीटें जीती।

- समाजवादी पार्टी में शिवपाल यादव की प्रजातांत्रिक समाजवादी पार्टी का विलय हुआ।

- प्रतापगढ़ (उ.प्र.) : एक महिला ने खुद को दाव पर लगाया हारने पर दो बच्चों को छोड़कर मालिक की नौकरानी बन गई।

■ **9 दिसम्बर**

- राज्यसभा में किरोड़ीमल मीणा ने समान नागरिक संहिता विधेयक पेश किया बहुमत अनुमति मिली।

- फेडरल रिजर्व बैंक की प्रथम उपाध्यक्ष सुष्मिता शुक्ला बनी।

- नाशिक के सिन्नर के महोदरी घाटी में सड़क पर कार दुर्घटना में 5 विद्यार्थियों की मौत हुई।

■ **10 दिसम्बर**

- भारतीय ओलंपिक संघ की निर्विरोध अध्यक्ष पी.टी. उषा निर्वाचित हुई।

- हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पद हेतु सुखविंदर सुक्खू का नाम तय हुआ मुकेश अग्निहोत्री उप मुख्यमंत्री निर्वाचित हुए।

- तमिलनाडु में मैंडस तूफान ने तबाही मचायी 4 लोगों की मौत हुई।

■ **11 दिसम्बर**

- हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ विधायक दल के नेता सुखविंदर सुक्खू ने ली।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिन्दू हृदय बाला साहब ठाकरे समृद्धि महामार्ग सहित 11 परियोजनाओं का लोकार्पण किया।

- पूर्वी यूक्रेन का बखमुत शहर रूस ने हवाई हमले में नष्ट कर दिया।

■ **12 दिसम्बर**

- पवई (म.प्र.) मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री कांग्रेस नेता राजा पटेरिया ने विवादित बयान में प्रधानमंत्री की हत्या जरूरी बताई एफ.आई.आर. दर्ज हुआ।

- गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ भूपेन्द्र पटेल ने ली। साथ में 16 मंत्री भी रहे।

- सीमा सुरक्षाबल ने पाक के 3 मछुआरों को पकड़ा।

■ **13 दिसम्बर**

- ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेयराबोलसोनारों के समर्थकों ने पुलिस पर हमला किया।

- अरुणाचल प्रदेश के तवांग में 300 से अधिक चीनी सैनिकों को 17 हजार फीट ऊँची चोटी पर कब्जा करने के प्रयास में भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को खदेड़ा।

- राँची : जिला जजकुमार पवने ने गोला गोली कांड की आरोपी विधायक ममतादेवी को 5 साल की सजा सुनाई।

■ **14 दिसम्बर**

- चन्द्रपुर : जिले के 11000 कि.मी. में दबे सोना तांबा अयस्क की खोज अभियान शुरु हुआ।

- गाजा : इस्लामिक चरमपंथी संगठन हमास ने अपने वर्षगांठ पर शक्ति प्रदर्शन कर इजरायल विरोधी नारे लगाये।

- बिहार के छपरा जिले में जहरीली शराब पीने से 21 लोगों की मौत हुई।

■ **15 दिसम्बर**

- जयपुर : अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर स्पीकर और जूतों से 2 करोड़ का सोना जब्त किया।

- भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी के प्रत्यर्पण आदेश के खिलाफ ब्रिटेन में आखिरी

अपील खारिज हुई। नीरव को भारत लाने का रास्ता साफ हुआ।

-फ्रांस ने मोरक्को को 2 गोल से हराकर फाइनल मे प्रवेश किया। फीफा विश्वकप में फ्रांस लगातार दूसरी बार फाइनल खेलेगा।

■ **16 दिसम्बर**

- भारतीय सेना केम्प के बाहर राजौरी में आतंकी गोलीबारी में दो स्थानीय नागरिक सुरिंदर कुमार कमलकिशोर की मौत हुई।

- मलेशिया के सेलंगार प्रांत में भूस्खलन घटना में 4 बच्चों सहित 19 लोगों की मौत हुई। 20 लोग घायल हुए।

- नई दिल्ली : टीचर गीता देशवाल ने 5 वीं की बच्ची को पहली मंजिल से फेंका छात्रा घायल हुई।

■ **17 दिसम्बर**

- सुप्रीम कोर्ट ने बिलकिस बानों की पुनरीक्षण याचिका खारिज कर दी जिसमें गुजरात सरकार द्वारा माफ की गई सजा पर विचार करने के लिए गुहार लगाई।

- पुणे की फैक्ट्री में भीषण आग लगी दो लोग घायल हुए तथा मुम्बई के घाटकोपर की इमारत में आग लगने से 1की मौत हुई 2 महिला घायल हुई।

- कश्मीर में इस बार 10 टन केसर पैदा हुई।

■ **18 दिसम्बर**

- शिलांग : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मेघालय की राजधानी पहुँचे उन्होंने कहा डंके की चोट पर सड़के व रेल लाईन बनायी जायेगी।

- बिहार के बेगुसराय जिले में गंधुक में बना पुल उद्घाटन से पहले धाराशायी हो गया।

- तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस के 13 सदस्यों ने इस्तीफे दिये।

■ **19 दिसम्बर**

- जोधपुर : भारत और पाक युद्ध 1971 के हीरो भैरोंसिह का निधन हुआ वे 81 वर्ष के थे।

- शिमला : मुख्यमंत्री सुखविन्दर सुक्खू कोरोना पाजिटिव हुए। इसलिए विधानसभा सत्र स्थागित हुआ।

- ट्विटर यूजर्स बोले एलन मस्क सीईओ को पद छोड़ देना चाहिए।

■ **20 दिसम्बर**

- पाक सेना ने 33 तीलबानी आतंकियों को मार गिराया।

- गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष शंकर चौधरी चुने गये।

- कैलीफोर्निया में 6.8 तीव्रता का भूकम्प आया।

■ **21 दिसम्बर**

- केन्द्र सरकार ने जरूरी दवा की सूची में 119 दवाओं की कीमत तय की कैंसर, शुगर सहित कई मर्ज की दवाएँ 40% तक सस्ती हुई।

- एटा (उ.प्र.) थाना इन्चार्ज सहित 5 पुलिस कर्मियों को सीबीआई कोर्ट ने फर्जी मुठभेड़ (राजाराम कारीगर) मामले में उम्रकैद की सजा सुनाई।

- शेर बहादुर देउबा फिर से नेपाल के प्रधानमंत्री बने।

■ **22 दिसम्बर**

- म.प्र. में शिवराजसिंह चौहान के विरुद्ध आया अविश्वास ध्वनिमत से गिरा।

- तिहाड़ जेल के पूर्व महानिदेशक संदीप गोयल को केन्द्रिय मंत्रालय ने निलम्बित किया।

- पाक अधिकृत कश्मीर गिलगिट-बाल्टिस्तान में सरकार विरोधी प्रदर्शन तेज हुए।

■ **23 दिसम्बर**

- गंगटोक : सिक्किम के जेमा में सेना का ट्रक खाई में गिरा। 16 जवान शहीद हुए तथा 4 घायल हुए।

- पंजाब किंगस ने इंग्लैण्ड के खिलाड़ी सेम करन को 18.5 करोड़ में खरीदा।

- बिहार कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा का पेपर लीक हुआ।

■ **24 दिसम्बर**

- श्रीकृष्ण जन्मभूमि बनाम शाही मस्जिद विवाद में मथुरा के सिविल जज सी.जे. सर्वे का आदेश दिया।

- टी.वी. अभिनेत्री तनुषा शर्मा ने सेट पर ही आत्महत्या कर ली।

- पंजाब सहित 11 राज्य शीतलहर की चपेट में आये।

■ **25 दिसम्बर**

- अमेरिका में 60% लोग भीषण सर्दी से बेहाल हुए। तापमान -40 डिग्री लगभग रहा । 4000 फ्लाइट रद्द हुई।

- केन्द्रिय मंत्री कौशल किशोर ने बहन बेटियों से अपील कि कि वे शराबियों से शादी न करें।

- दक्षिण नेपाल में भारतीय नागरिक की गोली मार कर हत्या कर दी गई।

■ **26 दिसम्बर**

- सी.पी. एन माओं के प्रमुख पुष्प कमल दहल प्रचण्ड तीसरी बार नेपाल के प्रधानमंत्री बने।

- अमेरिका में बर्फीले तूफान से 13 लोगों की मौत हुई 48 राज्य सर्दी से बेहाल हुए। 12000 उड़ाने रद्द हुई। कनाड़ा के 4 लोग मरे।

- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को एम्स में भर्ती कराया गया।

■ **27 दिसम्बर**

- महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख की मुम्बई हाईकोर्ट ने आगे जमानत रोकने से इंकार किया।

- ताइवान ने चीन की धमकी के बाद अनिवार्य सैन्य सेवा एक साल के लिए बढ़ाई।

उ.प्र. के गोरखपुर जिले के मुंडेरा बाजार का नाम चौरी चौरा बना और देवरिया जिले के तलिया अफगान का तेलिया शुक्ला में बदला केन्द्र ने मंजूरी दी।

■ **28 दिसम्बर**

- जम्मू : ट्रक में छुपकर जा रहे 4 आतंकी मुठभेड़ में ढ़ेर हुए।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी बीमार माँ से मिलने अहमदाबाद पहुँचे।

- स्पेन में पायलट हड़ताल होने से 37 उड़ाने रद्द हुई।

■ **29 दिसम्बर**

- अरुणाचल में बर्फबारी 1 फुट से ज्यादा हुई।

- भारतीय वायुसेना ने ब्रह्मोस मिसाइल का सुखोई से सफल परीक्षण किया।

- कम्बोडिया के एक कैसिनो होटल में आग लगने से 19 लोग मरे तथा 60 लोग घायल हुए।

■ **30 दिसम्बर**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की माँ हीराबेन का निधन हुआ। वे 100 वर्ष की थी। माँ के अंतिम संस्कार के 22 घंटे बाद मोदी काम पर लौटे।

- भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर ऋषभ पंत सड़क दुर्घटना में गम्भीर घायल हुए।

- शिमला : अटल टनल में फंसे 400 वाहनों के पर्यटकों को बचाया गया।

■ **31 दिसम्बर**

- तमिलनाडु के नमक्कल जिले के एक मकान में पटाखे के विस्फोट में दुकान मालिक सहित तीन महिलाओं की मौत हुई। इतने ही लोग घायल हुए।

- आगरे में जन्में आलोक शर्मा को ब्रिटेन में नाइट हुड की उपाधि से सम्मानित किया गया।

- पूर्व कैथलिक इसाई पोप बेनेडिक्ट का निधन हुआ वे 95 वर्ष की उम्र में इस्तीफा देने वाले पहले पोप थे।

इसे भी जानिये

जाने पुरुस्कार की अहमियत

पुरस्कार सम्मान	पुरस्कार प्रदान करने वाले	पुरस्कार का विवरण	वर्ष
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार	सचूना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार	भारतीय फिल्मों में उच्च स्तरीय सौन्दर्य बोध, तकनीकी कुशलता तथा शिक्षाप्रद एवं सांस्कृतिक मूल्यों में वृद्धि के लिए	1954
फिल्म फेयर पुरस्कार	टाइम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप	पुरस्कार वर्ष में प्रदर्शित भारतीय फिल्मों की प्रत्येक विधा में उत्कृष्टता हेतु	1952
अपट्रॉन पुरस्कार	अपट्रॉन इण्डिया लि.	दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की प्रत्येक विधा में उत्कृष्टता हेतु	1986
चमेलीदेवी पुरस्कार	मीडिया फाउण्डेशन	पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की विशिष्ट उपलब्धि के लिए	
स्टेट्समैन ग्रामीण रिर्पोटिंग पुरस्कार	स्टेट्समैन समाचार पत्र	समाचार-पत्रों में ग्रामीण जीवन पर सर्वश्रेष्ठ रिर्पोटिंग के लिए	
फिरोज गांधी पुरस्कार	नेशनल प्रेस आफ इण्डिया	पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु	
गोपाल रत्न	भारत सरकार	देश में सबसे अधिक दूध देने वाली गायों एवं भैसों के स्वामी को	1956

दिशा बोध

प्रतिष्ठा

1. जो मनुष्य सदा अन्याय करता है और न्याय का कभी नाम भी नहीं लेता उसको भी तब प्रसन्नता होती है, जब कोई कहता है - ''देखो, यह आदमी किसी की चुगली नहीं खाता।''
2. सत्कर्म से विमुख हो जाना और कुकर्म करना निस्संदेह बुरा है, किन्तु मुख पर हँसकर बोलना और पीठ पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है।
3. झूठ और चुगली के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो तत्काल मर जाना अच्छा है, क्योंकि इस प्रकार मर जाने से शुभकर्म का फल मिलेगा।
4. पीठ पीछे किसी की निन्दा न करो, चाहे उसने तुम्हारे मुख पर ही तुम्हें गाली दी हो।
5. मुख से चाहे कोई कितनी ही धर्म-कर्म की बातें करे, पर उसकी चुगलखोर जिह्वा उसके हृदय की नीचता को प्रकट कर ही देती है।
6. यदि तुम दूसरे की चुगली करोगे, तो वह तुम्हारे दोषों को खोजकर उनमें से बुरे दोषों को प्रकट कर देगा। एवं गुणों को ढँकता रहेगा।
7. जो मधुर वचन बोलना और मित्रता करना नहीं जानते, वे चुगली करके फूट का बीज बोते हैं, और मित्रों को आपस में एक दूसरे से जुदा कर देते हैं।
8. जो लोग अपने मित्रों के दोषों को स्पष्ट रूप से सबके सामने कहते हैं, वे अपने बैरियों के दोषों को भला कैसे छोड़ेंगे ?
9. पृथ्वी अपनी छाती पर निन्दा करने वाले के पदाघात को धैर्य के साथ किस प्रकार सहन करती है ? क्या चुगलखोर के भार से अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए ही धर्म की ओर बार-बार झुकती है ?
10. यदि मनुष्य अपने दोषों की विवेचना उसी प्रकार करे, जिस प्रकार कि वह अपने बैरियों के दोषों की करता है; तो क्या उसे कभी कोई दोष स्पर्श कर सकेगा ?

कहानी

सामायिक बिगड़ गई

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

दोपहर के 12 बजे चकु थे। ठंड के दिनों में कुहरे का कहर सबको परेशान कर रहा था। शीत लहर अपने चरम पर थी। हड़कम्प मचाने वाली ठंड से सभी परेशान थे। सूर्य की किरणों को खोजने के लिए सभी ऊपर आसमान की ओर देखने लगते थे। पर सूरज तो दुर्लभ सा हो रहा था। वृक्ष के पत्रों पर सुबह से ही मोती सी चमकने वाली ओस भी, ठंडक फैलाने में कहीं से पीछे नहीं थी। हर बादलों से बारिश हो का अंदेशा सा जग रहा था।

सिद्धार्थ अपने तख्त पर चिटाई बिछा चुका था। अपने सामने बाजोंट भी रख चुका था। घड़ी की तरफ नजर डाली तो अभी ग्यारह बजकर पचास मिनट हुए थे। 10 मिनट शेष थे, सिद्धार्थ ने अपनी डायरी पलटना प्रारम्भ किया। बस 1 मिनट बाद सिद्धार्थ सामायिक पर बैठने ही वाला था कि अचानक घंटी बजी, सिद्धार्थ ने आवाज दी कौन ! कौन !!! सर।

सर, मैं पोस्टमेन, आपकी डाक।

सिद्धार्थ ने दरवाजा खोला तो डाकिया ने एक खाकी रंग का लिफाफा सिद्धार्थ के हाथ में थमा दिया। सिद्धार्थ ने घड़ी पर नजर डाली तो अभी 12 बजने में 5 मिनट शेष थे। उसने लिफाफा खोल लिया तो देखा एक 5-6 पृष्ठ का टाइपिंग किया हुआ खुला पत्र के शीर्षक को पढ़ा तो लगा कि कोई खुरापात से भरा हुआ पत्र हैं। पत्र को पढ़ना प्रारम्भ किया और पढ़ता ही गया। अविरल रूप से पत्र को पलट कर देखा। अनावरत रूप से पूरा पत्र पढ़ने के बाद सिद्धार्थ नेघड़ी की तरफ देखा, बारह बजकर पन्द्रह मिनट हो चुके थे। सिद्धार्थ ने फिर सामायिक करने के लिए अपनी चटाई बिछाई, परन्तु इसी बीच में उसकी पत्नी सुशीला आ गई। सुशीला ने पूछा, क्या बात है कि आज तुम कुछ व्याकुल से नजर आ रहे हो। सिद्धार्थ ने कहा हाँ आज मेरे लिए कुछ ऐसा लग रहा है कि कुछ अनावश्यक तौर पर हो रहा है। क्या हो रहा है ? क्या हो रहा मुझे भी तो बताइए। हो ये रहा है कि सच्चे सीधे साधुओं के लिए आज कुछ लोग गुमनाम पत्र लिख कर के बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। उसका एक पत्र मेरे पास भी भेजा गया है। सुशीला ने कहा, कि क्या आप मुझे बता सकते हैं । सिद्धार्थ ने वह पत्र उठा करके सुशीला के हाथ में दे दिया, सुशीला ने वह पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया। सुशीला पत्र जोर से पढ़ने लगी। तो सिद्धार्थ ने कहा अभी इस पत्र को जोर से पढ़ने की जरूरत नहीं है। क्योंकि इसमें जो लिखा है वह इतना गलत लिखा कि वह जिसे हम कह नहीं सकते। मुझे तो बात याद आ रही है। जब सन् 1976 में कटनी में मुनिश्री समयसागरजी और आचार्य श्री विद्यासागरजी का स्वास्थ्य खराब था। उस समय आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने मच्छरदानी भी स्वीकार नहीं किया था और समयसागर जी को छोड़कर के वह विहार कर गये थे, जब विहार कर गये और कुण्डलपुर वो पहुँच गये, और कुण्डलपुर पहुँचने के बाद उन्हों ने यह कहा कि पण्डितजी जैसा भी हो आप कर लेना। मेरे पिताजी ने उस समय उनके लिए संभाला लेकिन स्थिति उनकी बिगड़ती चली गई, बुखार 106 से रोज ज्यादा आता था। तो आचार्य श्री

विद्यासागरजी के पास पहुँचे, तो आचार्यश्री विद्यासागरजी ने कहा कि उनकी आप ही पण्डितजी समाधि करा दीजिये। पण्डित जी ने कहा महाराज ऐसे समाधि नहीं होती है। समाधि का एक काल अलग होता है। ऐसे निस्पृह साधु के ऊपर आज गुमनाम पत्र लिखकर कोई आरोप लगा रहा है कि वे भाई के मोह में पढ़ चुके हैं।

तो आप ही बताइए कि इस पत्र में और क्या लिखा है। लिखी तो बहुत सारी अनावश्यक बाते हैं। जिन बातों को हम सुन और समझ कर के यह कह सकते हैं कि कोई भी अनपढ़ व्यक्ति भी यह कह सकता है कि जो भी आचार्यश्री विद्यासागरजी की संगति में आया है वह कह देगा कि आचार्य विद्यासागरजी एक सिपाही और निर्मोही संत है। उन्हें भाईयों के मोह के सम्बन्ध में लिखना बहुत गलत है। सुशीला ने अपनी भौंह सुकोड़ते हुए कहा कि - आप इन गुमनाम पत्रों को पढ़ते ही क्यों है ? क्योंकि गुमनाम पत्र तो वो ही लिखता है, जो व्यक्ति झूठ का सहारा लेता है। आप तो तत्त्वार्थ सूत्र पढ़े हुए हैं। आपने तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर के यह बात समझी होगी कि तत्त्वार्थ सूत्र में लिखा है क्रोध, लोभ, भीरुत्व, हास्य।

क्रोध, लोभ, भीरुत्व, डर, हास्य प्रत्याख्यान अनुवीचि भाषणं च पंच।

हास्य प्रत्याख्यान अनुवीचि भाषण च पंच का अर्थ यह होता है कि जब भी हम यह बात सोचेंगे कि क्रोध के साथ में, लोभ के साथ में, भय के साथ में बोली गई बात हमेशा झूठी होती है और यह बात लोग प्रायः बोलते चले आ रहे हैं। क्योंकि जिन्होंने भी अपना नाम स्वयं का ना लिखकर के किसी पर आरोपात्मक पत्र लिखा है वह निश्चित तौर पर झूठ बोल रहा है। सुशीला यह बात तुम सही कह रही हो, मैं भी जानता हूँ कि यह बात जो कहते हैं कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज को अपनी इस बात का पता जरूर लगाना चाहिए। कि ये पत्र लिखने वाला कौन होगा और कहाँ होगा। जब यह बात दोनों के बीच में चल रही थी कि तभी उसी समय एक मोबाइल पर घंटी घनघनाई। घंटी घनघनाने के बाद सिद्धार्थ ने मोबाइल उठाया और पूछा - कौन बोल रहा है। तो उन्होंने कहा - भैया, मैं प्रदीप बोल रहा हूँ।

- अच्छा प्रदीपजी बताइए, अरे रे रे प्रदीपजी आप, आप मुंबई से बोल रहे हैं।

- हाँ, हाँ, मैं मुम्बई से बोल रहा हूँ, अरे यार मेरे पास एक पत्र आया है।

अरे, एक पत्र मेरे पास भी आया है। अरे ये पत्र एक गुमनाम पत्र है। ये पत्र हम सिद्धार्थ जी आपसे पूछना ये चाहते हैं कि ये पत्र डाल कौन रहा है।

आपके में सील लगी है कहीं।

हाँ, मेरे पत्र में सील लगी हैं।

कहाँ कि

मेरे पत्र में सागर की सील लगी हैं।

अरे मेरे पत्र में तो सील ही नहीं लगी है। हाँ तो ये अब मेरे समझ मेंआ गया सागर से डाला।

अच्छा - ये लगता हो कोई धुरंधर खल है। सिद्धार्थ ने हँस दिया। सिद्धार्थ की हँसी के बाद, सिद्धार्थ की पत्नी ने भी कहा, आप हँस रहे हैं। हाँ हँस रहा हूँ। मैं समझ गया हूँ कि ये खल कौन होगा। क्योंकि हमेशा घर के कुनओं से ही फूट होती है। ये किसी भी आचार्य श्री जी के संघस्थ त्यागी व्रती का भी इसमें पूरा हाथ है। जो ये पत्र लिखवाने का काम कर रहा हैं। उनके लिए भी सारी जानकारियां अवश्य होगी। सुशीला ने कहा-यह बात तुम सही कह रहे हो। मैंने भी पत्र पलटा, पत्र पलटने के बाद मैंने भी ये देखा कि वास्तव में पत्र निश्चित तौर पर किसी घर के भेदी के द्वारा ही होगा। देखों सुशीला आप एक बात समझ लो, बिना घर के भेदी के कोई भी पत्र आ नहीं सकता हैं। तो हमें यह देखना है कि ये पत्र कहाँ से आ रहा है। मुझे पता लगाना जरूरी हैं। तो हमें ये पत्र देखना आवश्यक हैं। चलो कोई बात नहीं। हम सब लोग मिलकर के इसका पता लगाने की कोशिश करेंगे। लेकिन हम पता लगाने के पहले एक बात जरुर समझे, आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी को आपके पिताजी ने खूब अच्छे से परीक्षा लेकर के अपनाया हैं। हाँ सुशीला, यह बात सही कह रहीहो तुम, उनके ऊपर मैं कभी शंका संदेह नहीं कर सकता क्योंकि

आचार्य विद्यासागरजी जैसे संत जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपना जीवन स्वस्थ रखा है और हर तरीके से उन्होंने अपने जीवन को समझने की कोशिश की है। मैं यह कह सकता हूँ। ऐसे परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराजजी के साथ में जो भी रहता है और जो भी रहना चाहता है वह उनके साथ यदि रहकर के भी एक गुरु द्रोह करता है तो इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता हैं। मैं भी निश्चित कर चुका हूँ कि कई बार क्या होता है कि जब तक कुछ मिलता रहता है तो लोग जय-जयकार करते रहते हैं। कुछ नहीं मिलता हैं तो हा-हा कर करते हैं। अहम और स्वार्थ की जब तक सुशीला पुष्टि होती रहती हैं तब तक लोग जय जयकार करते हैं। अहम् स्वार्थ की पुष्टि नहीं होती हैं तो हा-हा कार करते हैं। और मुनि श्री योगसागर जी या समयसागरजी के सम्बन्ध में जो लिखा हैं यह तो पूर्णतः मुझे लगता है सफेद झूठ हैं। क्योंकि लिखने वाला जो नैतिकता उसके अंदर होती है वह सुशीला वह अपनी जिम्मेदारी से लिखता है। जैसे मेरे पिताजी इतने बड़े विद्वान थे और वो कभी किसी के बारे में लिखते थे तो वह अपना नाम नीचे अवश्य लिखते थे। एक बार मैंने उनसे कहा, पिताजी ऐसा करे, हम लिख देते हैं। और आप जोहै ना इस पर दस्तखत कर देना, पिताजी ने कहा- नहीं, बेटा मैं कभी भी ऐसा काम नहीं करता हूँ। क्यूँ नहीं करता हूँ क्योंकि मैं कोई भी बात झूठ फरेब नहीं बोलता हूँ। मैं क्या करता हूँ, मैं जो भी लिखता हूँ अपनी जिम्मेदारी के साथ लिखता हूँ और तुमसे भी यह बात कह देता हूँ कि कभी भी किसी को कोई बात लिखो, जिम्मेदारी के साथ लिखो। कि हमें सत्यवादी बनना चाहिए। सत्यवादी वही कहलाता हैं जो अपनी बात जिम्मेदारी के साथ लिखता हैं। और जो जिम्मेदारी के साथ लिखता हैं। आगम की बात लिखने वाला भी यदि नाम छुपाकर के साथ लिखता है तो वह भी झूठ का पात्र बनता है। जिनवाणी की बात लिखने वाला भी यदि नाम छुपाता है तो भी झूठ का पात्र बनता है। मैंने उनसे कहा, पिताजी पुरुषार्थसिद्धि उपाय ग्रन्थ में तो किसी आचार्य श्री, लेखक का नाम तो लिखा नहीं हैं। तो लेखक का नाम नहीं लिखा तो पिताजी बोले बेटा, ये बात एक अलग है कि लेखक का नाम नहीं लिखा है। लेकिन उन्होंने ये बात है कि पूरी बात लिखी हैं। वह बात है जो सत्य हैं। वर्णों से वाक्य बनते हैं। वाक्यों से परिच्छेद बनते हैं। और परिच्छेद से ग्रन्थ बनता है। अध्याय से ग्रन्थ बनता हैं। इसलिए उन्होंने अपने में अहंकार न आ जाए इसीलिए नाम छुपाया। लेकिन हम जब समाज के बीच में जब कोई बात लिखते हैं तो उसमें नाम अवश्य लिखना चाहिए। उस दिन से मैंने कभी भी कोई भी लेखन किया तो उसके लिए तारीख और उसके नीचे नाम अवश्य लिखा है। सुशीला तुम एक बात और समझ लो, जब ये दोनों बीच चर्चा हो रही थी तभी बादल गरजने लगे। बादल गरजने के साथ-साथ बूँदे भी पड़ने लगी। सुशीला ने कहा, मैं अभी आती हूँ। क्योंकि बादल गरज रहे हैं। और पानी गिर रहा है मेरे कपड़े ऊपर डले हुए हैं। मैं कपड़े उठाकर के आती हूँ। और हम बैठकर के इस पर चर्चा करेंगे। सुशीला कपड़ा उठाने के लिए गई और सिद्धार्थ ने अपने पूरे के पूरे पत्र को एक बार फिर और पढ़ा देखा, जब वह कपड़ा उठाकर के पूरे नीचे लेकर के सुशीला आ रही थी कि इतने में साड़ी उसकी फंसी और सुशीला गिरते-गिरते बची। सिद्धार्थ ने उसे पकड़कर के संभाल लिया। कहाँ देखो, जल्दबाजी में कोई काम नहीं करना चाहिए। सुशीला ने कहा, जल्दबाजी नहीं वो क्या है कि मुझे फिर से आपसे बात करना है। सुशीला ने कहा, अब आप एक बात बताइये पत्र के बारे में ये जो जितनी भी टाइपिंग हुई है। इस टाइपिंग को देखकर के इसमें जो मार्जिन छोड़ा गया है इसे देखकर मैं यह कह सकता हूँ कि ये पत्र किसी मुंशी के यहाँ टाइपिंग हुआ है। और कहीं से टाइपिंग हुआ है, कहीं डाला गया है। ये बड़ी खुरापात है। पर इसकी एक बात और मैंने समझ ली है। इसकी पूरी की पूरी सामग्री देने वाला व्यक्ति कोई अच्छा खासा संघ से जुड़ा हुआ है। और वो संघ से जुड़ा होने के कारण से वह जो है ना अपना नाम छिपाकर के यह बात कह देना चाहता है। झूठ फरेब बोलकर

के सच्चे साधु को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है। सुशीला की बात समझ कर के कहा गया कि, सुशीला की पूरी बात सुनकर के सिद्धार्थ ने कहा देखो सुशीला एक सामाजिक चिंतन होता है। सामाजिक जिम्मेदारी होती है और सामाजिक जिम्मेदारी प्रायः लोग जब न निभाये, गुरु के प्रति भी जिम्मेदारी होती है। और जो गुरु के प्रति जिम्मेदारी नहीं निभा पाता है वह सच्चा शिष्य नहीं कहलाता। पर एक बात मुझे याद आ रही है कि जिनके पास जैसे एक आचार्य हुए हैं। वो आचार्य भद्रबाहु थे और उनके शिष्य स्थूलभद्र थे। और स्थूलभद्र जो शिष्य थे वो स्थूलभद्र के लिए रूपमाया का शास्त्र पढ़ा रहे थे। द्वादशांग वाणी का स्थूलभद्र एक गुफा में बैठे हुए थे। उनके परिजन उनसे मिलने आये। परिजनों ने मिलकर के देखा कि एक गुफा में स्थूलभद्र तो नहीं है पर एक शेर बैठा हुआ हैं। उन्होंने आकर के आचार्य भद्रबाहु से कहा कि स्वामीजी हम जहाँ स्थूलभद्र आपने बताया था वहाँ स्थूलभद्र को देखने गये। स्थूलभद्र तो नहीं थे पर वहाँ एक शेर बैठा था। आचार्य भद्रबाहु समझ गये कि ये स्थूलभद्र ने अपनी विद्या का दुरुपयोग कर लिया है। उन्होंने बुलाकर के स्थूलभद्र आज से तुम्हारी शिक्षा की पद्धति बंद की जाती है। तो स्थूलभद्र कुछ चिंतित से, भद्रबाहु स्वामी ने कहा, चिढ़ने की आवश्यकता नहीं हैं। यह विद्या योग्य पात्र को ही दी जाती है। यह जो माया चूलिका, रूपगत चूलिका, मायागत चूलिका हम तुम्हें पढ़ा रहे हैं, ये चूलिका उन्हें ही पढ़ाई जा सकती हैं। जो इसका सदउपयोग करे लेकिन तुमने इसका सदउपयोग न करके दुरुपयोग किया। इसलिए ये हम तुम्हें नहीं पढ़ा सकते हैं। यह सुनकर के रुष्ट हुए स्थूलभद्र श्वेताम्बर पंथ की ओर बढ़ गये इसी तरीके से बहुत सारे लोग आचार्यश्री के पास दीक्षा माँगने आते हैं। जब उन्हें उनकी योग्यता न देखकर के आचार्य श्री दीक्षा नहीं देते हैं। तो वो ऐसी जगह भी जाकर दीक्षा लेते हैं। जहाँ पर चारित्र चिन्तन नहीं होता। सुशीला, मैं आपको एक जानकारी और दे देना चाहता हूँ। कि कुछ ऐसे भी शिष्य बनने के लिये थे। और कुछ शिष्य तो किसी प्रकार से कहीं से कहीं हो गये, क्योंकि महत्वकांक्षा जहाँ पूर्ण नहीं होती है वहाँ कोई भी शिष्य नहीं रह पाता है। इसी तरीके से ये जो कुछ भी बात लिखी हैं। यह मैं सत्य की कोटि में नहीं मानता हूँ। इसे कूटलेखकरण के नाम पर ही मैं मान रहा हूँ। सुशीला ने कहा, देखों में तुम्हारी बात से पूर्णरूपेण सहमत हूँ। और मैं यह कह सकती हूँ कि तुमने जो कुछ भी सोचा है बिल्कुल सही सोचा हैं। और अब हम यह ये कह सकते हैं आपको और हमें मिलकर के यह बात तय करना है ऐसे पत्रों को क्यों न पढ़ने के पहले ही कूढ़ादान में डाल दिया जाये। क्योंकि ये पढ़ने के नहीं, इनके पढ़ने से हमारे आर्त रोद्र ध्यान अवश्य होते हैं। लेकिन एक बात मैं बता दूँ सुशीला देखो प्रदीप ने भी पढ़ा, हमने भी पढ़ा। मैं अकेला दोषी तो नहीं हूँ।

नहीं, मैं दोष नहीं बता रही हूँ। आप एक बात समझ लीजिये मैं आपको दोषी नहीं कह रही हूँ परन्तु मैं आपसे इतना अवश्य कह देना चाहती हूँ। आगे जो ऐसे जिनमें सील न लगी हो, प्रेषक का नाम न लिखा हो और इसके उपरान्त जो अपने लिए किसी प्रकार से ऐसे लिफाफा ही नहीं खोलना चाहिए। जिसमें प्रेषक लिखा हो वही लिफाफा खोलना चाहिए। यह बात तुमने बिल्कुल सही की सुशीला।

मैं एक बात और कह देना चाहती हूँ कि आप पत्र पढ़ने की हमेशा जल्दबाजी करते हैं। पत्र हमेशा आता है तो उसे कुछ समय रखे रहने दो, बाद में खोलो, पढ़ो। क्योंकि पत्र कहीं जाने वाला तो है नहीं। उसमें तो यह बात भी हो सकती हैं कि कहीं कोई आपके अन्दर ऐसी बात आ जाये कि जो आपके लिए भोजन के समय जाना है और आपने पत्र खोल लिया और उसमें कुछ अशुभ समाचार हुए तो भोजन बिगड़ जाएगा। इसी तरीके से आप अगर समाधि काल में अपने आपको समझना चाहिए और समाधि अपनी बिगाड़ना नहीं चाहिए। और मैं एक बात कह देना चाहता हूँ कि आचार्य विद्यासागर जी को सम्बोधन देने वाला कोई महामूर्ख व्यक्ति हैं। जो व्यक्ति अपने आप में समझ नहीं पा रहा है कि कैसा क्या करना चाहिए। सचमुच में ऐसे महामूर्ख व्यक्ति को जो सूरज को दीपक दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। सुशीला ने कहा- मैं इस पत्र को पूरा देख चुकी हूँ कि इसके आखरी में क्या लिखा है, कहाँ-कहाँ कि समाजों के नाम लिखे हैं। झारखंड के, उत्तरप्रदेश के, मध्यप्रदेश के और न

जाने सकल दिगम्बर जैन समाज लिख दिया। भारत देश की, इन लोगों को यह पता है कि पत्र लिखने वाला व्यक्ति- इसका लिफाफा भी तो देखिए पहले, लिफाफा पर नजर डालता है तो सील कहीं की भी नहीं लगी थी फिर यह लिफाफा बिना सील के आ कैसे गया।

सिद्धार्थ ने एक फोन घुमाया , पोस्टमास्टर के लिए। पोस्टमास्टर हैलो- पोस्टमास्टर से कहा - हैलो- हाँ, पोस्टमास्टरजी बोल रहे हैं। हाँ मैं बोल रहा हूँ।

ये हमारे पास एक लिफाफा आया है, इस पर आप की तो सील लगी है लेकिन जहाँ से ये डाला गया है वहाँ की सील क्यों नहीं लगी।

अरे भाई में इस चीज में आपको कोई जानकारी नहीं दे सकूँगा । हमारे पास आया, आपका पता लिखा था। हमने आप तक पहुँचा दिया। मोबाइल रख कर के सिद्धार्थ बोला, ठीक है पर अब इस पत्र की जाँच तो की जाए। इस पत्र की जाँच करने के लिए सिद्धार्थ ने पुनः अपना एक पत्र को उल्टा पुल्टा, लिफाफा को उल्टा पुलटा और देखा बोला, सुशीला ने कहा दोखा इधर-उधर की बातें करने से कोई फायदा नही हैं। अपने गुरुदेव है, और अपने गुरुदेव में हमें कभी, कोई भी बात उनके प्रति शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि ऐसे निस्पृही गुरुदेव मिलना ही कठिन है और उन पर जो ये गुप्त पत्र लिख रहे हैं, गुमनाम पत्र लिख रहे हैं। ये व्यक्ति रहोभ्याख्यान कूटलेखकरण दोनों दोषों में और, दोनों दोषों से लिप्त है। और ये सत्यवादी नहीं हो सकते हैं । ये निश्चत तौर पर कहीं न कहीं महत्वकांक्षाओं की पूर्ति न होने के कारण से ये पत्र लिखने वाला होगा। ठीक कह रही हो सुशीला तुम, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है कि ये पत्र लिखने वाला निश्चित तौर पर कोई न कोई महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। इसकी महत्वाकांक्षा आचार्य श्री के द्वारा पूर्ण नहीं हुई तो उस व्यक्ति ने यह पत्र लिखना शुरु कर दिया। अब कितने पत्र लिखेगा ये पता नहीं हैं। उसने लिखा है खुला पत्र सातवां। तो ये सातवां पत्र लिख चुका होगा। लेकिन ऐसे व्यक्ति का अब क्या किया जाए। मेरा तो विचार ऐसा बन रहा है। आप अगर मेरी बातों से सहमत हो तो मान लीजिये कोई समाधि का समाचार आता है या कोई मरण मृत्यु का समाचार आता है। तो ऐसे समय में आपको भोजन की स्थिति बिगड़ जायेगी। बिल्कुल सही कह रही हो सुशीला। लेकिन अब में एक प्रतिज्ञा। मेरी तो आज तुम भोजन की बात कर रही हो, मेरा तो चिन्तन ही बिगड़ गया। ये तो सोचने लगा हूँ कि कैसे कैसे नराधम- अधम लोग होते हैं जो इस तरीके से सच्चे महाव्रती के ऊपर लांछन गुप्त रूप से लगाते हैं गुमनाम रूप से लगाते हैं। तब सुशीला ने कहा- देखो इस पर तुम ज्यादा अफसोस मत करो। क्योंकि संसार में बहुत प्रकार के लोग हैं। बहुत प्रकार की बात करते हैं। इन लोगों की बात सुनकर के हम अपना धर्म-ध्यान बिगाड़ सकते हैं। हमें अपना धर्म ध्यान बचाना है तो लोगों की बात ही नहीं सुनना चाहिए और न पढ़ना चाहिए। ये लोग जो होते हैं न जिनके अन्दर साहस नहीं हैं, वीरता नहीं हैं। सच्चे इन्सान तो वह होते हैं जो दूसरों के कल्याण की हित की बात करते हैं वो तो वही होते हैं जो सामने बोलते हैं। स्थितिकरण गुमनाम रूप से नहीं हो सकता। गुमनाम रूप से जिन्होंने स्थितिकरण की बात सोची, स्थितिकरण तो करायगा नहीं तो क्या कर रहा है। स्थितिकरण न करके उसके दोषों का सब जगह प्रसार कर रहा है। और स्थितिकरण की बात इस पत्र में लिखी है। आपने भी पढ़ ली। और कहना क्या चाहता है। आचार्य विद्यासागरजी मोह से मुक्त हो जाये। पहले खुद तो मोह से मुक्त हो जाये, बाद में दूसरों के मोह से मुक्त होने की बात करना। हम यह कह सकते हैं कि जो स्वयं मोह से मुक्त नहीं हुए, कपट स्वयं कर रहा है वह छल कपट करने वाला व्यक्ति कभी दूसरे के कल्याण की बात नहीं कर सकता और छली कपटी व्यक्ति ही गुमनाम पत्र लिखते हैं। इसलिए आप जो है न इस चीज पर ज्यादा चिंतन न करें। समय बहुत ज्यादा हो गया है अब एक काम कर ले 1 बजने वाला है सामायिक कर ले। अरे अब सामायिक क्या करूं सुशीला ? सामायिक ही बिगड़ गई जो मेरे गुरु पर लांछन लगाये गये हैं उनकी सुनकर के अब में क्या सामायिक करूं। परन्तु झूठे लांछन को लांछन नहीं माना जाता। एक बात और आप सुन लेना इसलिए आप सामायिक करें। मैं घर का काम करती हूँ। सुशीला घर का काम करने चली जाती है और सिद्धार्थ सामायिक पर बैठ जाता है।

जैनधर्म में वर्ण-व्यवस्था कर्म से ही है, जन्म से नहीं

❊ वैद्य पं. इन्द्रजीत जैन आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री ❊

तु शूद्रों की छाया पड़ने पर भी वैदिक पंडित स्नान करते थे। उस समय भगवान् महावीर ने उन सभी वर्ग के प्राणियों को अपने धर्म में दीक्षित किया और उनकी आत्मा का कल्याण किया था। इसीलिये भगवान महावीर के समवशरण (धर्मसभा) में सभी तरह के मनुष्य, पशु-पक्षी, देव-दानव जाकर जैन धर्म धारण करते और अपनी आत्मा का कल्याण करते थे। भगवान् वीर ने सर्व जीवों में और खासकर मनुष्य वर्ग में साम्यवाद पूर्ण रूप से स्थापित किया और जन्म से ही किसी को भी ऊँच-नीच नहीं माना। केवल जो ऊँच कर्म (हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील परिग्रह इन पापों के त्यागरूप) आचार-विचार पाले, उसे ऊँचा (उच्चवर्णी) घोषित किया और जो उक्त प्रकार के उच्च आचार-विचार न पाले उसे नीच घोषित किया। जन्म से ऊँच-नीच का फतवा किसी को नहीं दिया। आज तमाम जैनशास्त्र इस बात को बतलाते हैं कि वर्ण-व्यवस्था कर्म से हैं, जन्म से नहीं।

आइये पाठक! जैनधर्मानुसार वर्ण, व्यवस्था के आदि स्रोत पर नजर डालें। जैनधर्मानुसार इस पृथ्वी पर दो समय विभाग माने गये हैं, एक भोग भूमिका समय और दूसरा कर्मभूमिका समय। भोगभूमि के समय सभी मानव व तिर्यंच कल्पवृक्ष जन्य सभी तरह के सुखों का उपभोग करते हैं और व्यापारादि बाह्य परिश्रम की वहां कोई जरूरत नहीं होती है। भोगभूमि के सभी मनुष्य समान होते और भोगभूमिया कहलाते हैं। कर्मभूमि के समय में मनुष्यों को अपने कर्म- पुरुषार्थ (असि, मसि,कृषि , वाणिज्य, सेवा, शिल्प) द्वारा अर्थात् शासन-रक्षण, लेखन, खेती, व्यापार, दूसरों की सेवा और चित्रकारी आदि कार्यों से आजीविकाकी समस्या हल करनी पड़ती है। ऐसे समय को दो कर्मभूमि का समय कहते हैं। इस युग के पूर्व भारत में भोग भूमि का समय था। उस युग में सभी मानव भोगभूमिया कहलाते थे और कल्पवृक्ष जन्य सुखों का उपभोग करते थे, जैनधर्मानुसार उस समय मानवों में कोई वर्ण व्यवस्था नहीं थी। जब भोगभूमि की समाप्ति हो गई और कल्पवृक्ष भी नष्टप्रायः हो गये एवं कर्मभूमि प्रारम्भ हो गई और इसमें उन भोगभूमिया मनुष्यों को भोजनादि सामग्री मिलना कठिन हो गया तब वे आर्य मनुष्य उस जमाने के कुलकर नाभिराजा के पास पहुँचे और दुःख को निवेदन किया। नाभिराजा ने समझाया कि 'अब भोगभूमि समाप्त हो चुकी है और कर्मभूमि प्रारम्भ हो गई है, अतः अब तुम लोगों को अपने परिश्रम द्वारा आहारादि की समस्या हल करनी होगी।' उन्होंने उसके उपाय बतायें और विशेष समझने के लिए अपने पुत्र भगवान् ऋषभदेव के पास भेज दिया। भगवान् ऋषभ ने उन सबको असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, सेवा, शिल्प इन छह कर्मों की व्यवस्था बतायी और इन्हीं षट कर्मों द्वारा आजीविका हल करने की समस्या समझाई। उन्हीं भगवान् ऋषभदेव ने उन मनुष्यों को - जिनने असिकर्म-शस्त्र चलाना और शासन कर्म (लोक रक्षण) द्वारा आजीविका मंजूर की, उनको क्षत्रियवर्ण संज्ञादी। जिनने खेती, व्यापार और लेखनकला द्वारा आजीविका मंजूर की वैश्यवर्ण संज्ञा दी और जिनने सेवा करना और शिल्पकर्म द्वारा आजीविका स्वीकार की उनको शूद्र संज्ञा दी। इस तरह भगवान ऋषभदेव ने संसार का कार्य सुचारुतया और शान्तिपूर्ण ढंग से चलता रहे, इस बात को ध्यान में रख कर ही उस समय वर्ण व्यवस्था कायम की ऊँच-नीच के ख्याल से नहीं। चूँकि तीर्थंकर समदर्शी और दया के समुद्र थे वे कैसे उन आर्यों में किसी को ऊँच और किसी को नीच कह सकते थे। उस व्यवस्था से सभी मनुष्य अपने-अपने निश्चित कर्मों द्वारा आजीविका हल करने लगे। इस प्रकार क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण की नींव भगवान् ऋषभदेव ने आजीविका भेद और आचार भेद पर डाली। इसके बाद भगवान् ऋषभ के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने तीनों

वर्णों के दयालु लोगों को छाँटकर ब्राह्मणवर्ण स्थापित किया। अभेद पुराण पर्व 39 से प्रकट है कि भरत चक्रवर्ती ने जब ब्राह्मण वर्ण स्थापित करने का विचार किया तो एक उत्सव का आयोजन करके उसमें राजाओं को अपने मित्रों, बन्धुओं और नौकरों सहित निमंत्रण किया। निमंत्रण में जो लोग सम्मिलित हुए उनमें क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी तरह के मनुष्य थे। उनमें जो भरत महाराज के आंगन में उगे हुये हरे धान्य को कूचते हुये पहुँचे उन्हें तो चक्रवर्ती ने घर से बाहर निकला दिया और जो दयाप्रधानी धान्यों को न कुचकर बाहर ही खड़े रहे और जब वापिस जाने लगे तो उन्हें धर्मात्मा दयालु समझकर ब्राह्मण वर्ण संज्ञा दी और उनका उचित सम्मान किया। इस तरह भरत महाराज ने तीनों वर्णों के लोगों में से दयालुओं को छांट कर ब्राह्मण बनाया। इससे साफ जाहिर है कि वर्ण-व्यवस्था की नींव आचार क्रिया और आजीविका पर बनी है-नित्य जन्मना नहीं है।

वर्णों का परिवर्तन भी क्रिया-धंधा बदल देने पर हो जाता है। जैसा ऊपर सिद्ध किया है। शास्त्रों में भी वर्णलाभ करने वालों को पूर्व पत्नी के साथ पुनर्विवाह करने का विधान मौजूद है-

पुनर्विवाहसंस्कारः पूर्वः सर्वोऽऽय सम्मतः। (आदिपुराण पर्व 39)

अर्थात् - नवीन वर्ण लाभ करने पर पूर्व की पत्नी के साथ फिर से विवाह संस्कार करना माना गया है। आदि पुराण में अक्षत्रियों को क्षत्रिय होने बाबत भी ऐसा उल्लेख है-

''अक्षत्रियाञ्च वृत्तस्थाः क्षत्रिया एवं दीक्षिताः।''

अर्थात् चारित्र धारण करने पर अक्षत्रिय भी दीक्षित होकर क्षत्रिय हो जाते हैं। अतः क्रिया आजीविका के साधन बदलने पर वर्ण परिवर्तन हो जाता है। इसी तरह आचार छोड़ने पर अन्य कुलवर्ण हो जाता है।

''कुलावधि कुलाचाररक्षणं स्यात् द्विजन्मनः।
तस्मिन्नसत्यसौ नष्टक्रियोऽन्यकुलतां व्रजेत्।।'' (आदिपुराण 40 वा पर्व, प., 181 श्लोक)

अर्थात् - ब्राह्मणों की कुल की मर्यादा और कुलाचार की रक्षा करना चाहिये। यदि कुल की मर्यादा और कुलाचार की रक्षा न की जाये तो नष्टक्रिया वाला ब्राह्मण अन्य कुल वर्ण वाला हो जाता है। अतः वर्ण की व्यवस्था जैन शासन में आचार-क्रिया -विशेष पर निर्भर है-जन्म से नहीं।

जैन शास्त्रों से यह भी प्रकट है कि प्रत्येक चक्रवर्ती नारायण आदि प्रतिष्ठित महान् पुरुषों ने और शान्तिनाथ, कुंथु नाथ, अरनाथ इन तीन तीर्थंकर चक्रवर्तियों ने म्लेच्छ, शूद्र, विद्याधर और क्षत्रिय कन्याओं से विवाह कर संसार के सामने आदर्श रखा था। दुःख है कि आज हम लोग मिथ्या मद में व्याप्त होकर किसी को ऊँच और किसी (शूद्रादि) को नीच मान रहे है। किन्तु जैनशासन सभी को एक मानता है और वर्ण व्यवस्था को क्रियाधीन और आजीविका भेद से मानता है। यहाँ हम इस सम्बन्ध में शास्त्रीय प्रमाणों से प्रस्तुत करते हैं जो जैन शास्त्रों में भरे पड़े हैं:-

चातुर्वर्ण्यं यथान्यच्च, चाण्डालादिविशेषणम्।
सर्वमाचारभेदेन प्रसिद्धिं भुवने गतम्।। (पद्मपुराण)

अर्थात्- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, चांडालादि भेद आचार भेद से ही माने गये हैं।

आचार मात्र भेदेन, जातीनां भेदेकल्पनम्।
न जातिब्राह्मणीयास्ति नियताः क्वापि तात्विकी।।
गुणैः संपद्यते जातिः गुणध्वंसैविपद्यते। (धर्मपरीक्षा)

अर्थात् -ब्राह्मणात्वादि अति वास्तविक जाति नहीं हैं। सिर्फ आचार के भेद से जाति की कल्पना है।

गुणों से जाति प्राप्त होती है और गुणों के नाश से नाश को प्राप्त हो जाती है।

चिन्हानि विङ्‌ जातस्य, सन्ति नांगेषु कानिचित्।

अनायमाचरन किञ्चिज्जायते नीचगोचरः।। (पद्मपुराण)

अर्थात् - व्यभिचार से पैदा हुये के अंङ्गों में कोई चिन्ह नजर नहीं आता है, जिससे उसे नीच समझा जा सके। अतः जिसका आचार नीच है वही नीच वर्ण समझा जाता है।

विप्र-क्षत्रिय-विद्-शूद्राः प्रोक्ताः क्रियाविशेषतः।

जैनधर्मे पराः शक्तास्ते सर्वे बन्धोवोपमाः।। (अमितगति ध.र.)

अर्थात् - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये सब वर्ण क्रिया भेद से कहे गये हैं। जैन धर्म को सभी धारण कर सकते हैं और धर्म धारण करने से वे सब भाई के समान हो जाते हैं।

''**नास्ति जातिकृतो भेदो मनुष्याणां ग्वाश्ववत्।**'' (गुणभद्राचार्य)

अर्थात् - मनुष्यों में गौ घोड़े के समान जाति (वर्ण) कृत भेद नहीं हैं।

मनुष्यजातिरेकेव, जातिनामोदयोद्भवा।

वृत्तिभेदाहिताद्भेदाच्चातु र्विर्ध्यामहाश्नुते।। (आदि पु. 38 पर्व 45 श्लोक)

ब्राह्माणाव्रतसंस्कारात् क्षत्रियाः शस्त्रायारणात्।

वाणिजोर्थार्जनान्नयय्यात् शूद्राः न्यक्‌वृत्तिसंज्ञ्यात्।। (आदिपुराण 38 पर्व, 46 श्लोक)

अर्थात् - जातिनामकर्म के उदय से उत्पन्न हुई मनुष्य जाति एक ही है किन्तु आजीविका भेदों से चार भागों में बांटी गई है। व्रतों के संस्कार से ब्राह्मण, शस्त्र धारण करने से क्षत्रिय, न्याय पूर्वक द्रव्य कमाने से वैश्य और सेवा वृत्ति का आश्रय लेने से शूद्र कहलाते हैं।

वर्णाकृत्यादिभेदानां देहेऽस्मिन्न च दर्शनात्।

ब्राह्मण्यादिपु शूद्राद्यैः गर्भाधानप्रवर्तनात्।। (उत्तरपुराण प. 74)

अर्थात् - इस शरीर में वर्ण और आकार से भेद नहीं दिखाई देता है। तथा ब्राह्मणी आदि में शूद्रादि के द्वारा गर्भाधान भी देखा जाता है। तब कोई व्यक्ति अपने वर्ण और जाति का घमंड कैसे कर सकता हैं ? इसलिए जो सदाचारी हैं वही उच्च वर्णी हैं और जो दुराचारी हैं वह नीच वर्णी हैं। वर्ण को वास्तविक न होने से ही जैन शासन में त्रिवर्णाचार शास्त्र नहीं पाया जाता है, जो त्रिवर्णाचार सोमसेन भट्टारककृत है वह नकलीहै और हिन्दू धर्म की पूरी नकल है। अतः वह माननीय नहीं। जिस तरह नाना तरह के आर्ष प्रणीत श्रावकाचार विषयक शास्त्र मिलते हैं उस तरह आर्ष त्रिवर्णाचार जैन धर्म में एक भी नहीं है। उसका कारण वर्ण को वास्तविक न मानना ही है। हाँ, आचार भेद से वर्ण जरूर माना है किन्तु जन्मना नहीं है। 11 वीं शताब्दी के महान् नैयायिक जैनाचार्य प्रभाचन्द्र जी जन्मना वर्ण और जाति की धज्जियाँ उड़ा देते हैं और क्रिया से ही उसको सिद्ध करते हैं। प्रमेय कमल मार्तण्ड (पृ. 141-142) में उन्होंने प्रबल युक्तियों से जन्मना वर्ण और जाति का खण्डन किया है यथा -

''एतेन नित्यं निखिल ब्राह्मणव्यक्तिव्यापकम् ब्राह्मणमपि प्रत्याख्यातम्। ननु च ब्राह्मणोऽयमिति प्रत्यक्षत एवास्य प्रतिपत्तिः। न चेदं विपर्ययज्ञानं बाधकाभावात्। नापि संशयज्ञानभुयांशानवलम्बित्वात्। तथानुमानतोऽपि-ब्राह्मणपदं व्यक्तिव्यतिरिक्तैक-निमित्ताभिधेयसम्बद्धं पदत्वात्, पटादिपदवत्।

अत्रोच्यते -यत्ताबहुक्तं प्रत्यक्षत एवास्य प्रतिपतिः तत्र किं निर्विकल्पकाद् सविकल्पकाद्वा प्रतिपत्तिः स्यात् न तावद् निर्विकल्पकात् तत्र जात्यादिपरामर्शाभावात्। भावे वा सविकल्प-कानुपंगः स्यात्। नापि सविकल्पकात् कठकलापादिव्यक्तीनां मनुष्यत्वविशिष्टतयेव ब्राव्यविशिष्ट तयापि प्रतिपत्यसंभवात्। अथादृश्याब्राह्मणजातिस्तेनायमदोषाः कथं तर्हिं सा प्रत्यक्षेत्युक्त शोभेत। किं चौपाधिकोऽयं ब्राह्मण

शब्दः तस्य निमित्तं वाच्यम्। तच्च कि पिन्नोराविप्लुतत्वं, ब्रह्म प्रभवत्वं वा ? न नावदपविलुतत्वमनादौ काले तस्याध्यक्षेण ग्रहीतुमशक्यत्वात्। प्रायेण प्रसदानां कामातुरतयेह जन्मन्यपि व्यभिचारोपलंभास कुतहे योनि निबन्धनो ब्राह्मण्यनिश्चयः ? न च विप्लुतेतरन्निपत्येषु वैलक्षण्यं लक्ष्यते। नख़लु बड़वाया दियाश्वप्रभवापत्येप्वपि वैलक्षणं लक्ष्यते क्रियाविलोपात्। कथं चैवं वादिनो व्यास विश्वामित्रप्रभृतीनां। ब्राह्मण्यसिद्धिः तेषां अन्नयत्वासंभवात्। तत्र पित्रो रविप्लुतत्वं तन्निमित्तम। नापि ब्रह्मप्रभवत्वं सर्वेषां तत्प्रभवत्येन ब्राह्मणशब्दा सिधेयतानुसंगात्। तन्मुखज्जातो ब्राह्मणो नान्य इत्यपिभेदं ब्रह्मप्रभवत्ये प्रजानां दुर्लभः। न खुल एक वृक्षप्रभवं फलं मूले मध्ये शास्त्रयां च भिद्यतें। ननु नागवल्लीपत्राणां मूलमध्यादि देशोत्पत्तेः कंठमा मर्पादि दृष्टैः एवमत्नापि प्रजाभेदः। इत्यप्यसत् यतस्तत्पत्रान्नं जघन्योत्कृष्टप्रदेशोत्पादात् तत्पत्राणां तद्भेदो युक्तेः। ब्रह्मणस्तुतद् देशाभावात् न तद्भेदो युक्तः तद्देशमवि चाम्य जघन्योत्कृष्टतादिभेदप्रसंगः स्यात्। अतो न ब्रह्मप्रभवं ब्राह्मण्यम्। तज्जातो किंचित्तथाविघं सहायं वाच्यम्। तच्चाकारविशेषः अध्ययनादिकं वा ? तत्वद्यकार विशेषः तस्याब्राह्मणोऽपि संभवात्। अत् एवाध्ययनं क्रियाविशेषा वा तत्सहायतां न प्रतिपद्यते। दृश्यते हि शूद्रोपि स्वजाति विलोपाद्देशांतरे ब्राह्मणो भूत्वा वेदाध्ययनं तत्प्रणीतां च क्रियां कुर्वाणिः। ततो ब्राह्मणजातेः प्रत्यक्षतोऽप्रतिभासनात् कथं व्रतबन्ध वेदाध्ययनादिः विशिष्टि व्यक्तानेन सिद्धत्येत्। यदप्युक्तब्राह्मणपदभित्याद्यनुमानं तत्र व्यक्तिव्यतिरिक्तैक निमित्ताभिभैय संबद्धत्वं तत्पदाम्याध्यक्षवाधितं कटफलादिव्यक्तीनां ब्राह्मण्यविविक्तानां प्रत्यक्षतोऽनिश्चयाश्रावणत्व-विविक्तशब्दवत्: हेतुश्चानैकान्तिकः सत्ताकाशकालपदे अद्वैतानि पदे वा व्यक्तिव्यतिरिक्तैक-निमित्तोभिघेन संबद्धत्वाभावेपि पदत्वस्यभावात्। तन्नापि तत्संबद्धत्वकल्पनायां सामान्यवलेन अद्वैताश्च विशाणादे वस्तुभूताननुसंगान्। कुतोऽप्रतिपक्षापक्ष सिद्धिः स्यात्। ब्राह्मण्येन यष्टव्यभित्यागमोपि न प्रमाण् प्रत्यक्षवाधितार्यभिवायित्वात् गृथाप्रे हस्ति यूथशतमारते-इत्यागभवत। ननु ब्राह्मण्यादि जति विलोपे कथं वर्णाश्रमव्यवस्थान्निबंध दोषा तपोाना दिव्यविहारो वाजैकाना घटेनेत्यमसीचीनम्। क्रिया विशेष यज्ञोपवीतादिचिन्होपलक्षिते। व्यक्तिविशेष तद् व्यवस्थायास्तद् व्यवहारभ्योपपत्तेः। कथमन्यथा परशुरामेण नित्तवीकृन्य ब्राह्मणदत्तायां पृथिव्यां यथासंभव ? यथा पानेने निःक्षत्रीकृताऽसौ तथा संभाव्येत। ततः क्रियाविशेष निवर्धन एवायं ब्राह्मणादिव्यवहारः। तन्न पर परिकल्पि जतौ प्रमाणमस्ति यतोऽत्याः सद्भावः स्यातु सद्भाव वा वेश्यापटकादि प्रविष्टानां ब्राह्मणीनां ब्राह्मण्या यादो निन्दा च न स्यात्, जातियंतः पवित्रताहेतुः। स च तन्मने तदवस्थैव। अन्यथा गोत्वादपि ब्राह्मण्यं निकृष्ट स्थान। गवादीनां हि चांडालदि पृछे चिरोपिता व्यमपि इष्टं शिष्टैरादानं न तु ब्राह्मण्यादीनाम्। अथ क्रियाभ्रंशात् तत्र ब्राह्मण्यादीनां निन्द्यता तर्हि क्रिया वर्णव्यवस्था न तु जन्मता सिद्धयेत्।

किं चेदं ब्राह्मण्य जीवस्य शरीरस्योभयत्व वा संस्कारत्व वेदाध्ययनस्य वा ? गत्यन्तरा संभवात् न क्षत्रियव्शि द्वादीनायपि तेषामपि जीवस्य विद्य मानत्वात्। नापि शरीर स्वास्य पंचभूता-त्मकस्यापि घटादिवत् ब्राह्मणस्य संभवात्। वायुभवन्योभय दोषानुसंगात्। नाभि संस्कारास्य शूद्र बालके कर्तुशक्तितस्तत्रापि तत्प्रसंगात्। तापि वेदाध्ययन शूद्रेपि तत्संभवात्। शूद्रोपि देशान्तरे गत्वा वेदं पठनि पाठयतिच, न तावता अस्य ब्राह्मणत्वं भवद्भिप्युपगम्यन्ते। ततः सदृशक्रियापरिणामादि निवन्वनेवेयं ब्राह्मणक्षत्रियादिव्यतरधा।''

अर्थात् - जिस तरह नित्य सामान्य का स्वरूप नहीं ठहरता है उसी तरह सभी ब्राह्मणों में रहने वाली नित्य ब्राह्मणत्व जाति भी नहीं ठहरती है। शंकाकार (णीमांसक) शंका करता है - यह ब्राह्मण है ? इस प्रकार प्रत्यक्ष से ही वह सिद्ध है। यह ज्ञान विपर्यय ज्ञान नहीं हैं क्योंकि बाधक प्रमाण का अभाव है। संशय

ज्ञान भी नहीं है क्योंकि उभयांगों को परामर्श नहीं करता है तथा अनुमान से भी मालूम पड़ता है कि ब्राह्मणपद ब्राह्मण व्यक्ति से जुदा ब्राह्मणत्व (व्रति) के निमित्त से हैं क्योंकि वह पद है पटादि पद के समान।

इसका श्रीतार्किक शिरोमणि प्रभाचन्द्राचार्य खंडन करते हैं - जो यह कहा गया है कि प्रत्यक्ष से मिथ्यात्व जाति मालूम ़पड़ती है सो हम पूछते हैं कि वह क्या सविकल्पक प्रत्यक्ष से मालूम पड़ती है अथवा निर्विकल्प प्रत्यक्ष से ? निर्विकल्पक प्रत्यक्ष से तो मालूम पड़ती नहीं है, क योंकि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में जात्यादि विकल्प का ज्ञान नहीं होता। अगर जाद्यादि विकल्प का ज्ञान निर्विकल्पक में मानोगे तो वह निर्विकल्पक प्रत्यक्ष न होकर सविकल्पक प्रत्यक्ष कहलायेगा। अर्विकल्पक प्रत्यक्ष से भी ब्राह्मणत्व जाति नहीं मालूम पड़ती है। जिस प्रकार मनुष्यों में मनुष्यत्व सविकल्पक है प्रत्यक्ष से नहीं मालूम होती उसी तरह उनमें (ब्राह्मणों में) ब्राह्मणत्व जाति भी नहीं मालूम पड़ती है। अगर कहो ब्राह्मणत्व जाति अवश्य है तो वह प्रत्यक्ष कैसे सिद्ध हो सकती है। दूसरी बात यह है कि ब्राह्मण शब्द औपाधि (उपाधियुक्त) शब्द है। अतः उसका निमित्त बतलाना चाहिये। सो वह निमित्त माता-पिता की अविपलुता शुद्धि है। अथवा ब्रह्मा से पैदा होता है ? अगर माता-पिता की शुद्धि ब्राह्मणत्व (ब्राह्मण जाति) की पहचान का निमित्त है तो वह वन नहीं सकता है क्योंकि इस अनादिकाल में उस शुद्धि का बना रहना असम्भव है। कारण स्त्रियों को प्रायः श्रंगातुर होने से इस जन्म में भी व्यभिचार करते देखा जाता है। इसलिये योनिशुद्धि कारणक ब्राह्मणत्व(ब्राह्मणजाति) का निश्चय कैसे हो सकता है ? शुद्ध माता पिता और व्यभिचारी माता-पिता से पैदा हुई सन्तानों में विलक्षणता भी मालूम नहीं होती है क्योंकि क्रिया दोनों सन्तानों में एक सी (शुद्धाशुद्ध) पायी जाती हैं। अतः यह शुद्ध ब्राह्मण है और यह अशुद्ध ब्राह्मण है,ऐसा निश्चय कदापि नहीं हो सकता। जिस तरह घोड़ी और गधे के ससंर्ग से पैदा हुई संतान खच्चर रूप से देखने में विलक्षण नजर आती है उस तरह ब्राह्मण और शूद्र के संसर्ग से पैदा हुई और ब्राह्मण-ब्राह्मणी के संसर्ग से पैदा हुई संतानों में विलक्षणता नहीं मालूम होती है क्योंकि दोनों में एक सरीखा ही आकार, आचारादि होता है। अतः माता-पिता की शुद्धि-ब्राह्मणत्व (ब्राह्मणजाति का निश्चयात्मक निमित्त नहीं हो सकता है। दूसरे, माता पिता की शुद्धि ब्राह्मणत्व के पहचानने में निमित्तकारण मानने या कहने पर व्यम्, विश्वामित्र आदि के ब्राह्मणत्व (ब्राह्मणपना) कैसे सिद्ध होगा ? क्योंकि ये शुद्ध माता-पिता से पैदा नहीं माने गये हैं। फिर भी उन्हें ब्राह्मण माना है। अगर कहो कि अशुद्ध माता-पिता से पैदा होने पर भी शुद्ध ब्राह्मण की क्रिया करने से वे ब्राह्मण कहलाते हैं तो फिर क्रिया के अधीन ही वर्ण व्यवस्था हुई। अतः माता पिता की शुद्धि ब्राह्मणत्व का निमित्त कारण नहीं हैं। प्रज्ञा से पैदा होना ब्राह्मणत्व का निमित्त कारण है यह भी नहीं बनता है क्योंकि वैश्य, क्षत्रिय, शूद्र भी ब्रह्मा पैदा होने के कारण ब्राह्मण हो जायेंगे। अगर कहो कि ब्रह्मा के मु ख से जो पैदा हो उसे ब्राह्मण कहते हैं अन्य को नहीं, तो यह भेद भी ब्रह्मा से पैदा हुई प्रज्ञा में नहीं बन सकता है। जैसे एक वृक्ष से पैदा हुये फल, मूल, मध्य, शाखा के भेद से भेद को प्राप्त नहीं होते उसी तरह ब्रह्मा से पैदा हुये सभी प्राणियों में भी ब्राह्मणादि भेद नहीं हो सकते।

शंका पान की बेल के पानों में मूल मध्यादि देशोत्पन्न भेद से कंटभ्रामयोदि भेद अवश्य देखा जाता है - अर्थात् पान की बेल के मूलभाग से पैदा हुये पान खाने पर गले का स्वर बिगाड़ देते हैं और पान की लता के मध्य भागोत्पन्न पान खाने पर गले का अच्छा स्वर कर देते हैं। इसी तरह ब्रह्ममुखोत्पन्न ब्राह्मण, ब्रह्मा की बाहुओं से पैदा हुये क्षत्रिय, और ब्रह्मा की नाभि से पैदा हुये वैश्य, और ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुये शूद्र कहलाते हैं।

समाधान - यह कहना भी व्यर्थ है क्योंकि पान की बेल में जघन्योत्कृष्टादिका भेद होने से उन उन

प्रदेशों से पैदा हुये पान में भेद बन सकता है किन्तु ब्रह्मा के जघन्योत्कृष्टादि भेद न होने से ब्राह्मादिभेद नहीं बन सकते हैं। अगर ब्रह्मा में जघन्योत्कृष्टादि भेद माना जाये तो जघन्य-मध्यम-उत्कृष्ट तीन तरह का ब्रह्मा हो जायेगा और ऐसा माना नहीं है। ब्रह्मा के पैरों को जघन्य मानने पर उसके पैरों के समान, वंदनीयता नहीं बन सकती है। अतः ब्रह्मा से पैदा होना भी ब्राह्मणत्व नियामक नहीं बनती है। अधम जाति में सहायक कारण भी यदि कोई कहें तो यह क्या आकार विशेष हैं अथवा वेदाध्ययनादिक ? आकार-विशेषतो कारण नहीं हो सकता है क्योंकि वह शूद्रादिक में भी पाया जाता है। अतः आकार-विशेष से शूद्र भी ब्राह्मण हो जायेंगे, जो कि अभीष्ट नहीं। वेदाध्ययन और क्रिया -विशेष भी ब्राह्मणत्व की पहचान के सहायक कारण नहीं हो सकते हैं, क्योंकि शूद्र भी अपनी जातियों को छिपाकर दूसरे देश में जाकर ब्राह्मण का रूप बना लेता है और ब्राह्मण सम्बन्धी क्रिया और वेदाध्ययन करने लगता है। अतः वह शूद्र भी ब्राह्मण हो जायेगा। इसलिये नित्य ब्राह्मण जाति को प्रत्यक्ष से न दिखने से व्रत-वेदाध्ययनादि ब्राह्मण में ही कैसे सिद्ध हो सकते हैं ? अतः प्रत्यक्ष में ब्राह्मणत्व जाति सिद्ध नहीं हो सकती और जो अनुमान् अर्थात् ब्राह्मणपद ब्राह्मणत्व जाति से युक्त है पद होने से पटादि पद के समान से ब्राह्मणत्व जाति को सिद्ध करने की कोशिश की है वह भी व्यर्थ है क्योंकि ब्राह्मणत्व जाति ब्राह्मण व्यक्ति से जुदा प्रत्यक्ष में नहीं दिखती है। अतः प्रत्यक्ष भिन्न पक्ष होने से हेतु कालात्यपनाभिष्ट है। दूसरे प्रस्तुत अनुमानगत हेतु अनैकान्तिक दोष सहित होने से अपना साक्ष्य सिद्ध नहीं कर सकता क्योंकि अद्वैत अश्वविधाणादिपदों में सामान्य जाति का स्वभाव होने पर भी पदत्व हेतु रहता है। अगर इन अश्वविषाण अद्वैतादिक में भी अश्वविषाणात्वादि जाति मानी जाय तो वे अश्वविषाण घोड़े के सींग) अहितादि सत्य वस्तुएँ सिद्ध हो जायेंगी। किन्तु वे सत्य नहीं है। अतः अनुमानगत हेतु सदोष होने से उसके द्वारा ब्राह्मणत्व की सिद्धि नहीं बन सकती है।

शंका - ''ब्राह्मणेन यज्ञस्थम'' अर्थात् ब्राह्मण को यज्ञ करना चाहिये, इस आगम वाक्य से ब्राह्मण आदि सिद्ध हो जायेगी ?

समाधान - यह भी ठीक नहीं क्योंकि वह प्रत्यक्ष बाधित अर्थ का कथन करता है। जैसे वृक्ष के अग्र भाग पर हाथियों का समूह है पर आगम प्रत्यक्षबाधित है।

शंका - नित्य ब्राह्मणादि जाति न मानने पर वर्णाश्रम की व्यवस्था और उसके अधीन तपोदानादि व्यवहार जैनियों के कैसे बनेंगे ?

समाधान - नहीं, क्योंकि क्रियाविशेष से सहित और यज्ञोपवीतादि चिन्ह वाले व्यक्तियों में यह वर्णाश्रम की व्यवस्था और तपोदानादि धर्म बन जायेंगे। अर्थात् शास्त्राध्ययन, व्रताचरण, प्रधान ब्राह्मण, शासन कर्म और असहायों की रक्षा करने वाले क्षत्रिय, व्यापार, खेती, मुनीमी आदि कर्म करने वाले वैश्य और सेवा शिल्प का कार्य करने वाले शूद्र कहलायेंगे। अतः कोई भी नित्यजाति वर्ण नहींहै। क्रिया विशेष से जाति वर्ण बनते हैं और क्रिया छोड़ने पर जाति वर्ण नष्ट हो जाते हैं और क्रिया बदल देने पर जाति वर्ण बदल जाते हैं। अगर क्रिया से ही वर्ण व्यवस्था न होती तो परशुराम द्वारा क्षत्रिय रहित पृथ्वी कर देने पर वर्तमान में क्षत्रिय कहाँ से पैदा होते ? जिस तरह परशुराम ने क्षत्रिय रहित पृथ्वी की उसी तरह किसी के द्वारा ब्राह्मणरहित पृथ्वी की संभावना हो सकती है। फिर वर्तमान में ब्राह्मण कहाँ से आ गये ? अगर कहो कि ब्राह्मण क्षत्रिय रहित पृथ्वी होने पर भी काफी बचे शूद्र, वैश्य ही ब्राह्मणादि क्रिया करने से ब्राह्मण क्षत्रिय बन गये हो तो फिर क्रिया केअधीन ही वर्ण व्यवस्था हुई, जन्म से नहीं। यही जैनधर्म मानता है। अगर जन्म से नित्य ब्राह्मण जाति मानी जाय तो वैश्या के घर में रहने वाली ब्राह्मणी की निन्दा क्यों की जाती है ? और उसमें ब्राह्मणी को वैश्या हो जाने पर भी नित्य जन्मना ब्राह्मण जाति पवित्रता की

हेतु उसमें मौजूद रहेगी ही। अन्यथा वो जाति से भी ब्राह्मण जाति निकृष्ट कही जायेगी। क्योंकि शूद्रादि के घर में वर्षो से रही हुई भी गायों को बड़े लोग (उच्च वर्ण वाले) खरीद लेते हैं और उसका दूध सेवन करते हैं किन्तु भ्रष्ट हुई ब्राह्मणी को नहीं अपनाते। अगर कहा जाये कि वेश्या के घर में रहने वाली ब्राह्मणी की क्रिया नष्ट हो जाने से उसकी निन्दा हो जाती है तो क्रियाविशेष से ही वर्ण व्यवस्था सिद्ध हुई जन्म से नित्य नहीं ।

दूसरी बात यह है कि 'ब्राह्मणत्व' जीव के द्वारा है अथवा शरीर के अथवा दोनों के या संस्कार अथवा वेदाध्ययन के ? जीव के नो ब्राह्मणत्व बन नहीं सकता है, क्योंकि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों के भी ब्राह्मणत्व का प्रसंग आयेगा। कारण, जीवत्व, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों में भी होता है। पंचभूतादिस्वरूप शरीर में भी ब्राह्मणत्व संभव नहीं हैं। जिस तरह पंचभूतात्मक शरीर में भी ब्राह्मणत्व नहीं है। शरीर और जीव दोनों को ब्राह्मणत्व मानने पर दोनों में कहे हुये दोषों का प्रसंग आयेगा। संस्कार के शूद्र बालक में भी हो सकने से इसके भी ब्राह्मणत्व का प्रसंग आयेगा। वेदाध्ययन से भी ब्राह्मणत्व नहीं बनता है क्योंकि शूद्र भी वेदाध्ययन कर सकते हैं। अतः उसके ऊभी ब्राह्मणत्व का प्रसंग आयेगा और यह ज्ञात ही है कि शूद्र भी देशान्तर में जाकर वेद पढ़ते हैं और दूसरों को भी पढ़ाते हैं। पर इतने से उन्हें ब्राह्मण नहीं माना जाता है। इन्हीं प्रमाणों से सिद्ध है कि नित्य जन्मना वर्णव्यवस्था नहीं है। किन्तु सदृश क्रिया विशेष परिणामादि (आचार, विचार आजीविकादि भेद) के अधीन ही वर्णव्यवस्था है। अर्थात् जो जब उच्चआचार-विचार रखें वह उस वर्ण का है और जो नीच आचार-विचार रखे वह नीच वर्ण का है।

इसी बात का समर्थन पं. आशाधर जी ने अनगार धर्मामृत में किया है यथा...।

कुतश्चित् कारणाद् यस्य कुलं सम्प्राप्तदूषणम्। सोऽपि राजादिसंमत्या शोधयेत स्त्रं यदा कुलम्।

अर्थात् - अनादिकालीन संसार में कामदेव सदा से दुर्निवार चला आ रहा है। और कुल का मूल कामिनी है तो उसके आधार पर जाति और वर्ण की कल्पना कैसे ठहर सकती है। तात्पर्य यह है कि कामदेव की चपेट में न जाने कौन स्त्री कब आ जाये। अतः स्त्रियों की शुद्धि के ऊपर जन्म कल्पना नहीं ठहरती। पूज्य तार्किक शिरोमणि प्रभाचन्द्राचार्य ने कितनी सुन्दरता से नाना विद्वानों की कल्पना व नित्य वर्ण व्यवस्था का खंडन किया है। इसे पाठक स्वयं ही ऊपर देख चुके हैं। इन तमाम प्रमाणों से सिद्ध है कि वर्ण व्यवस्था आधार क्रिया और आजीविका के भेद को लेकर ही कायम हुई है - जन्म से नित्य नहीं है।

उपसंहार- अगर निश्चित कर्म (क्रिया) और अजीविका के साधन को छोड़ देते हैं या बदल देते हैं तो जाति वर्ण नष्ट भी हो जाता है और बदल भी जाता है। अतः जन्म से किसी का ऊंचा समझना और किसी को नीचा समझना उचित नहीं है। प्रचलित अच्छे वर्ण-जाति में पैदा होकर भी अगर सदाचारी नहीं है तो वह नीच वर्णी ही है, और प्रचलित नीच वर्ण में पैदा होकर सदाचारी है तो वह उच्चवर्ण वाला ही है। यही भगवान् महावीर की देशना है। आज जो इसका प्रचार भी वर्तमान युग के महात्मा गांधी कर रहे हैं वह भी वीरशासक का सच्चा प्रचार है। इनसे यह नतीजा निकलता है कि प्रत्येक मानव समीचीन आचार-विचार पालन कर जैनधर्म धारण करने का अधिकारी हो सकता है और हम ऊँचे कुल वर्ण में पैदा हुये, इस बात का हमें घमंड छोड़ देना चाहिये और उच्च चरित्र का, पंच पापों के त्यागरूप संयम का पालन कर सच्चे जैन ब्राह्मणादि बनना चाहिये। जब वर्ण और जाति क्रिया के आधीन ही है और उसका परिवर्तनादि भी हो सकता है तब प्रत्येक वर्ण (जाति) के साथ विजातीय विवाह तथा अपनी उपजातियों में अन्तर्जातीय विवाह किये जा सकते हैं और शूद्र के शुद्रादिकों को जैन बनाया जा सकता है और यह उच्च चरित्र पालन कर स्वर्गादिकता अधिकारी भी हो सकता है। इस बात के समर्थन में शास्त्रों में हजारों प्रमाण मिलते हैं। दस्सा लोगों का जिन्हें पाप अपने से छोटा मानते हैं- पुनः शुद्ध कर शुद्ध वर्ण वाला बनाया जा सकता हैं, क्योंकि आचार के आधीन ही वर्ण व्यवस्था है। अतः पालन कर और प्रायश्चित लेकर बदल कर

लोग पुनः शुद्ध हो सकते हैं। इसी बात का समर्थन जिनसेनाचार्य ने अपने आदिपुराण में किया है यथा-

सोऽपि राजादिसम्मत्या सोधयेतु स्वं कुलं सदा।।

तदाऽस्योपनयार्हत्वं पुत्रपोत्रादिसंततो।

न निषिद्धं दीक्षार्हे कुले चेदस्य पूर्वजाः।। (आदि पर्व पु. 40)

अर्थात् किसी कारणवश किसी कुल में कोई दोष लग गया हो तो वह राजाादिकी सम्मति में जब अपने कुल को प्रायश्चित्त से शुद्ध कर लेता है तब उसे फिर यज्ञोपवतादि लेने का अधिकार हो जाता है। यदि इसके पूर्वज दीक्षा योग्य कुल में हुये हों तो उसके पुत्र पौत्रादिकों यज्ञोपवीतादि लेने का कहीं भी निषेध नहीं हैं। इस आगम पर नजर डालकर दस्सा लोगों को पुनः शुद्ध कर अपने में शीघ्र मिला लेना चाहिये। जिस तरह नीच चारित्र में मानव पतित और शूद्र हो सकता है। उसी तरह पंचपापों में त्याग रूप लब्ध चरित्र ने शूद्र पतित और मलेच्छ भी उच्चवर्णी (ब्राह्मणादि) जैसी हो सकते है। जो स्त्रियां कारणवश भ्रष्ट हो गई है वे भी प्रायश्चित्त लेकर यथायोग्य पुनः शुद्ध हो सकती हैं। एसी हजारों नजीरें जैनशास्त्रों से भरी पड़ी हैं। मधुराजा, अंजना, बसंतसेना वेश्या, चारुदत्त सेठ तथा बद्री को पैदा करने वाली अर्जिकायें भी तो प्रायश्चित्त लेकर पुनः शुद्ध बनकर स्वर्ग की अधिकारिणी हुई थीं। अतः बन्धुओं चेती नवी लोगों को जैन बनाओं और हर वर्ण के परस्त्री को जैनधर्म में दीक्षित करो और उनके साथ भाई पने का व्यरहार करो जो धार्मिक, सामाजिक अधिकार तुम्हें प्राप्त हैं वे अधिकार भी उन नवदीक्षित लोगों को दो जिनसे जैनधर्म की असली प्रभावना हो और जैन संस्कारों की वृद्धि हो। रानी चेलना ने भी तो राजा श्रेणिक को बौद्ध से जैन बनाया था। तथा आपके तीर्थंकर और आचार्यों ने तो सारे विश्व को ही जैन बनाया था। यही कारण है कि आज भी कल्याणक गति में पथ और जैनधर्म धारण किये हुये हैं। जैन वर्ण और जैनधर्म धारण किये हुये हैं। जब वर्ण और जाति ही क्रिया से ठहरती है तो उनके उपभेदारूप जो उपजातिया-जातियां प्रचलित हैं -वो देशभेद, अजीविकाभेद और राजादिक नाम पर बनी है ये सब तो अपने भाव ही कृत्रिम ठहरती है। अतः इन उपजातियों का वाद का आधार और अहिंसावाद क्रिया से वर्ण-घमण्ड करना भी व्यर्थ है। भगवान् महावीर की मान्य व्यवस्था को मानना ही है।

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

किशनपुरा (शाहगढ़)- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से उनकी ही जन्मस्थली किशनपुरा(शाहगढ़) म.प्र. में 2 दिसम्बर 2022 को बाल ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी, ब्र. अक्षय भैया को दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशःआर्यिका चर्यामती जी एवं क्षुल्लक चरणसागरजी महाराज रखा गया।

चिंचोली (म.प्र.) - आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर पंचकल्याणक चिंचोली में तपकल्याणक के दिन वहाँ के ही जन्में ब्रह्मचारी पवन भैया को 4 जनवरी 2023 को जैनेश्वरी दीक्षा दी गई। जिनका नाम मुनिश्री सुभगसागरजी रखा गया।

समाधि

सांगानेर (जयपुर) राज. - आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री सुज्ञेयसागरजी महाराज का समाधिमरण 3जनवरी 2023 को प्रातः 6 बजे सांगानेर, जयपुर (राज.) में हुआ।

कविता

धन्य धन्य गुरुदेव हमारे

✻ कांतिकुमार जैन, करूण, खिमलासा ✻

धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, तुम ही तो हो मेरे सहारे।
धन्य हुआ है देश हमारा, भेष दिगम्बर का है धार ॥
जहाँ जहाँ भी चरण तुम्हारे।
पढ़ जाते हैं लगता मेला ॥
धर्मध्यान को ध्याते जाते,
संयम की बन जाती बेला ॥
तुमने जग को नश्वर समझा, हो गये जग-जालों से हैं न्यारे।
धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, तुम ही तो हो मेरे सहारे।
भव भव से मैं भटक रहा हूँ।
जन्म मरण धारण कर-कर।
कर्म का बंधन लगा हुआ है,
भोग रहा हूँ समता धर ॥
राग-द्वेष से मुक्ति न पायी, अब आये शरण तुम्हारे।
धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, तुम ही तो हो मेरे सहारे।
तुम्हीं बताओं मार्ग दर्शन
तुम्हीं ज्ञान के हो धारी।
तुमने जगत् जगाया गुरुवर,
रत्नत्रय के तुम हो धारी ॥
इतना हम में ज्ञान नहीं हैं, बने इसी से दुखियारे।
धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, तुम ही तो हो मेरे सहारे।
सम्यक् भाव जगा दो गुरुवर
हम चरण शरण में हैं आये।
करु साधना अंतर मन से
मुक्ति का पथ हम पाये ॥
न होगी फिर 'करुण' जिन्दगी, भव सिन्धु से हमको तारे।
धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, तुम ही तो हो मेरे सहारे।

हमारे गौरव

आचार्य श्रुतसागरजी

आचार्य कल्प श्रुतसागर जी महाराज का जन्म राजस्थान के बीकानेर शहर में फाल्गुन वदी अमावस्या संवत् 1962 में श्रीमान् सेठ छोगामल जी के परिवार में हुआ था। आपका नाम गोविन्दलाल रखा गया। पर लाड़ प्यार में आपको फागोलाल के नाम से पुकारते थे।

आपकी लौकिक शिक्षा मात्र प्राथमिक विद्यालय तक ही मिल सकी। कलकत्ता में चितपुर रोड़ स्थित पाठशाला में पं. मक्खूलाल जी के संरक्षण में आपके धार्मिक संस्कार सुदृढ़ बने।

प्राथमिक शिक्षा समाप्त होते ही आप पिताजी के साथ व्यवसाय में लग गये। 17 वर्ष की अवस्था में आपने कलकत्ता प्रवासी सेठ जुगलकिशोर जी की शील व रूप सम्पन्नता सुपुत्री बसंताबाई से विवाह कर गृहस्थ जीवन को आरम्भ किया। आपके तीन पुत्र व तीन पुत्रियाँ थी।

माता-पिता के स्वर्गारोहण कर जाने से फागोलाल जी को संसार की असारता उद्भाषित हो गयी। व्रत, उपवास, आदि धार्मिक क्रियाओं के साथ संयमित जीवन व्यतीत करने लगे। 40 वर्ष की उम्र में आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। कार्तिक सुदी तेरस सं. 2011 को आचार्य वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर ली। भादो सुदी तीज संवत् 2014 को जयपुर में आचार्य वीरसागर जी से ही मुनि दीक्षा अंगीकार की।

मुनि पद की कठोर साधना और आत्मकल्याण में निरत मुनि श्रुतसागरजी अपने नाम के अनुरूप सदैव श्रुत की आराधना में लवलीन रहते।

आपके आलेखों में मुख्यता वर्ण व्यवस्था को केन्द्रित किया गया है। आपके कतिपय लेखों का एक संग्रह 'रत्नाकर की लहरें' के नाम से प्रकाशित होते रहे।

आपने अन्त में अतिशय क्षेत्र लूणवा, राजस्थान में सल्लेखना पूर्वक देह त्याग कर अपने जीवन को अन्तिम सार्थकता को भी प्राप्त कर लिया।

अतिशय क्षेत्र ऐलोरा की गुफाएँ

✻ बाबू कामताप्रसाद जैन ✻

निजाम हैदराबाद की रियासत में भारत के प्राचीन गौरव को प्रकट करने वालीं अनेक कीर्तियाँ बिखरी पड़ी हैं। वे कीर्तियाँ जैनों , बौद्ध और वैष्णवों की सम्पत्ति ही नहीं, बल्कि साम्प्रदायिकता को भुलाने वाला त्रिवेणी-संगमरूप ही हैं । गतवर्ष भी गोम्मटेश्वर के महामस्तकाभिषेकोत्सगव से लौटते हुये हमको यहाँ के पुण्यमई स्थाने ऐलोरा के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

ईस्वी 9 वीं –10 वीं शताब्दि में ऐलोरा संभवतः ऐलापुर अथवा ऐलापुर कहलाता था और तब वह राष्ट्रकूट साम्राज्य का प्रमुख नगर था। एक समय वह राष्ट्रकूट राजधानी भी रहा। अनुमान किया जाता है तब उसका वैभव अपार था। अब तो उसकी प्रतिछाया ही शेष है। परन्तु यह छाया भी इतनी विशाल, इतनी मनोहर और इतनी सुन्दर है कि उसको देखते ही दर्शक के मुख से वेसाख्ता निकल जाता है : ओह ! कैसा सुन्दर है यह ! सच देखिये तो 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का सिद्धान्त ऐलोरा की निःशेष विभूति -उन कलापूर्ण गुफाओं में जीवित चमत्कार दर्शा रहा है। अब सोचिये यौवन रस से चुहचुहाते ऐलापुर का सौभाग्य-सौन्दर्य आज कलंकारालने उसे निष्प्रभ बनाने में कुछ उठा नहीं रक्खा, परन्तु फिर भी उसे वह निष्प्रभ नहीं बना सका। उसका नाम और काम भुवनविख्यात है !

हरिवंशपुराण में श्री जिनसेनाचार्य जी ने एक इलावर्द्धन नगर का उल्लेख किया है । श्री जिनसेनाचार्य जी के समय ऐलोरा अपनी जवानी पर था, क्योंकि उनका समय राष्ट्रकूट साम्राज्यकाल के अंतर्गत पड़ता है। अतएव यह अनुमान किया जा सकता है कि उन्होंने जिस इलावर्द्धन नगर का उल्लेख किया है वह ऐलोरा होगा । उन्होंने लिखा है कि कौशलदेश की रानी 'इला' अपने पुत्र 'ऐलेय' को साथ लेकर दुर्गदेश में पहुँची और वहाँ पर इलावर्द्धन नगर बसाकर अपने पुत्र को उसका राजा बनाया। (सर्ग 17 श्लोक 17-19) हो सकता है कि इस प्राचीन नगर को ही राष्ट्रकूट राजाओं ने समृद्धिशाली बनाया हो ! और इसके पार्श्ववर्ती पर्वत में दर्शनीय मन्दिर निर्माण कराये हों।

गत फाल्गुणी अमावस्या को हम लोग मानमाड़ जंकशन (G.I.P.R.) से लारियों में बैठकर ऐलोरा के दर्शन करने के लिये गये। जमीन पथरीली है-चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ नजर आते हैं। जब हम ऐलोरा के पास पहुँचे तो बड़ा-सा पहाड़ हमारे सम्मुख आ खड़ा हुआ। पहले ही एलोर गाँव पड़ा। यह एक छोटा सा आधुनिक गाँव है। उस रोज यहां पर वार्षिक मेला था। चारों ओर से ग्रामीण जनता वहाँ इकट्ठी हुई थी। गाँव के पास बहती हुई पहाड़ी नदी में उसने स्नान किया था और पवित्रगात होकर के कैलाश मन्दिर में शिवजी पर जल चढ़ाया था। हजारों स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकायें इस लोकमूढ़ता में आनन्दविभोर हो रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि शिवजी की यह मूर्ति सच्चिदानन्द ब्रह्मरूप (परमात्म स्वरूप) का समलंकृत प्रतीक है। शिव अमरत्व का ही संकेत है। जो अमर होना चाहे वह संसार-विष (रागद्वेषादि) को पीकर हजम कर डाले-उसको निःशेष कर दे - वही शिव है। परन्तु उन भोले ग्रामीणों को इस रहस्य का क्या पता ? वह तो कुल-परम्परा से उस मूढ़ता में बहे आ रहे थे। 'धर्म प्रभावना ऐसे मेलों में सद्ज्ञान का प्रचार करने में ही हो सकती है।' - यह सत्य वह मर्मज्ञजनों को बता रही थी। हमारी लॉरी उस भीड़ को चीरती हुई चली। ग्रामीणों की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिये तरह-तरह की साधारण दुकानें भी लगी हुई थीं। ज्यों-त्यों करके हमारी लॉरी मेले को पार कर गई। दोनों ओर हरियाली और पथरीले गड्ढे नजर पड़ रहे थे। वह पहाड़ी नदी भी इन्हीं में घूम फिर कर आँख मिचौनी खेल रही थी। हमने उसे पार किया और पहाड़ी पर

चढ़ने लगे। थोड़ा चलकर लॉरी रुकी, हम लोग नीचे उतरे। देखा सामने उत्तुंग पर्वत फैला हुआ है। उसको देखकर हृदय को ठेस-सी लगती है । सुदृढ़ अटल और गंभीर योद्धा सा वह दिखता है । कलामय सरसता उसमें कहाँ ? यह भ्रम होता है। दिन काफी चढ़ गया था - बच्चे भी साथ में थे। गरमी अपना मजा दिखला रही थी। चाहा कि भोजन नहीं तो जलपान ही कर लिया जाय।

परन्तु 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम' की चाह दाहने शारीरिक दाह को भुला दिया। सब लोग ऐलोरा देखने के लिये बढ़े। कैलाशमंदिर के द्वार पर ही पर्वत स्त्रोत से झरा हुआ जल छोटे से कुण्ड में जमा था - उसने शीतलता दी। क्षेत्र का प्रभाव ही मानों मूर्तिमान होकर आगे आ खड़ा हुआ। भीतर घुसे और देखा दिव्यलोक में आ गये। पर्वत काटकर पोला कर दिया गया है। अंधेरी गुफायें वहाँ नहीं हैं। पर्वत के छोटे से दरवाजे के भीतर आलीशान महल और मंदिर बने हुये हैं । उनमें शिल्प और चित्रकाल के असाधारण नमूने देखते ही बनते हैं। आश्चर्य हैं कि खम्भे पर हजारों लाखों मनवाला वह पाषाणमयी पर्वत खड़ा हुआ है। उसकी प्रशंसा शब्दों में करना अन्याय है - इतना ही बस है कि मनुष्य के लिए संभव हो तो उसको अवश्य देखना चाहिए। कला का वह आगार है। इस कैलाश भवन 'शिवमन्दिर' को राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज प्रदमने बनवाया था।

इस मन्दिर को देखने के साथ ही हमको एलोरा की जैन गुफाओं को देखने की उत्कण्ठा हुई। सब लोग लॉरी में बैठकर वहाँ से दो मील के लगभग शायद उत्तर की ओर चले और वहाँ से हनुमान गुफा आदि को देखते हुये जैन गुफाओं के पास पहुँचे। नं. 30 से नं. 34 तक की गुफायें जैनियों की हैं। हमने नं. 29 गुफा मन्दिर को भी देखा। उसमें भीतर ऐसा कोई चिन्ह नहीं मिला जिससे उसे किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुमान करते; परन्तु उसके बाहरी वरांडा में जैन मूर्तियाँ ही अवशेष रूप में रक्खी दिखती हैं । इससे हमारा तो यह अनुमान है कि यह गुफा भी जैनियों की है। ये गुफायें बहुत बड़ी हैं और इनमें मनोज्ञ दिगम्बर जैन प्रतिमायें बनी हुई हैं। इनके तोरणद्वार स्तम्भ, महराब-छतें बड़ी ही सुन्दर कारीगरी की बनी हुई हैं। हजारों आदमियों के बैठने का स्थान है। राष्ट्रकूट-राज्यकाल में जैनधर्म का प्राबल्य था। अमोघ वर्ष आदि कई राष्ट्रकूट नरेश जैनधर्मानुयायी थे। उनके सामन्त आदि भी जैन थे। वे जैन गुरुओं की वंदना भक्ति करते थे। इन गुफा-मंदिरों को देखकर भव्य समय याद आ गया। दृष्टि के सामने जैनाचार्यों की धर्मदेशना का सुअवसर और सुदृश्य नृत्य करने लगा - इन्हीं गुफाओं में आचार्य महाराज बैठते हैं और राजा तथा रंक सभी को धर्म रसपान कराते थे। धन्य था वह समय।

जैन गुफाओं में इन्द्रसभा नाम की गुफा विशेष उल्लेखनीय है। इसका निर्माण कैलाश भवन के रूप में किया गया है। इसके इर्द-गिर्द छोटी-छोटी गुफायें हैं। बीच में दो खण्ड बड़ी गुफा बनी हुई है। यह बड़ी गुफा बड़ा भारी मन्दिर है, जो पर्वत को काटकर बनाया गया है। इसकी कारीगरी देखते ही बनती हैं। इसमें घुसते ही एक छोटी सी गुफा की छत में रंग-बिरंगी चित्रकला की छायामात्र अवशेष थी - वह बड़ी मनोहर और सूक्ष्म रेखाओं को लिये हुई थी। किन्तु दुर्भाग्यवश वहाँ पर बर्रों ने छत्ता बना लिया और शायद उसी को उड़ाने के लिये आग जलाकर यह रंगीन चित्रकारी काली कर दी गई थी। यह दृश्य पीड़ा उत्पादक था - जैनत्व के पतन का प्रत्यक्ष उदाहरण था। कहाँ आज के जैनी जो अपने पूर्वजों के कीर्तिचिन्हों को भी नहीं जानते। और कितना बढ़ा-चढ़ा उनके पूर्वजों का गौरव। भावुक हृदय मनमसोसकर ही रह जायेगा। कहते हैं कि निजाम सरकार का पुरातत्त्व विभाग इस पर सफेद रंग करा रहा है। इसका अर्थ है, एलोरा में जैन चित्रकारी का सर्वथा लोप ! क्या यह रोका नहीं जा सकता है ? और क्या पुरातन चित्रकारी का ही उद्धार नहीं हो सकता ? हो सकता सब कुछ है परन्तु उद्योग किया जाय तब ही कुछ हो।

इन्द्रसभा वाली इस गुफा का नं. 33 है। यह दो भागों में विभक्त है। एक इन्द्रगुफा कहलाती है और दूसरी जगन्नाथ गुफा। इन्द्रगुफा का विशाल मण्डल चार बड़े-बड़े स्तम्भों पर टिका हुआ है। इस सभा की उत्तरीय दीवार में छोर पर भगवान पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति विराजमान हैं - यह दिगम्बर मुद्रा में हैं और सात फणों का मुकट उनके शीश पर शोभता है। नागफण मंडल-मंडित संभवतः पद्मावती देवी भगवान के ऊपर छत्र लगाये हुए दीखती हैं। अन्य पूजकादि भी बने हुए हैं। इसी गुफा में दक्षिण पार्श्व पर श्री गोम्मटेश्वर बाहुबलि की प्रतिमा ध्यानमग्न बनी हुई हैं। लतायें उनके शरीर पर चढ़ रही हैं, मानों उनके ध्यान के गांभीर्य को ही प्रकट कर रही हैं। यह भी दिगम्बर मुद्रा में खड्गासन है। भक्तजन इनकी पूजा कर रहे हैं।

यहीं अन्यत्र कमरे के भीतर वेदी पर चारों दिशाओं में भगवान् महावीर की प्रतिमा उकेरी हुई है। दूसरे कमरे में भगवान् महावीर स्वामी सिंहासन पर विराजमान मिलते हैं। उनके सामने धर्मचक्र बना हुआ है। मानों इस मन्दिर का निर्माता दर्शकों को यह उपदेश दे रहा है कि जिनेन्द्र महावीर का शासन ही त्राणदाता है, अतएव उनका प्रवर्ताया हुआ धर्मचक्र ही चलाते रहो। परन्तु कितने हैं, जो इस भावना को मूत्तिमान् बनाते हैं। इसी में पिछली दीवार के सहारे एक मूर्त्ति बनी हुई है जो 'इन्द्र' की कहलाती है। मूर्त्ति में एक वृक्ष पर तोते बैठे हुए हैं और उसके नीचे हाथी पर बैठे हुए इन्द्र बने हैं। उनके आसपास दो अंगरक्षक हैं। इस मूर्त्ति से पश्चिम की ओर इन्द्राणी की मूर्त्ति बनी हुई है। इन्द्राणी सिंहासन पर बैठी हैं और सुन्दर आभूषणाणि पहने अंङ्कित है। इसी स्थान से आसपास के छोटे छोटे 2 कमरों में जाना होता है। जिनमें भी तीर्थंकरों की मूर्त्तियां बनी हुई हैं।

इस गुफा में आहते के भीतर एक बड़ा सा हाथी बना हुआ है। और वहीं पर एक मानस्तम्भ खड़ा है जो 27 फीट ऊँचा होगा। कहते हैं, पहले इसके शिखर पर चर्तुमुख प्रतिमा विराजमान थीं, किन्तु वह उस दिन से एक रोज पहले धाराशायी हो गई जिस दिन लार्ड नार्थब्रुक सा. इन गुफाओं को देखने आये थे।

इस गुफा में मूर्तियों के दिव्य दर्शन करके कुछ लोगों ने अक्षतादि चढ़ाये थे, यह देख कर पुरातत्त्व विभाग के कर्मचारी ने उनको रोक दिया। इस घटना से हमारे हृदय को आघात पहुँचा- परिताप का स्थल है कि हमारे ही पूर्वजों की और हमारे ही धर्म की कीर्त्तियों की विनय और भक्ति भी हम नहीं कर सकते। जो स्वयं अपना व्यक्तित्व सुरक्षित नहीं रखता, उसके लिये परिताप करना भी व्यर्थ है। जैनी पुरातन वस्तुओं की सार-सँभाल करना नहीं जानते। इसलिये यही दूसरे लोग उनकी वस्तुओं की सार-सँभाल करते हैं और छूने नहीं देते तो बुराई भी क्या है?

इन गुफाओं में दूसरी बड़ी गुफा जगन्नाथ गुफा है। यह इन्द्रसभा गुफा के पास ही है; परन्तु उतनी अच्छी दशा में नहीं है। इसकी रचना प्रायः नष्ट हो गई है। इसमें भी भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर और गोम्मट स्वामी की प्रतिमायें हैं। सोलहवें तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ की एक मूर्ति पर इन गुफाओं में 8 वीं-9 वीं शताब्दी के अक्षरों में एक लेख लिखा हुआ है, जिसे वर्जेस सा. ने निम्न प्रकार पढ़ा था -

''श्री सोहिल ब्रह्मचारिणी शांति भट्टारक प्रतिमेयार''

अर्थात् - 'श्री सोहिल ब्रह्मचारी द्वारा यह शांतिनाथ की प्रतिमा निर्मापी गई।'

एक अन्य मूर्ति 'श्री नागवर्मकृत प्रतिमा' लिखी गई है। जगन्नाथ गुफा में पुरानी कनड़ी भाषा के भी कई लेख हैं, जो ईसा की 8 वीं-9 वीं शताब्दि के हैं। इन लेखों को पढ़कर यहाँ का विशेष इतिहास स्पष्ट किया जाना चाहिये।

अवशेष गुफायें ज्यादा बड़ी नहीं हैं, परन्तु उनमें भी तीर्थंकर प्रतिमायें दर्शनीय हैं। इनका विशेष वर्णन 'ए गाइड टु एलोरा' नामक पुस्तक में देखना चाहिये। इस लेख में तो उनकी एक झाँकी मात्र लिखी है। ऐलोरा की सब गुफायें लगभग 10-12 मील में फैली हुई हैं और इनकी कारीगरी देखने की चीज है। उनको देखने में हमारे संघ के लोग भूख-प्यास भी भूल गये। दोपहर का सूर्य गरमी लिये चमक रहा था, लेकिन फिर भी लोग गुफाओं के ऊपर पर्वत पर चढ़कर जिनमन्दिर के दर्शन करने के लिये उतावले हो गए। बरसात के पानी का बना हुआ ऊबड़-खूबड़ रास्ता ता। वह वैसे ही दुर्गम था उस पर कड़ी धूप। परन्तु जिनवन्दना की धुन में पगे हुये बच्चे भी उसे चाव से पार कर रहे थे। करीब 1।।-2 फर्लांग ऊपर चढ़ने पर पर वह चैत्यालय मिला। उसमें जिनेन्द्र पार्श्वनाथ के दर्शन करके चित्त प्रसन्न हो गया - अपने श्रम को सब भूल गये और भाग्य को सराहने लगे। इस चैत्यालय को बने, कहते हैं, ज्यादा समय नहीं हुआ है। औरंगाबाद के किन्हीं सेठ जी ने इसे गत शताब्दि में बनवाया है। मालूम होता है, वह यहाँ दर्शन करते हुये आये होंगे और जिनेन्द्र पार्श्व के गुफा मन्दिर को अथवा कहिये शैल मन्दिर को भग्नावशेष देखकर यह चैत्यालय बनवाया होगा। परन्तु आज फिर उसकी सार-सँभाल करने वाला कोई नहीं है। निजाम का पुरातत्त्व विभाग भी उसकी ओर से विमुख है। शायद इसीलिये कि वह जैनियों की अपनी चीज है। उसमें भगवान् पार्श्व की पद्मासन विशालकाय प्रतिमा अखंडित और पूज्य है। यहाँ की सब यात्रियों ने जिनेन्द्र का अभिषेक पूजन किया। क्या ही अच्छा हो, यदि यहाँ पर नियमित रूप में पूजा-प्रक्षाल हुआ करें। औरंगाबाद के जैनियों को यदि उत्साहित किया जाय तो यह आवश्यक कार्य सुगम हैं। ऐसा प्रबंध होने पर यह अतिशय क्षेत्र प्रसिद्ध हो जायेगा और तब बहुत से जैनयात्री यहाँ निरन्तर आते रहेंगे। क्या तीर्थक्षेत्र कमेटी इस पर ध्यान देगी?

हाँ, तो यह पूज्य प्रतिमा भगवान् पार्श्वनाथ की पद्मासन और पाषाण की है। यह 9 फीट चौड़ी और 16 फीट ऊँची है। इसके सिंहासन में धर्मचक्र बना है और एक लेख भी है, जिसको डॉ. बुल्हर ने पढ़ा था। उसका भावार्थ निम्नप्रकार है -

स्वस्ति शक सं. 1156 फाल्गुण सु. 3 बुधवासरे श्री वर्द्धमानपुर में रेणुगी का जन्म हुआ था .. उनका पुत्र गेलुगी हुआ, जिनकी पत्नी लोकप्रिय सुवर्णा थी इन दम्पत्ति के चक्रेश्वर आदि चार पुत्र हुये। चक्रेश्वर सद्गुणों का आगार और दातार था। उसने चारणों से निवसित इस पर्वत पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित कराई और अपने इस दानधर्म के प्रभाव से अपने कर्मो को धोया। परमपूज्य जिन भगवान की अनेक विशाल प्रतिमायें निर्मापित की गई हैं, जिनसे यह चरणाद्रि पर्वत वैसे ही पवित्र तीर्थ हो गया है, जिसै कि भरत महाराज ने कैलाश पर्वत को तीर्थ बना दिया था। अनुपम-सम्यक्तव-मूर्तिवत्, दयालु, स्वदारसंतोषी, कल्पवृक्षतुल्य चक्रेश्वर पवित्र संरक्षक मानो पंचम वासुदेव ही हुये।

इस लेख से स्पष्ट है कि यह स्थान पूर्वकाल से ही अतिशय तीर्थ माना गया है अतः इसका उद्धार होना अत्यन्तावश्यक है। वहाँ से लौटते हुए हृदय में इसके उद्धार की भावनाएँ ही हिलोरें ले रही थीं। शायद निकट भविष्य में कोई दानवीर चक्रेश्वर उनको फलवती बना दें। इस लेख से तत्कालीन श्रावकाचार का भी आभास मिलता है। दान देना और पूजा करना ही श्रावकों का मुख्य कर्त्तव्य दीखता है -शील धर्मपरायण रहना पुरुषों के लिए भी आवश्यक था।

इलापुर अथवा ऐलोरा का यह संक्षिप्त वृत्तान्त है- अनेकान्त के पाठकों को इसके पाठ से वहाँ के परोक्ष दर्शन होंगे। शायद उन्हें वह प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए भी लालायित कर दें।

महाकवि हरिचन्द का समय

❋ पं. कैलाशचन्द्र जैन शास्त्री ❋

महाकवि हरिचन्द के दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं। एक धर्मशर्माभ्युदय और दूसरा जीवन्धर चम्पू। कुछ विद्वानों का मत है कि जीवन्धरचम्पू किसी अज्ञात नामा विद्वान की कृति है। श्रीयुत प्रेमीजी ने लिखा है- ''यद्यपि' जीवन्धरचम्पू में धर्मशर्माभ्युदय के भावों और शब्दों तक में बहुत कुछ समानता है, इससे दोनों को एक ही कर्ता की कृति कहा जा सकता है, परन्तु साथ ही यह भी तो कह सकते हैं कि किसी अन्य ने ही धर्मशमाभ्युदय से की भावादि ले लिये हों।''

प्रेमीजी की सम्भावना ठीक है, किन्तु ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकार का नाम होते हुए भी और धर्मशर्माभ्युदय के भावों और शब्दों तक से समानता होते हुए किस आधार पर जीवन्धर चम्पू को धर्मशर्माभ्युदय के रचयिता महाकवि हरिचन्द जी की कृति न मानकर किसी अज्ञातनामा कवि की कृति माना जाता है, यह हम नहीं जान सके। अभी तक तो हमारा यही मत है कि दोनों महाकवि हरिचन्द की रचनाएँ हैं और सम्भवतः दोनों का रचयिता एक ही है। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि इस विषय में अधिक विचार की आवश्यकता है और इसलिये एक स्वतंत्र लेख के द्वारा ही इस पर ऊहापोह करना उचित है। यहाँ तो हम धर्मशर्माभ्युदय के रचयिता महाकवि हरिचन्द के समय के सम्बन्ध में कुछ नई सामग्री उपस्थित करना चाहते हैं इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा जाता है।

धर्मशर्माभ्युदय के तीसरे संस्करण में प्रथम पृष्ठ की टिप्पणी में उसके सम्पादक महा-महोपाध्याय पण्डित दुर्गाप्रसाद ने संस्कृत में उसके रचयिता के सम्बन्ध में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। उनका भाव यह है :-

''इस फायस्थ-कुल-भूषण, दिगम्बर जैन मातानुयायी, आद्रदेव के पुत्र, महाकवि हरिचन्द्र का समय ठीक रीति से नहीं ज्ञात होता। हरिचन्द नाम के दो कवि प्रसिद्ध हैं - एक, जिनका उल्लेख हर्षचरित के प्रारम्भ में महाकवि बाणभट्ट ने किया। दूसरे, विश्व प्रकाश कोष के रचयिता महेश्वर के पूर्वज, चरकसंहिता के टीकाकार जो राजा साहसाङ्कके प्रसिद्ध वैद्य थे। ये हरिचन्द इन दोनों में से ही कोई एक हैं या तीसरे हैं, यह सन्देह है। किन्तु यह भी अपने प्रौढ़ कवित्व के कारण माघ आदि प्राचीन कवियों की कक्षा में ही बैठते हैं, इसलिए अर्वाचीन तो नहीं हैं। कर्पूरमंजरी में प्रथम यवनिका के अनन्तर एक जगह विदूषक के द्वारा महाकवि राजशेखर भी हरिचन्द कवि का स्मरण करता है।''

इसके आधार पर प्रेमीजी ने लिखा है कि 'यदि हरिचन्द धर्मशर्माभ्युदय के ही कर्ता हों तो इन्हें राजशेखर से पहले का (वि.सं. 960 से पहले का) मानना चाहिये तथा पाटण (गुजरात) मे सङ्वी पाड़ा के पुस्तक भण्डार में धर्मशर्माभ्युदय की जो हस्तलिखित प्रति है वह वि. 1287 की लिखी हुई है और इसलिये उससे यह निश्चय हो जाता है कि महाकवि हरिचन्द उक्त संवत् से बाद के तो किसी तरह हो ही नहीं सकते, पूर्व के ही हैं कितने पूर्व के हैं, यह दूसरे प्रमाणों की अपेक्षा रखता है।'

मैं यहाँ उन्हीं दूसरे प्रमाणों को रखता हूँ।

मैं इधर कुछ समय से श्रावकाचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने में लगा था। उसी की खोज-बीन करते हुए मैंने महाकवि वीरनन्दि के चन्द्रप्रभ चरित और महाकवि हरिचन्द के

धर्मशर्माभ्युदय को भी खोजा। चन्द्रप्रभचरित में 18 सर्ग हैं और धर्मशर्माभ्युदय मे 21। दोनों ग्रन्थों के अन्तिम सर्गों के अपने-अपने चरित नायक तीर्थङ्करों के मुख से धर्मोपदेश कराया गया है। जब मैं दोनों ग्रन्थों के अन्तिम सर्गों का मिलान करने बैठा तो मुझे यह देखकर साश्चर्य हर्ष हुआ कि दोनों में अत्यधिक साम्य है। प्रारम्भ से ही आप मिलान करते चले जाइये दोनों में एक ही अविच्छिन्न धारा बहती हुई मिलती है।

चन्द्रप्रभ में पहला श्लोक (सर्ग 18) इस प्रकार है-

सर्वभाषास्वभावेन ध्वनिनाऽथ जगद् गुरुः।
जगाद गणिनः प्रश्नादिति तत्त्वं जिनेश्वरः ।।1।।

अर्थात् 'गणधर के प्रश्न करने पर जगद् गुरु जिनेश्वर ने सर्व भाषात्मक ध्वनि के द्वारा इस प्रकार तत्त्व का वर्णन किया।'

यही बात थोड़े से शाब्दिक हेरफेर के साथ धर्मशर्माभ्युदय में भी कही गई है। अन्तर केवल इतना है कि जो बात चन्द्रप्रभ में एक श्लोक के द्वारा कही गई है उसे धर्मशर्माभ्युदय में 7 श्लोकों के द्वारा कहा है। पहले श्लोक में गणी भगवान् से प्रश्न करते हैं। शेष 6 श्लोकों में ध्वनि की तारीफ करते हुए भगवान के उत्तर देने का कथन है। पहला श्लोक ही देखिये -

तत्त्वं जगत्त्रयस्यापि बोधाय त्रिजगद् गुरुम्।
तमापृच्छदथातुच्छज्ञानपण्यापणं गणी ।।11।।

दोनों की शैली और शब्दसाम्य को देखिये। आगे तो अक्षरशः साम्य है। तुलना के लिये दोनों के कुछ श्लोक देते हैं -

चन्द्रप्रभचरित-

जीवाजीवास्रवा बन्धसंवरावथ निर्जरा।
मोक्षश्चेति जिनेन्द्राणां सप्ततत्त्वानि शासने ।।2।।
बन्ध एव प्रविष्टत्वादनुक्तिः पुण्यपापयोः।
तयोः पृथत्वपक्षे च पदार्था नव कीर्तिताः ।।3।।
चेतनालक्षणेः जीवः कर्ता भोक्ता स्वकर्मणाम्।
स्थितः शरीरमानेन स्थित्युत्पत्तिव्ययात्मकः ।।4।।
भव्याभव्यप्रभेदेन द्विप्रकारोऽप्यसौ पुनः।
नरकादिगतेर्भेदाच्चतुर्था भेदमश्नुते ।।5।।
सप्तधा पृथिवीभेदान्नारकोऽपि प्रभिद्यते।
अधोलोकस्थिताः सप्त पृथिव्यः परिकीर्तिताः ।।6।।
प्रथमायां पृथिव्यां ये नारकास्तेषु कीर्तिताः।
उत्सेधः सप्त चापानि त्रयो हस्ताः पडंगुलाः ।।9।।
द्विगुणो द्विगुणोऽन्यासु पृथिरीपु यथाक्रमम्।
द्वितीयादिषु विज्ञेयो यावत्पञ्चधनुः शतीम् ।।10।।
इति नारकभेदेन कृता जीवस्य वर्णना।
तिर्यग्गतिकृतो भेदः साम्प्रतं वर्णयिष्यते ।।16।।

1. धर्मशर्माभ्युदय

जीवाजीवास्रवा बन्धसंवरावपि निर्जरा
मोक्षश्चेतीह तत्त्वानि सप्त स्युर्जिनशासने ॥8॥
बन्धान्तर्भाविनोः पुण्यपापयोः पृथगुक्तितः।
पदार्था नव जायन्ते तान्येव भुवनत्रये ॥9॥
अमूर्तश्चेतनाचिन्हः कर्ता भोक्ता तनुप्रमः।
ऊर्ध्वगामी स्मृतोजीवः स्थित्युत्पत्ति व्ययात्मकः ॥10॥
सिद्धसंसारिभेदेन द्विप्रकारः स कीर्तितः।
नरकादिगतेर्भेदात्संसारी स्याच्चतुविधः ॥11॥
नारकः सप्तधा सप्तपृथिवीभेदेन भिद्यते।
अधिकाऽधिकसंक्लेशप्रमाणायुर्विशेषतः ॥12॥
पडङ्गुलास्त्रयो हस्ताः सप्त चापानि विग्रहे।
इयत्येव प्रमा ज्ञेया प्राणिनां प्रथमक्षितौ ॥17॥
द्वितीयादिष्वतोऽन्यासु द्विगुणद्विगुणोदयः।
उत्सेधः स्याद्धरित्रीपु यावत्पञ्चधनुः शतीम् ॥18॥
कृता श्वभ्रगतेर्भेदात्स्वरूपनिरूपणा।
व्यावर्ण्यते कियानस्या भेदस्तिर्यग्गतेरपि ॥32॥
और आगे देखिये -

चन्द्रप्रभ -

तिर्यगादिप्रभेदस्य क्रमोऽयं संप्रदर्शितः।
कीर्त्यन्ते साम्प्रतं केचिद्भेदा नरगतेरपि ॥27॥
भोगकर्मभुवो भेदान्मानुषा द्विविधाः स्मृताः।
देवकुर्वादिभेदेन स्युस्त्रिंशद्भोगभूमयः ॥28॥
मध्योत्तमजघन्येन क्रमात्त्रेधा व्यवस्थिताः।
षट् सहस्राणि चापानामुत्तमासु नृणां प्रमा ॥29॥
मध्यमासु च चत्वारि द्वे जघन्यासु कीर्तिते।
त्रीणि पल्योपमान्यायुर्द्वे चैकं तास्वनुक्रमात् ॥30॥
आर्य-मलेच्छप्रभेदेन द्विविधाः कर्मभूमिजाः।
भरतादिभिदा पञ्चदश स्युः कर्मभूमयः ॥32॥
शतानि पञ्च चापानां कर्मभूमिनिषासिनाम्।
पञ्चविंशतियुक्तानि मानमुत्कृष्टयुत्तितः ॥33॥
पूर्वकोटिप्रमाणं च तेषामायुः प्रकीर्तितम्।
वृद्धिह्लासौ विदेहे न भरतैरावतेष्विव ॥34॥
सुषमोपपदा प्रोक्ता सुषमा सुषमा ततः।
दुषमा सुषमाद्यान्या सुपमान्ता च दुःषमा ॥37॥

पञ्चमी दुषमा ज्ञेया षष्ठी चात्यन्तदुःपमा।
प्रत्येकमिति षड् भेदास्तयोरुक्ता द्वयोरपि ॥38॥
आर्या षटकर्मभेदेन षोढा भेदमुपागताः।
ते गुणस्थानभेदेन स्युश्चतुर्दशधा पुनः ॥43॥
इति मानुपभेदेन कृता जीवनिरूपणा
साम्प्रतं देवभेदेन कुर्वे किञ्चितप्रपञ्चनम् ॥47॥
धर्मशर्माभ्युद -
इति तिर्यग्गतेर्भेदो यथागममुदीरितः।
मानवानां गतेः कोऽपि प्रकारः कथ्यतेऽधुना ॥43॥
द्विप्रकारा नराः भोग-कर्मभूमेदेतः स्मृताः।
देवकुर्वादयस्त्रिंशत्प्रसिद्धा भोगभूमयः ॥44॥
जघन्यमध्योमत्कृष्टभेदात्तास्त्रिविधाः कृमात्।
द्विचतुःपड् धनुर्दण्डसहस्रोत्तुङ्गमानवाः ॥45॥
तास्वेकद्वित्रिपल्यायुर्जीविनो भुञ्जते नराः।
दशानां कल्पवृक्षाणां पात्रदानार्जितं फलम् ॥46॥
सुखमा सुखमा प्रोक्ता सुखमा च ततो बुधैः।
सुखमादुखमान्यापि दुखमासुखमा क्रमात् ॥51॥
पंचमी दुखमा षष्ठी दुखमादुखमा मता।
प्रत्येकमिति भिद्यन्ते ते पोढा कालभेदतः ॥52॥
पोढा षट्कर्मभेदेन ते गुणस्थानभेदतः।
स्युश्चतुर्दशधात्रार्या म्लेच्छाः पञ्च प्रकीर्तिताः ॥56॥
वर्णितेति गतिर्नृणां देवानामपि सम्प्रति।
कियत्यपि स्मरानन्दोजीविनी वर्णायिप्यते ॥59॥

यहाँ हमने बीच में छोड़ छोड़कर जो श्लोक लिखे हैं सो विस्तार भय से दिये हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि इन्हीं श्लोकों में साम्य है, अपितु पूरे अध्याय में ऐसा ही समानता है। उदाहरण के लिये कुछ श्लोक और देते हैं।

चन्दप्रभ से -

इति गत्याभिदेन कृता जीवनिरूपणा।
कुर्वे सम्प्रत्यजीवस्य किञ्चिद्रूप निरूपणाम् ॥66॥
धर्माधर्मावथाकाशं कालः पुद्गल इत्यपि।
अजीवः पञ्चधा ज्ञेयो जिनागमविशारदैः ॥67॥
एतान्येव सजीवानि षट् द्रव्याणि प्रचक्षते।
कालहीनानि पञ्चास्तिकायास्तान्येव कीर्तिताः ॥68॥
क्रियां दिनकरादिनामुदयास्तमयादिकाम्।
प्रविहायापरः कालो नास्तीत्येके प्रचक्षते ॥75॥

केवलिश्रुतधर्माणां देवस्य च गणस्य च।
अवर्णवदनं दृष्टिमोहनीयस्य कीर्तितम् ॥87॥
यः कपायोदयात्तीव्र परिणामः प्रजायते।
चारित्रमोहनीयत्य कर्मणः सोऽनुवर्णितः ॥88॥
एवमेप चतुर्भेदभिन्नो बन्धो निरूपितः।
संवरस्याधुना रूपं किञ्चिदुद्योतयिष्यते ॥105॥
आस्रवस्य निरोधो यः संवरः स निगद्यते।
कर्म संव्रियते येनेत्येवं व्युत्पत्तिसंश्रयात् ॥106॥
इति संवरतत्त्वस्य रूपं संक्षिप्त कीर्तितम्।
इदानीं क्रियते किञ्चिन्निर्जराया निरूपणम् ॥108॥
धर्मशर्माभ्युदय से -
इति व्यावर्णितो जीवश्चतुर्गत्यादिभेदतः।
सम्प्रत्यजीवतत्त्वस्य किञ्चिद्रूपं निरूप्यते ॥80॥
धर्माधर्मौ नभः कालः पुद्गलश्चेति पञ्चधा।
अजीवाः कथ्यते सम्यग्जिनैस्तत्त्वार्थदर्शिभिः ॥81॥
षड् स्याणीति वर्ण्यन्ते समं जीवेन तान्यपि।
बिना कालेन तान्येव यान्ति पञ्चास्तिकायताम् ॥82॥
कालो दिनकरादिनामुद् यास्तक्रियात्मकः।
औपचारिक एवासौ मुख्य कालस्य सूचकः ॥89॥
केवलिभुतसंघार्हद्धर्माणामविवेकतः।
अवर्णवाद एवाद्यो दृष्टिमोहस्य संभव ॥98॥
कषायोद्यतस्तीत्रपरिणामो मनस्विनाम्।
चारित्रमोहनीयस्य कर्मणः कारणं परम् ॥99॥
इत्येष बन्धनत्वस्य चतुर्धा वर्णितः क्रमः।
पदैः सङ्गियते कैञ्चित्संवरस्यापि डम्बरः ॥116॥
आस्रवाणामशेषाणां निरोधः संवरः स्मृतः।
कर्म संन्नियते येनेत्यन्वयस्यावलोकनान् ॥117॥
संवरो विवृतः सैप सम्प्रति प्रतिपाद्यते।
जर्जरीकृतकर्मायः पञ्जरा निर्जरा मया ॥121॥

निर्जरा पर्यन्त दोनों काव्यों में एक धारा प्रवाहित होती है। इसके बाद थोड़ा अन्तर पड़ गया है। धर्मशर्माभ्युदय में गृहस्थ के बारह व्रतों का वर्णन भी किया गया है जो चन्द्रप्रभ में नहीं है। इसके बाद फिर दोनों में एक धारा प्रवाहित होने लगी है। दोनों में एक ही रूप में भगवान के उपदेश की समाप्ति के बाद विहार का वर्णन है यथा -

इति तत्त्वोपदेशेन प्रह्लाद्य सकलां सभाम्।
भव्यपुण्यसमाकृष्टो व्यहरद्भगवान्भुवि ॥132॥चन्द्र.

इति तत्त्वप्रकाशेन निःशेषामपि तां सभाम्।
प्रभुः प्रह्लादयामास विवस्वनिव पद्मिनीम् ॥166॥
अध पुण्यैः समाकृष्टो, भव्यानां निस्पृहः प्रभुः।
देशे देशे तमश्छेत्तु व्यचरद्भानुमानिव ॥167॥ धर्म.

विहार के वर्णन के बाद दोनों में एक ही शब्दों में अपने-अपने तीर्थङ्करों के गणधर वगैरह की संख्या बतलाई है। दोनों में अन्तर केवल संख्या का है। उसके बाद दोनों में सम्मेदाचल पर पधारने का और वहाँ से मुक्तिलाभ करने का वर्णन है।

सारांश यह है कि दोनों सर्गों में इतना अधिक साम्य है कि बिना एक दूसरे को देखे इतना साम्य आ नहीं सकता। इस तरह जब मुझे यह लगा कि दोनों कवियों में से किसी एक ने दूसरे का काव्य देखा है तो फिर मैंने प्रारम्भ से दोनों को मिलाकर देखा। उससे भी मुझे कुछ बातों में साम्य प्रतीत हुआ।

1 - दोनों में क्रमशः पहले, आठवें, सोलहवें और चौबीसवें तीर्थंकर को प्रारम्भ में नमस्कार किया गया है। धर्मशर्माभ्युदय में बीच में धर्मनाथ को भी नमस्कार किया है जो ग्रन्थ का नायक होने का कारण उचित ही है।

2- दोनों ही अपने अपने चरितों को दुरूह बतलाकर अपनी शक्ति से उसमें प्रवेश करने का उल्लेख लगभग एक ही रूप में करते हैं।

3. चन्द्रप्रभ के दूसरे सर्ग में राजा के प्रश्न के उत्तर में मुनि के मुख से चार्वाक आदि दर्शनों का निरसन कराया गया है जो दार्शनिकों के ही योग्य है। धर्मशर्माभ्युदय के भी चतुर्थ सर्ग में जब राजा दीक्षा लेने के लिये तैयार होता है तो सुमन्त्र नाम का मन्त्री चार्वाक दर्शन का पक्ष लेकर आत्मा का अभाव बतलाता है राजा उसका समाधान करता है। 10, 12 श्लोकों में ही यह चर्चा यहाँ समाप्त हो जाती है।

पूरा मिलान करने पर और भी साम्य मिल सकता है। परन्तु कवित्व की दृष्टि से एक का दूसरे पर कोई ऋण प्रतीत नहीं होता। दोनों ही अपने अपने रूप में स्वतन्त्र प्रतीत होते हैं।

अब प्रश्न यह है कि किसने किसको देखा है ?

अब तक के अवगाहन से तो मैं इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ कि धर्मशर्माभ्युदयकार ने चन्द्रप्रभकाव्य अवश्य देखा है और उसमें निम्न उपपत्तियाँ हैं-

1. जैन साहित्य के ज्ञाताओं से यह बात छिपी नहीं है कि चन्द्रप्रभ काव्य के रचयिता का नाम वीरनन्दि है। इन्होंने इस काव्य की प्रशस्ति में लिखा है कि मेरे गुरु का नाम अभयनन्दि था, जो देशीयगण के आचार्य थे। सिद्धांतचक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र ने लिखा है कि जिनके चरणों के प्रसाद से वीरनन्दि और इन्द्रनन्दि शिष्य संसार समुद्र से पार हो गये उन अभयनन्दि गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीयुत प्रेमी जी ने इन अभयनन्दि के शिष्य वीरनन्दि को ही चन्द्रप्रभ काव्य का कर्ता सिद्ध किया है। तथा इन वीरनन्दि को नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने गुरु रूप से भी स्मरण किया है। इससे सिद्ध है कि चन्द्रप्रभ के रचयिता वीरनन्दि जैन सिद्धांत के मर्मज्ञ विद्वान थे। अतः वे अपने काव्य में जैन सिद्धांत का वर्णन करने के लिये किसी दूसरे काव्य के वर्णन को देखें, इस बात की स्वप्न में भी आशा नहीं की जा सकती।

दूसरी ओर धर्मशर्माभ्युदय के रचयिता महाकवि हरिचन्द्र ग्रन्थ की प्रशस्ति में अपने को **कायस्थ** बतलाते हैं और लिखते हैं कि हरिचन्द्र अपने भाई लक्ष्मण की भक्ति और शक्ति से वैसे ही शास्त्र-समुद्रके पार हो गये जैसे राम लक्ष्मण के द्वारा सेतु पार हो गये थे। अतः यह बहुत सम्भव है कि कायस्थ कुलजन्मा और अर्हन्त भगवान के चरण कमलों के भ्रमर महाकवि हरिचन्द ने इस भय से कि जैन सिद्धांत का वर्णन करने में कुछ त्रुटि न हो जाये, अपने पूर्ववर्ती महाकवि और सिद्धांत शास्त्री के पारगामी वीरनन्दि के चन्द्रप्रभ काव्य का अनुसरण जैनधर्म के सिद्धांतों के वर्णन में किया है।

यह हम पहले ही लिख आये हैं कि काव्य की दृष्टि से हमें चन्द्रप्रभ का धर्मशर्माभ्युदय पर कोई ऋण प्रतीत नहीं होता, क्योंकि महाकवि हरिचन्द माघ आदि की टक्कर के कवि हैं। किन्तु एक तो उनका कायस्थ कुल में जन्म लेना और दूसरे अपने को ''अर्हत्पदाम्भोरुह चंचरीक'' बतलाना यह सूचित करता है कि वे जैन सिद्धांत मर्मज्ञ नहीं थे-ज्ञाता अवश्य होंगे, किन्तु श्रद्धावश आगम की विराधना से भयभीत थे। इसीलिये उन्होंने उक्त विषय में चन्द्रप्रभ का अनुसरण करना उचित समझा।

2. श्रीवादिराज सूरि ने अपना पार्श्वनाथचरित श. स. 947 (वि.सं. 1082) में समाप्त किया था। उन्होंने उसके प्रारम्भ में अपने से पूर्व के कवियों का स्मरण करते हुए वीरनन्दि के चन्द्रप्रभ काव्य का भी स्मरण किया है। इससे स्पष्ट है कि वि. सं. 1082 तक वीरनन्दि के उक्त काव्य की ख्याति हो चुकी थी तथा इससे इस बात की भी पुष्टि होती है कि नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती के द्वारा स्मृत अभयनन्दि के शिष्य वीरनन्दि ही चन्द्रप्रभ काव्य के रचयिता हैं क्योंकि चामुण्डराय ने, जिसके लिये आचार्य नेमिचन्द्र ने गोम्मटसार की रचना की थी, वि. सं. 1035 में अपना चामुण्डरायपुराण समाप्त किया था। अतः वीरनन्दि ने विक्रम की 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में या दसवीं शताब्दी के अन्त में अपने काव्य की रचना की होगी। इस तरह चन्द्रप्रभ काव्य का समय सुनिश्चित हो जाता है। किन्तु धर्मशर्माभ्युदय का रचनाकाल अभी तक भी सुनिश्चित नहीं हो सका है।

पं. आशाधर जी ने अपने अनगार धर्मामृत की टीका में अनेक ग्रन्थकारों और ग्रन्थों का उल्लेख किया है तथा बहुत से ग्रन्थों से उद्धरण दिये हैं। उनमें जैन और जैनेत्तर अनेक कवियों के काव्यों से भी उद्धरण लिये गये हैं। चन्द्रप्रभ काव्य से (अ.श्लो.) भी एक उद्धारण लिया है। किन्तु धर्मशर्माभ्युदय का एक भी उद्धरण खोजने पर भी हमें नहीं मिल सका। इससे हमें लगता है कि धर्मशर्माभ्युदय को पं. आशाधरजी ने नहीं देखा, अन्यथा उससे भी एक दो उद्धरण अवश्य देते। और इस पर से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि धर्मशर्माभ्युदय चन्द्रप्रभ के बाद की रचना है।

3. चन्द्रप्रभ काव्य के अन्तिम सर्ग के साथ धर्मशर्माभ्युदय के अन्तिम सर्ग का मिलान करते हुए हम लिख आये है कि 'निर्जरा' पर्यन्त दोनों काव्यों में एक धारा प्रवाहित होती है। इसके बाद थोड़ा अन्तर पड़ गया है। धर्मशर्माभ्युदय में गृहस्थ के बारह व्रतों का वर्णन भी किया गया है। उस वर्णन में निम्न श्लोक भी हैं

मुहूर्तद्वितयादूध्वै भूयस्तोयमगालितम्।
शीलयेन्नवनीतं च न देशविरतिः कचित्॥135॥

(शेष आगामी अंक में)

हास्य तरंग

1. डॉक्टर - मैं आपकी पत्नी का इलाज नहीं कर सकता हूँ। आप गलत जगह आये हैं क्योंकि मैं जानवरों का डॉक्टर हूँ।
पति - (खुश होते हुए) तभी तो मैं आपके पास लाया हूँ क्योंकि यह नींद में लात मारती है।

2. जज ने अपराधी से पूछा -किस अपराध के कारण तुम्हें यहाँ लाया गया है।
अपराधी - मुझे छींक आने के कारण।
जज ने पूछा - कैसे ?
अपराधी ने कहा - मैं चोरी करके बाहर निकल रहा था कि जोर से छींक आने से सुरक्षा कर्मी ने मुझे पकड़ लिया।

3. पत्नी ने पति को समझाते हुए कहा, देखो जो तुम्हारा दोस्त जिस लड़की से शादी करना चाहता है वह लड़की का चाल-चलन व व्यवहार अच्छा नहीं हैं। आप उसे शादी करने के लिए मना कर दो। पति ने कहा- मैं क्यों रोकूं, उसने मुझे मना किया था क्या ?

4. एक नव नियुक्त स्वास्थ्य मंत्री शासकीय अस्पताल का उद्घाटन करने गये व अस्पताल का निरीक्षण करते हुए ऑपरेशन थियेटर के सामने हँस कर बोले - वाह खूब ! बहुत अच्छा रोगियों के लिए मनोरंजन के लिए थियेटर तो होना चाहिए।

5. नौकर (मालिक से) आपके लिए किसी पक्के दोस्त का फोन आया है। मालिक तुझे कैसे मालूम है कि वह मेरा दोस्त है।
नौकर - वह कह रहे थे बदमाश कहाँ हैं ?

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

बाबा की सीख

अपशकुनी दुकान

✻ अशोक पाटनी, मदनगंज-किशनगढ़ ✻

मेरे बाबा मेरा बहुत ध्यान रखते थे। मैं कब भोजन करता हूँ, कब नहीं करता हूँ। कितना भोजन करता हूँ, कितना नहीं करता हूँ। ये मालूम कर लेते थे। घटना उस समय की है। जब मैंने एक दुकान 60 हजार रूपए की पगड़ी देकर ली थी। 70 के दशक में 60-70 हजार की कीमत बहुत होती थी । जिन-जिन लोगों को ये पता लगा की अशोक पाटनी ने यह दुकान ली है। वे सब मेरे पास आए उनमें से कुछ बुजुर्ग थे। उन्होंने कहा जिसने भी यह दुकान ली है। उन सब का दिवाला निकला है। अब तुम्हारा नम्बर है। तुम्हारा भी दिवाला निकलेगा। ये बात सुनकर मुझे बहुत चिन्ता हुई और मेरे से भोजन करना भी संभव नहीं हुआ। दो दिन जब बीत गए तो यह बात बाबा को पता चली। मैं सही ढंग से भोजन नहीं कर रहा हूँ। तो वे मुझसे बोले, बेटा क्या बात है, तुम आजकल चिन्ता में डूबे हो। भोजन भी नहीं कर रहे हो। तब मैंने अपने बाबा से कहा - बाबा, मुझसे एक बहुत बड़ी गलती हो गई हैं। मैंने एक ऐसी दुकान पगड़ी से ले ली है जो अपशकुनी है। जिसने भी वह दुकान ली है उन सब के दिवाला निकले हैं। बाबा ने कहा- बेटा, कोई भी दुकान अपशकुनी नहीं होती हैं। मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ। इस दुकान से तुम खूब पैसा कमाओंगे। सारी चिन्ताएँ छोड़ दो बेफ्रिक होकर धन्धा करो। मैंने दादा की सीख को माना, सारी फिक्र छोड़ दी। मन लगाकर काम किया। इसी दुकान से बहुत आगे बढ़ा। आज भी सप्ताह में दो दिन कुछ घण्टों के लिए मैं इस दुकान पर बैठता हूँ।

बाल कहानी

कृतज्ञ चील

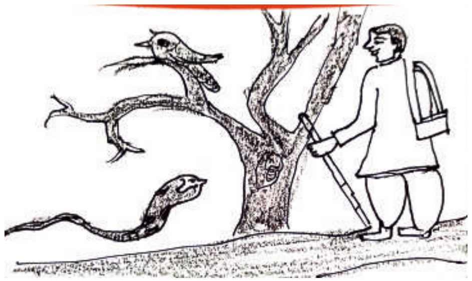

गंगा के किनारे घने जंगलों के बीच एक मिर्जापुर से सुन्दरन तक एक रास्ता गुजरता था। इस रास्ते से रोज रामपूजा नामक डाकिया गुजरता था। एक दिन रामपूजा ने एक विचित्र दृश्य देखा। वह देखने के साथ आश्चर्य में पड़ गया। उसने देखा एक चील को एक सर्प अपने शरीर में लपेटे हुए हैं। वह चील पंख फड़फड़ा रहा था। परन्तु उड़ नहीं पा रहा था। चील की पीड़ा रामपूजा से देखी नहीं गयी। रामपूजा ने एक लकड़ी उठाई और साँप के सामने जोर से तीन-चार बार ठोक दी। साँप डर गया और वह आड़ा तेड़ा हो कर भागने लगा। फिर क्या था चील ने भी सोचा जान बची तो लाखो पाएँ। वह उड़करएक झाड़ पर बैठ गया। रामपूजा को साँप ने और चील ने बड़े गौर से देखा। रामपूजा अपने काम से आगे बढ़ गया। रामपूजा मिर्जापुर से काम निपटाकर अपने गाँव सुन्दरन आ रहा था। रामपूजा बेफ्रिक था क्योंकि उसे यह ज्ञात नहीं था कि सर्प ने मुझे पहचान लिया है। और वह हमसे बदला ले सकता है। अपना गीत गाता हुआ रामपूजा आगे बढ़ रहा था। चल मुसाफिर चल मुसाफिर, तेरा मेला पीछे छूटा राही चल अकेला, चल अकेला।

जब रामपूजा आगे बढ़ता चला जा रहा था कि अचानक झाड़ियों से फुफकारने की आवाज आई। आक्रमक रूप से वहाँ साँप रामपूजा पर झपट्टा मारना चाह रहा था। पेड़ पर बैठा चील यह सब दृश्य देख रहा था। चील ने सोचा जिसने मेरी जान बचाई उसकी जान बचाना मेरा भी कर्त्तव्य है। पर वह सोच रहा था कि कही ऐसा न हो कि साँप फिर मुझे अपने शरीर में लपेट लें। पर चील ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया। जिसने मेरी जान बचाई है। उसे में अवश्य बचाऊँगा। चील ने अपनी चोंच में दबाकर साँप को उठाकर उड़ गया और उसने उसे एक नदी में छोड़ दिया। रामपूजा चील की कर्त्तव्य निष्ठा देखकर बहुत खुश हुआ। वह सोचने लगा आदमी से अच्छे पक्षी होते हैं। जो अपने पर किए हुए उपकार को नहीं भूलते हैं।

संस्कार गीत

शुद्धोपयोगी संत निराले

लिखती रहे लेखनी मेरी
जिह्वा गाती गीत रहे
विद्यासागर की लहरों से
जग मिथ्या मल दूर बहे
एक कहानी विद्याधर की
विद्यासागर गीत सुनो
आगम वाणी तर्क योग से
आतम हित का पंथ चुनो
आओ शरण अब युगदृष्टा की
भव दुख तुमने खूब सहे
बोधि समाधि के चिंतक ये
इनके चिंतन की क्या थाह
पार करें गे भव दुख सागर
हम दुखियों की पकड़े थाह
थल तट अँकियां उनकी देखें
जो सद्गुरु की शरण गहे
शुद्ध उपयोगी संत निराले
अद्भुत है इनकी चर्या
भव कारण को रोकने वाली
अंतर बाहर की क्रिया
ध्यान अग्नि के धारी गुरुवर
कर्म विपिन को शीघ्र दहे

बाल कविता

नीम सदा दुखहारी

कड़वो नीम सदा दुखहारी
पीड़ा तन मन की हमारी
हरी भरी नीम सुखकारी
शीतल छाया तपन मिटाती
बैठके कोयल गीत सुनाती
नीम की पत्ती जो भी खाता
चैत्र मास में नीम जो खाता
रोग बुखार न उसको आता
नीम का पानी कर स्नान
त्वचा रोग का नहीं निशान
जिस आंगन में रहती नीम
उस घर में क्यों आये हकीम
नीम दातुन करे जो भी
रोग पायरिया मिटता जल्दी
चलो नीम का झाड़ लगाये
रोग सकल आपदा दूर भगायें

वर्ग पहेली 280

1		2	3	■	4	5		6
		7		■	8			
9	10	■	■	11		■	■	■
■	12		■		■	■	13	14
15			■	■	16	17		
	■	■	18	19			■	
20			■	21			22	■
	■	■	23		■	■	24	25
26				■	27			

बाये से दाये

1. भावना, मन से तत्त्व अभ्यास करना -4
4. बराबरी, समता -4
7. सतह, थर, कुलीन तल्लीन -2
11. संगीत का मुख्य विभाग, लय -2
12. कर, हस्त -2
13. सहोदा, रिश्ता, नाता, एक माँ का -2
15. नय बोधक ग्रन्थ जिनेन्द्र वर्णी का -2
16. भारत का नागरिक, भारत से संबंधित -4
18. हस्तमय, हाथ से शुरु होने वाला उ.प्र. का एक नगर -4
20. दबाना, दबाव -3
21. अभिप्राय, उद्देश्य -4
23. स्कंध, रूट -2
24. दुनिया, संसार -2
26. महामंत्र जैन धर्म का -4
27. देव, मनुष्य -4

ऊपर से नीचे

1. देव, मरण से रहित प्राणी -3
2. भूत, जिन्न, व्यंतर देव एक रूप -2
3. त्यक्, त्वचा, वक्कल -2
4. सीधा, ऋजु, -3
5. पराभव, हार -2
6. दुख, शोक, तपन -2
10. बेड़ा, जलयान -3
11. धागा, सूत -2
13. शीलवती नारी, साध्वी पतिव्रता -2
14. गाने की क्रिया, गीत, -3
15. दृष्टि -5
16. हिन्दुस्तान, अजनाभ -3
17. रसपूर्ण, मीठा, मधुर -3
19 रुकना, ठहरना, बंद होना -3
22. भार -3
25. यदि -2

वर्ग पहेली 279 का हल

1 वा	2 रा	ण	3 सी	■	4 वी	त	5 रा	ग
6 मा	त	■	7 क	स	र	■	ज	■
दे	■	8 तीर		■	9 ब	द	मा	श
10 वी	11 र	■	■	12 क	ल	■	■	ठ
■	13 ह	14 मी	र	■	■	15 सः	■	■
16 अ	म	न	■	17 रा	18 ख	■	19 न	20 स
श्व	■	■	21 सा	ह	स	■	22 रे	खा
23 से	24 वा	दा	र	■	25 ख	गे	श	■
26 न	दी	■	27 स	र	स	■	■	28 कः

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

बन जाये हमजोली

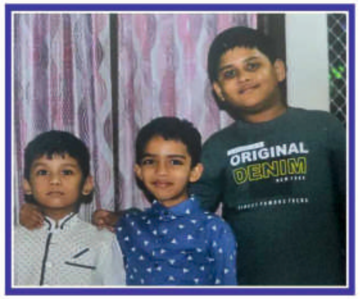

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक २६/11/2022, पोस्टिंग दिनांक : 03/12/2022